भक्त शिरोमणि

## माण्डोली तीर्थ के संस्थापक

सेठ किशनचन्द लेखराज खियानी
सिन्ध - हैदराबाद

श्रीमती रुकमणीबहन खियानी

## माण्डोली तीर्थ के आधार स्तम्भ

चम्पालाल जैन, फलोदी

सूरजमल जैन, धरला

शांतिलाल वजिंगजी नाहर, सांथू

कांतिलाल जैन, फलोदी

## विकास के सूत्रधार

नथमल नेमाजी, मांडोलीनगर

# आलेख

" शान्ति दर्शन " की परिकल्पना स्व. श्री कान्तिलाल जी जैन (पूर्व सम्पादक शान्ति ज्योति एवं पूर्व मैनेजिंग ट्रस्टी ' श्री गुरूमन्दिर पेढ़ी, माण्डोली नगर) ने की थी । उन्होंने अनेक वर्षों तक गुरूदेव भगवान विजय शान्ति सूरीश्वर के जीवन काल में उनके सामिप्य एवं सानिध्य में रहे गुरूभक्तों, साधु साध्वियों व अन्य लोगों से सम्पर्क किया। गुरूदेव की मौजूदगी में एवम् बाद में प्रकाशित समाचार पत्रों, पत्र- पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि को शान्ति दर्शन के लेखन का आधार बनाया।

" शान्ति दर्शन " का प्रथम प्रकाशन गुरूदेव भगवान की जन्म शताब्दी वि. सं. 2046 की वसन्त पंचमी को किया गया। ग्रंथ में प्रकाशित चित्रों व दृश्यों का छायांकन बहुत ही कलात्मक ढंग से प्रसिद्ध छायाकार स्व. श्री कान्ति रांका, सादड़ी जि. पाली निवासी ने किया।

मूल संस्करण की प्रतियां उपलब्ध नहीं होने से इसका पुन : प्रकाशन वसन्त पंचमी 2008 को श्री शान्ति सेवा संघ, माण्डोलीनगर द्वारा किया गया। पुन : प्रकाशित संस्करण की प्रतियां भी अब उपलब्ध नहीं होने तथा इसकी मांग होने के कारण इसके पुनः प्रकाशन का निर्णय श्री शान्ति सेवा संघ, माण्डोलीनगर द्वारा लिया गया । इसके पुनः प्रकाशन में मूल ग्रंथ के गद्य व छाया चित्रों को हूबहू ही प्रकाशित किया जा रहा है। मूल ग्रंथ व प्रथम आवृति के प्रकाशन में जिन गुरूभक्तों का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, उनका नाम प्रत्येक पेज पर प्रकाशित किया गया था। इस आवृति के प्रकाशन में भी जिन गुरूभक्तों ने सहयोग प्रदान किया है, उनके नाम प्रत्येक पेज पर अंकित है।

ॐ
नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलम् ।।

इस आवृति के प्रकाशन से पाठकों को गुरूदेव विजय शान्ति सूरीश्वर जी के जीवन काल के रोमांचक प्रंसगों, उनके साधना स्थलों की जानकारी व झांकी के दर्शन होंगे। इसके प्रकाशन में सभी ज्ञात-अज्ञात महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। मूल ग्रंथ के प्रथम आवृति मुद्रक के.जी. इन्टरप्रायजेज, मुम्बई तथा दूसरी तथा तीसरी आवृति के मुद्रक युनिवर्सल प्रिण्टर्स एवं स्टेशनर्स, जयपुर के हम आभारी हैं, जिनका इस प्रकाशन में भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

वसन्त पंचमी, 8 फरवरी 2011 श्री शान्ति सेवा संघ, माण्डोलीनगर

# शांति दर्शन

महान योगीराज
गुरुदेव श्री शांतिसूरीश्वरजी भगवान
की पावन स्मृति में
सादर समर्पित

जन्म शताब्दी
वि.सं. १९४६ - २०४६
वसंत पंचमी

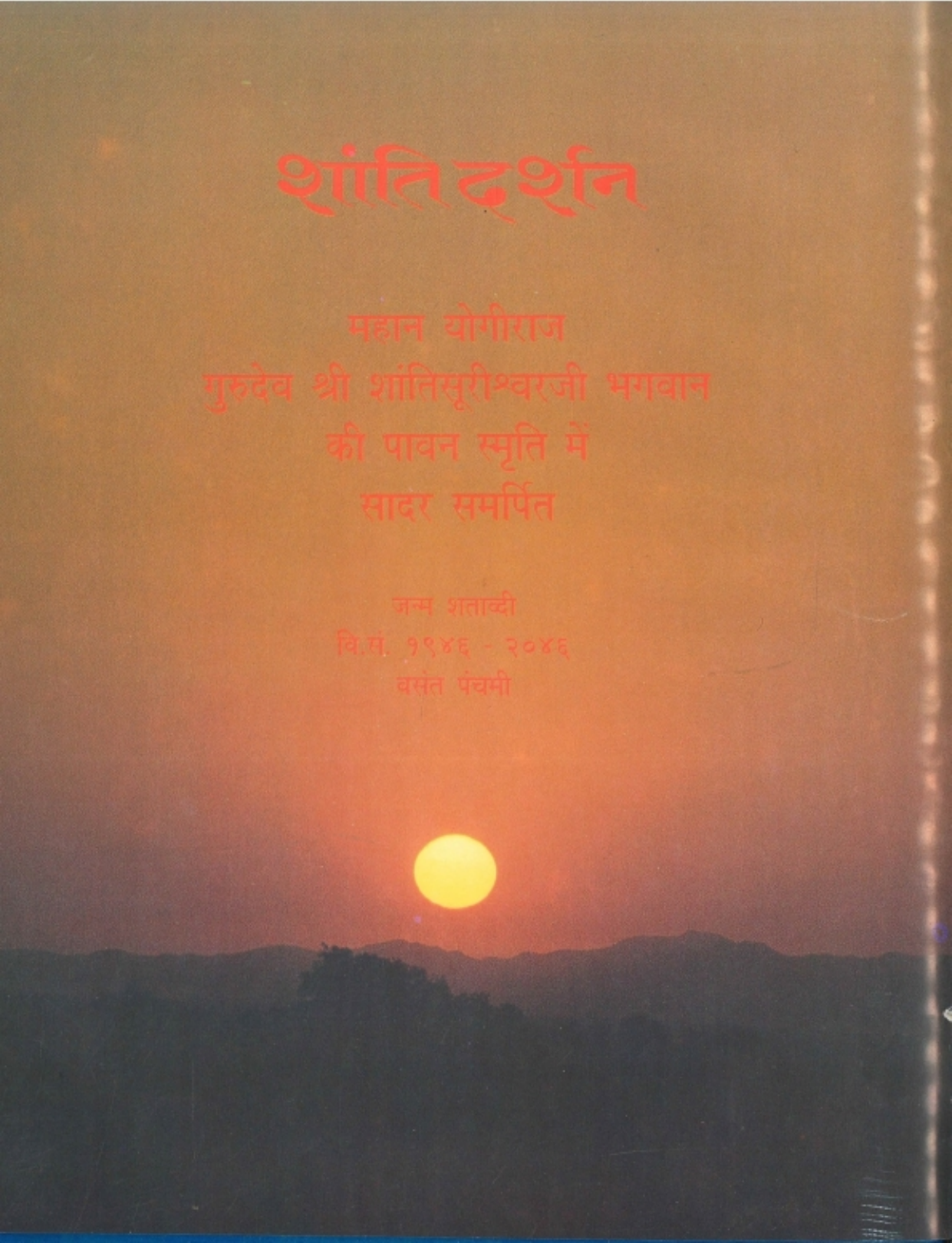

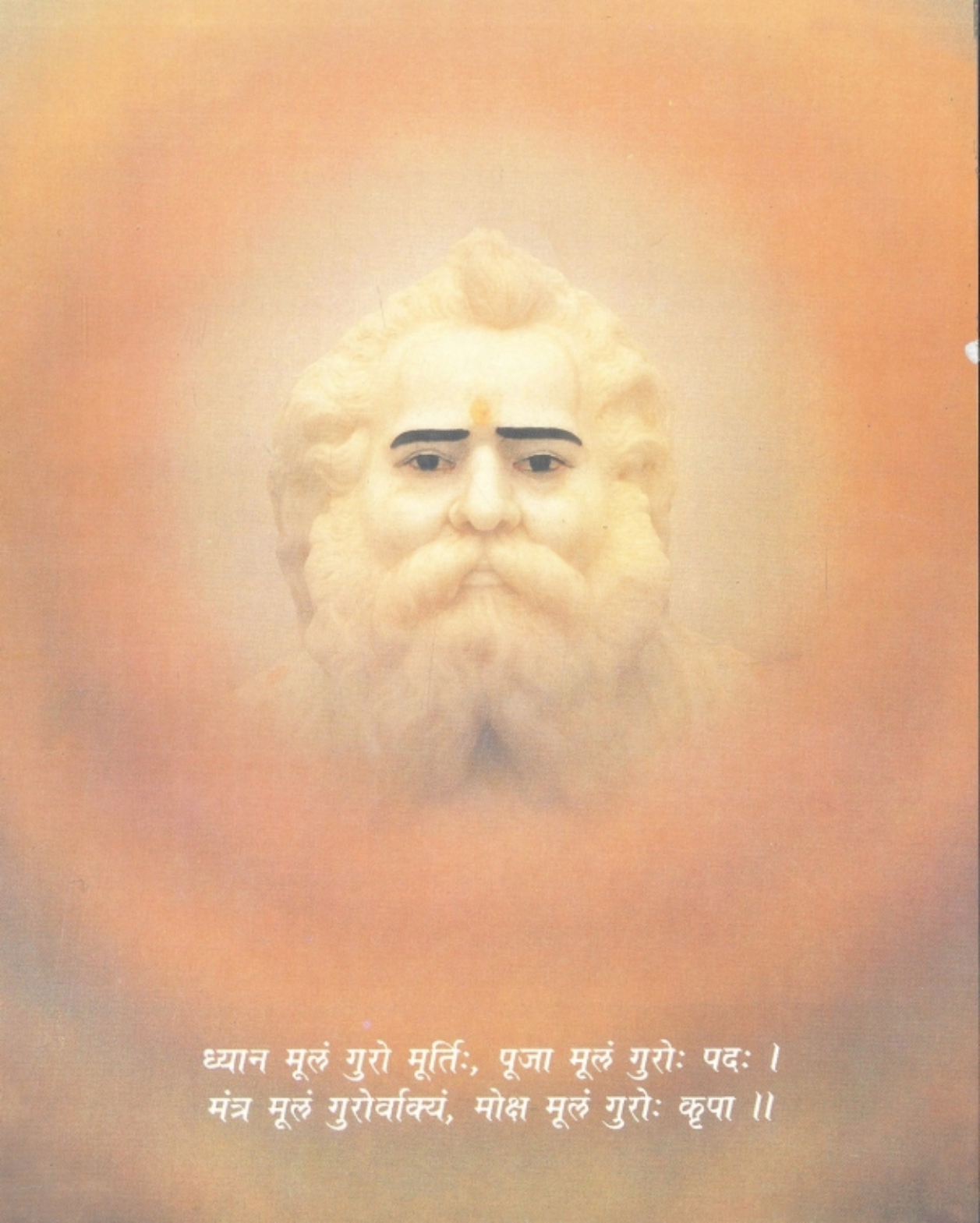

ध्यान मूलं गुरो मूर्तिः, पूजा मूलं गुरोः पदः ।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ।।

# प्राक्कथन

भारत भूमि जैसे विविध प्राकृतिक सौंन्दर्य से परिपूर्ण हैं वैसे ही यह पवित्र भूमि महान् ऋषियों द्वारा की गई आत्म साधना, त्याग और तपस्या के तेज से देदीप्यमान हैं। मानव से महामानव तक के शिखर तक पहुँचने वाली आत्माएं, स्तर की अपेक्षा विशिष्ठ संस्कारों की धनी होती है। प्रत्येक युग में कोई ऐसी आत्मा का जन्म होता है जो अपनी आभा और महानता से समग्र विश्व को आलोकित कर देता है।

परमपूज्य गुरुदेव भगवान अनन्त आकाश के क्षितिज पर उदय होने वाले सहस्त्र किरण दिवाकर ही थे। भगवान महावीर के विश्व बंधुत्व जन कल्याण, प्राणी मात्र की सेवा, शांति, समन्वय और सद्भावनाओं के महान् प्रचारक और अलौकिक योग शक्तियों के स्वामी विजयश्री शांतिसूरीश्वरजी 20वीं शताब्दी के श्रेष्ठ महात्मा हुए हैं। आपकी जनकल्याणकारी बोधवाणी राज महलों से लेकर साधारण झोपड़ियों तक में अनुगुंजित रही। वे जहाँ भी पहुँचे उनके श्री चरणों में श्रद्धा और प्रेम से विशाल जन समूह उमड़ पड़ता था। उसमें जात-पांत, संप्रदाय-पंथ, अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं होता था। उनकी प्रवचन सभा इन्द्रधनुष की तरह बहुरंगी होते हुए भी एकरुपता एवं समानता लिए होती थी। आपकी ओजस्वी एवं प्रेरक मृदुवाणी का श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता था।

परमपूज्य गुरुदेव भगवान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का आधार जैन दर्शन था। गुरुदेव ने आजीवन सत्य और अहिंसा की दिशा में कार्य किया। आपने जहाँ एक ओर पीड़ित मानवता की सेवा की वहीं धर्म के नाम पर होने वाली पशु बलि का विरोध कर अनेक स्थानों पर पुरातनकाल से आ रही बलिप्रथा बन्द करवाई और अहिंसा को प्रतिपादित किया। आपकी प्रेरणा से शराब, मांस तथा अन्य दुर्व्यसनों से अनेक लोगों ने मुक्ति पाई।

मानव समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, कन्या विक्रय, मृत्युभोज, बालविवाह, वृद्धा विवाह आदि कुरीतियों व रुढ़ियों के उन्मूलन के लिए सतत् प्रयत्न किये। इसमें अनेक वर्ग, जातियाँ और समाज अपने में व्याप्त बुराइयों को तत्काल त्यागने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हुए। मानव जाति के उत्थान हेतु समर्पित उनका यशस्वी जीवन जन-जन के लिए अभिनन्दनीय है।

पूज्य गुरुदेव भगवान के व्यक्तित्व और कृतित्व में योग साधना का ऐसा चमत्कार था कि वे जहाँ भी विराजते वहाँ का वातावरण अत्यन्त शांत और प्रेममय हो जाता। यहाँ तक की घने जंगलों में हिंसक पशुओं में भी मैत्री भाव आ जाते। यही कारण है कि आप निर्भय होकर आत्म साधना में लीन रहते। सम्पूर्ण वातावरण में दिव्यता, भव्यता और पावनता व्याप्त हो जाती।

महान् योगीराज का सम्पूर्ण जीवन हम सबके लिए प्रेरक और शत्-शत् वंदनीय है। वे महासागर थे, असीम आकाश थे, दिव्य ज्योति थे। आज भी उनकी दिव्य आभा हमें स्फुरित कर नई चेतना दे रही है। हमारा अहोभाग्य है कि हम उस महापुरुष की जन्म शताब्दी मना रहे हैं।

गुरुदेव भगवान के बारे में अनेकों साहित्य प्रकाशित हुए है लेकिन इस प्रकार का सचित्र प्रकाशन करने का यह हमारा प्रथम प्रयास है। किसी महापुरुष के बारे में सब कुछ जानना और लिखना अत्यन्त कठिन है, वे हमारी पहुँच के बाहर हैं तथापि हमने अपनी अल्प बुद्धि से एक छोटा सा प्रयास किया है।

पाठकों से निवेदन है कि वे इसका सदुप्रयोग करें और जो भी कमी ध्यान में आए या नई जानकारी उपलब्ध हों तो हमें सूचित करने का कष्ट करें ताकि भविष्य के प्रकाशनों में संशोधन कर सकें। इस प्रकाशन में जिन महापुरुषों का आर्थिक एवं बौद्धिक सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सबके प्रति विनम्र कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

श्री शान्ति सेवा संघ, माण्डोलीनगर

लेखन एवं संकलन
कांतिलाल जैन

प्रथम संस्करण 1990
पुनः मुद्रित - 2011

सहयोग
ठाकुर भैरुसिंह, मा. आबू
रुपचंद हेमाजी, मालवाड़ा

प्रकाशक
श्री शान्ति सेवा संघ
माण्डोलीनगर (जालोर)
राजस्थान - 307803

दूरभाष : रामसीन 233050

# शांति दर्शन

कला सम्पादन
छायांकन एवं रुपसज्जा
कांति रांका

जन सम्पर्क एवं प्रबन्ध सम्पादन
गजेन्द्र जैन

सहायक
राजीव सिंघवी

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रक
यूनिवर्सल प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
एम. आई. रोड़, जयपुर

# कला सम्पादकीय

विश्व की महान् विभूति, परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी हम सभी के लिए जागरण एवं आत्मबोध का वर्ष है। वैसे तो गुरुदेव की अनेकों पुस्तकें, चित्र, लेख, घटनाएं आदि समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं, लेकिन उन सबको आधार बना कर, उन स्थलों को प्रत्यक्ष देखना सचमुच रोमांचकारी है।

जन्म शताब्दी में अनेकानेक योजनाएँ बनाई गई, जिसमें 'शांति दर्शन' का प्रकाशन भी मुख्य था। जिसे पूर्ण कर हम अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते हैं। इस कार्य हेतु जहाँ श्री कांतिलालजी जैन के वर्षों के अथक प्रयास से किए गए संकलन व लेखन को आधार बनाया गया वहीं गुरुदेव के सम्पर्क में तेरह वर्ष लगातार साथ रहने वाले ठाकुर भेरुसिंहजी ने हमें पूर्ण सहयोग कर उन सभी स्थलों को प्रत्यक्ष दिखलाया जहाँ जहाँ गुरुदेव ने अलौकिक साधना कर सिद्धियाँ प्राप्त की। साथ ही अनेकों घटनाएं और अनुभव भी धारा प्रवाह सुनाते रहते जिससे हमें ऐसा लगता जैसे प्रत्यक्ष गुरुदेव और वे घटित दृश्य हमारे सामने हों।

कहीं घनघोर जंगल, कहीं पर्वतों की ऊँचाईयां, कहीं बिकट घाटियाँ, तो कहीं भयानक गुफाऐं लेकिन सभी अत्यन्त रमणीय, प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण। ईश्वर की परम अनुकम्पा और गुरुदेव का आशीर्वाद, मन में उत्साह और उमंग लिए हम निर्भय होकर यात्रा कर रहे थे। 'मेरे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि मुझे इन सभी दृश्यों को देखने और छायांकन करने का स्वर्णिम अवसर मिला।' इसका श्रेय श्री गजेन्द्र जैन को है जिन्होंने दृढ़ संकल्प से इस कार्य को पूर्ण करने का बीड़ा उठाया और प्रारम्भ से अंत तक मेरे साथ रहकर इसे क्रियान्वित किया। साथ ही जनसम्पर्क कर सम्पूर्ण वार्ताओं को रिकार्ड किया।

श्री राजीव सिंघवी ने भी हमें सम्पूर्ण कार्य में साथ रहकर पूर्ण सहयोग दिया जिससे हमारी यात्रा अत्यन्त सुखद रही। यात्रा के एक चरण में श्री हीराचंदजी कोठारी व श्री रुपचंदजी हेमाजी भी हमारे साथ थे।

हम जहाँ भी गए वहाँ स्थानीय संस्थाओं, व्यवस्थापकों, कर्मचारियों और जन साधारण ने इतना अपूर्व सहयोग दिया जिसे हम भूला नहीं सकते। इनमें प्रमुख हैं श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी - देलवाड़ा, श्री भक्त वत्सल शरणजी महाराज श्री गोमुख वशिष्ठ आश्रम, माउन्ट आबू।

इस पुस्तिका की सम्पूर्ण रूप सज्जा एवं छपाई मुझे बम्बई में रहकर करनी पड़ी। जिसमें श्री नवरतन बी. सिंघवी, श्री राजेश नन्दवाना व श्री आई.एम.चालिसा एवं श्री किरण पानसरे - समीर प्रोसेस का पूर्ण सहयोग मिला।

मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों का हार्दिक आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सहयोग दिया। सभी के हार्दिक स्नेह, पूर्ण सहयोग के कारण ही मैं यह कार्य करने में समर्थ हो सका हूँ। अतः मैं सबका हृदय से आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

छायांकन, रुपसज्जा व मुद्रण के समय मुझे हर जगह गुरुदेव की दिव्यता का आभास होता रहा, जिसे मैंने भाव विभोर हो आत्मसात किया है। मेरे लिये आत्मीयआनन्द के ये क्षण अविस्मरणीय रहेंगे।

इस पुस्तिका में जो कुछ सुन्दर दिख रहा है वह सब माँ सरस्वती की कृपा और गुरुदेव का आशीर्वाद है। अन्य सभी असुन्दर मेरा है, कृपया उसे अनदेखाकर क्षमा करें।

(कांति रांका)

ॐकार विन्दु संयुक्तम्, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ।।

# आध्यात्म प्रधान - भारत भूमि

विश्व सभ्यता के इतिहास में भारत अपनी गौरवमयी सांस्कृतिक परम्पराओं और आध्यात्मिक चिन्तन- धाराओं के लिए सुप्रसिद्ध है। कालचक्र के प्रभाव में, विश्व-पटल पर अनेक संस्कृतियाँ एवं विचार धाराएँ उभरी और मिटी, पर भारत की महान् सांस्कृतिक परम्पराऐं, अपने आध्यात्मिक वैभव को संजोए, अविच्छिन्न रूप में आज तक चली आ रही हैं। इन गौरवपूर्ण परम्पराओं को सजीव, गतिशील और चेतना सम्पन्न बनाये रखने में यहाँ के ऋषि-मुनियों, तपस्वी सन्तों और धर्म-प्रवर लोकनायकों का बड़ा हाथ रहा है।

इतिहास साक्षी है कि यहां एक भी शताब्दी ऐसी नहीं बीती, जिसमें मानव - कल्याण के मंत्र-सृष्टा, सन्त या ऋषि न उत्पन्न हुए हों। विविध ताप संतप्त जन-मन को शान्त करने, उसे सतेज बनाने तथा अविद्या, आदि सहज मानवीय दुर्बलताओं को नष्ट करने के लिए यहां के ज्योतिर्धर - अध्यात्म पुरुष सतत् प्रयत्नशील रहे हैं। यही कारण है कि विश्व के समस्त राष्ट्र आध्यात्मिक क्षेत्र में भारत को अपना गुरू मानते आये हैं। धन, बल और भौतिक - विज्ञान में कोई राष्ट्र चाहे कितना भी बढ़ा-चढ़ा क्यों न हो, वह भारतीय आध्यात्मिक महानता और प्राचीनता के प्रति सदैव श्रद्धाशील बना रहा है।यहाँ के सन्तों एवं परिव्राजकों ने समय-समय पर अपने अलौकिक ज्ञान-गुण से भौतिक- विज्ञान-विकसित देशों को भी आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म-दर्शन की दिशा में चकित और विस्मित किया है और उन्हें यह स्वीकार करने के लिए विवश किया है कि भौतिक-विज्ञान की अपेक्षा आत्म-विज्ञान कहीं अति सूक्ष्म, गहन और कल्याणकारी है। यह सदा सर्वत्र हितकर और मंगलप्रद रहा है। इससे कभी किसी तरह के अहित की सम्भावना नहीं रहती।

इसका यह तात्पर्य भी नहीं कि भारतीय मनीषी भौतिक विज्ञान से सर्वथा अनभिज्ञ थे अथवा उन्होंने इस दिशा में कोई सार्थक चिंतन ही नहीं किया। इसी शताब्दी में राजस्थान के प्रकाण्ड पण्डित मधुसुदन ओझा ने अपना सारा जीवन यहीं सिद्ध करने में खपा दिया कि वेद, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों में वस्तुतः सृष्टि-विज्ञान का ही प्रतीकात्मक चित्रण है और आज अनेक विज्ञान-वेत्ताओं का ध्यान भी उनकी उन खोजों की ओर आकृष्ट हुआ है, तथापि... मानव विकास की चरम परिणति भौतिकवादी अभ्युत्थान में नहीं, वरन् आध्यात्मिक गतिशीलता और आत्मकल्याण में है। मानव की इस आध्यात्मिक स्फुरणा को सतत् गतिशील बनाए रखने में, भारतीय संत मनीषियों का बड़ा हाथ रहा है, यद्यपि इन सन्तों की विभिन्न परम्पराओं में आचार-विचार विषयक यत् किंचित् भेद परिलक्षित होता रहा है, तथापि आत्म-कल्याण के लक्ष्य पर इनमें कभी कोई भेद नहीं रहा। इस प्रकार अनेकता में एकता स्थापित करने के सत्प्रयास में ये भारतीय सन्त कभी पीछे नहीं रहे।

भारत सदा सदा से त्याग और वैराग्य का केन्द्र स्थान रहा है। जितनी भी विभूतियाँ आज तक संसार में पूज्य, वन्दनीय एवं स्मरणीय बनीं हैं, उनके जीवन में नैसर्गिक अध्यात्मवाद कूट-कूट कर भरा था। फिर भी त्याग और वैराग्य की जो भूमिका जैन धर्म में दिखाई देती है, वह अन्यत्र उस रूप में विकसित नहीं हो सकी। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर प्रभु और उनके शासन में गणधर भगवन्त एवं महान् सुविदित पूर्वाचार्य चिरस्मरणीय बने रहे और वर्तमान शती में भी जिन महापुरूषों ने भारत को अपनी पावन वाणी से विभूषित किया, उनके नाम बड़ी श्रद्धा, आदर, भक्ति एवं गौरव के साथ स्मरण किये जाते हैं। उन्हीं जैनाचार्यों में से महान् योगीराज श्री शान्ति सूरीश्वर जी भी सुप्रसिद्ध हैं। अपनी गुरुपद की विशेषता से वे सदा के लिए संसार पर अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं, तथा सभी के लिए मार्गदर्शक बन चुके हैं। 'सदगुरु' के गरिमामय पद का सच्चा अधिकारी वही दिव्यआत्मा होता है, जिसका जीवन सांसारिक प्रवृतियों से निवृत्त हो जाता है और जो सदा ही मानसिक, वाचिक, कायिक अशुभ प्रवृतियों का निग्रह कर शुभ योग में ही निरन्तर तल्लीन रहता है। इसी तरह से अपने अनुयाइयों को भी वे निःस्पृहभाव से जिनोपदिष्ट शुभमार्ग पर बढ़ाने के लिए सदा कटिबद्ध रहते हैं। ऐसे ही गुरु स्व और पर के जीवन को सफल बना सकते हैं। अतः अपना हित चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इसी प्रकार के गुणों से युक्त गुरु की सेवा - शुश्रूषा और भक्ति करनी चाहिए।

मानव की सुषुप्त शक्ति को जाग्रत कर, उसे आत्म-कल्याण की दिशा में गतिशील बनाने और जन-मन में भक्ति, श्रद्धा और संयम साधना की लौ को प्रज्वलित बनाये रखने में जैन सन्तों की महत्वपूर्ण भूमिका कभी विस्मृत नहीं की जा सकती। भगवान ऋषभ देव से लेकर आज तक मानव समाज में शान्ति, सुव्यवस्था और प्रेमपूर्ण सह-अस्तित्व का जो रूप देखा जाता है, निश्चय ही वह इन महान सन्तों की देन है। ये सन्त रात-दिन

देश के हर भाग में, गाँव-गाँव और घर-घर में अहिंसा और सत्य के प्रेम-भरे सन्देश पहुँचाते हुए जन-मन को जोड़ते रहे हैं, अपने इस महान सेवा-कार्य में अपने शारीरिक सुख की किंचित् भी चिन्ता न करते हुए ये सतत् विश्वबन्धुत्व की अलख जगाते रहे हैं । भगवान महावीर आत्म-कल्याण के लिए, अपने समस्त सुख-साधन और राजकीय वैभव को तिलांजलि देकर सम्राट से परिव्राट बन गए । इसी तरह यह आध्यात्मिक सन्त-परम्परा अटूट प्रभाव के रूप में भारत की धरती पर प्रभावित होती आयी है । इसका क्रम कभी टूटा नहीं, सदा अविच्छिन्न चलता रहा है । भारतीय संस्कृति को उज्ज्वल और आध्यामिक रूप प्रदान करने में सन्तों का बहुत बड़ा योगदान है ।अपने कोमल तन को व्रत, उपवास आदि से संयमित कर, अपने मन को योग एवं संयम-साधना से तपाकर आत्मज्ञान का जो निर्मल वीतराग रूप इन्होंने समाज के समक्ष प्रस्तुत किया, वह सर्वथा अनुपम और अभिनन्दनीय है । सतत् प्रवाहमान नदी की तरह इनकी साधना और धर्म-देशना का प्रवाह कभी रूका नहीं, वह नित्य गतिशील रहा है ।

जैन सन्तों की इस परम्परा में दादागुरु श्री धर्मविजय जी, महान तपस्वी श्री तीर्थविजय जी तथा जगत्गुरु श्री शान्तिविजय जी महाराज का नाम मुख्य रूप से उल्लेखनीय है । उनका जीवन कुन्दन की तरह दमकता और संयम के तेज से चमकता था । उनका सरल सन्त-हृदय दुग्ध की तरह धवल, स्फटिकवत् स्वच्छ दैदीप्यमान तथा पाटल-प्रसून की तरह मनोहारी एवं आह्लादकारी था । इनके मानसाद्रि से मैत्री और करुणा के निर्मल-निर्झर सतत् झरते रहते थे ।

राजस्थान भारतवर्ष का एक महत्वपूर्ण राज्य है यहाँ के लोगों ने देश के इतिहास एवं संस्कृति के निर्माण की क्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । त्याग, बलिदान, स्वदेश -प्रेम और वीरता में राजस्थान का गौरव सर्वोच्च रहा है । साथ ही प्राचीनकाल से ही राजस्थान के जन-जीवन पर धर्म का भी व्यापक प्रभाव रहा है । भगवान महावीर के जीवनकाल में ही राजस्थान - जो उस समय मरु-प्रदेश के नाम से जाना जाता था - के कुछ भागों में जैन धर्म के प्रचार एवं प्रसार का ज्ञान परवर्ती जैन साहित्य से होता था । राजस्थान के विभिन्न देशी रियासतों में विभाजित रहने पर भी जैन-धर्म उन्नतिशील बना रहा । मध्यकाल में अनेक मन्दिर निर्मित हुए तथा उनमें मूर्तियों की प्रतिष्ठा की गई । अनेक पवित्र ग्रंथों की प्रतियाँ तथा मौलिक ग्रंथ लिखे गये । राजा एवं राजनायकों ने जैन साधुओं को आदर की दृष्टि से देखते हुए, जैनधर्म के प्रति उदारता और सहिष्णुता का परिचय दिया, जिसके कारण राजस्थान में जैन धर्म एवं अहिंसा का प्रभाव अक्षुण्य बना रहा । गाँव-गाँव में साधु-साध्वी विचरते हैं । साधु-संतों का खूब सम्मान होता रहा । श्रमणों की अमृत -वाणी और वैराग्य भावनाओं से यहाँ की प्राचीरें और किले आज भी गुंजायमान हैं । जैन संतों का समाज-जागरण और नैतिक उत्थान में बड़ा योगदान है । साधु-सन्तों ने भी इस भूमि को इसी लिए सदा वन्दनीय माना है-

**रम्याणि हरभ्याणि जिनेश्वराणाम्**
**श्रद्धालवो यत्र वसन्ति लोकाः ।**
**मुद्रा घृत् दुग्धमया च भूमि**
**मरुस्थली सा न कथं प्रशंस्या ।।**

भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है । समय-समय पर गांवों ने ही ऐसे रत्न दीये हैं, जिन्हें पिरो कर बनाये हुए अगणित कँठहारों ने भारत माँ के वक्षस्थल को सुशोभित किया है । जैन समाज की पुरातन संस्कृति और धर्म भावना को जागृत रख उसकी ज्वलन्त ज्योति समस्त विश्व में फैलाने के लिए 'मरुधरा' ने सदैव तत्परता ही नहीं वरन् कार्यमग्नता का पूर्ण परिचय दिया है । भारतवर्ष का इतिहास मरुधरा के दिव्य प्रभावशाली नररत्नों के त्याग और वीरत्व के चिरस्मरणीय कार्यों से देदीप्यमान है ।

**"मरुधरा तणा मिनारे शुभ ज्योत भासे,**
**जिन मन्दिरो झगमगे दवला प्रकाशे ।।**
**अहा ! अनुपम रचना जिन चैत्य केरी,**
**मरुधर तणी निरखशो कीर्ति अनेरी ।।**

दादा गुरु श्री धर्मविजयजी, गुरु श्री तीर्थ-विजयजी, तथा श्री शान्तिविजयजी सभी मरुधरा की क्रोड के रत्न हैं । सभी महापुरुष अहीर जाति के ही थे । अहीर जाति मूलतः क्षत्रिय है । आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति पौराणिक काल से ही क्षत्रिय जाति में अधिक प्रस्फुटिक होती रही है । सभी जैन तीर्थंकर भी क्षत्रिय ही थे ।

वर्तमान सदी के जिन धुरंधर आचार्यों ने जैन धर्म को उन्नत और गौरवशाली बनाया उनमें महान् योगीराज आचार्य सम्राट श्री शान्तिसूरीश्वरजी का नाम सदा अमर, अशेष और अविस्मरणीय रहेगा । उनका जीवन, कार्य और व्यक्तित्व सर्व-जन-हिताय और सर्व-जन-सुखाय था ।

जैन जगत के इस महान युग-पुरुष के गुणों का प्रसार जिनका जीवन, सरिता के समान आरम्भ में लघु, फिर विराट और अन्त में असीम और अनन्त हो गया । जिन्होंने समाज को नवीन दिशा, नवीन चेतना, नवीन विचार, नवीन चिन्तन और नवीन सन्देशों की अनुभूति कराई । ऐसी ही अद्भुत विभूति के आचार्य थे श्री विजय शान्ति सूरीश्वरजी महाराज ।

जन्म : वि.सं. १८४८, आषाढ़ सुदी १५.
सन् १७९१
जन्म स्थान : मांडोली
जाति : अहीर
पिता का नाम : दरजो जी.
सांसारिक नाम : कोलो जी.
दीक्षा : वि. सं. १८७३, माघ सुद ५.
सन् १८१६
दीक्षा स्थान : खंडाला.
गुरुजी : मणिविजयजी.
निर्वाण : वि.सं.१९४९, श्रावण वदी ६.
सन् १८९२
निर्वाण स्थल : मांडोली.

अनन्त लब्धिधारक

# दादा गुरु श्री धर्मविजयजी महाराज

।। योगीन्द्र, त्रिकालदर्शी ।।

भारतभूमि पूज्य भूमि के रूप में सदा से उर्वरा रही है । यही कारण है कि यहाँ के त्याग, तपस्या, अहिंसा, ज्ञान, भक्ति एवं दया आदि जीवन का सही मार्ग प्रशस्त करने में सदा सफल रहे हैं । भारतीय संस्कृति की गरिमा सदैव सन्त-महात्माओं और ऋषि-मुनियों के तप और त्याग से रही है । भारत की पावन धरती ने समय-समय पर तेज पुंज ऋषि-मुनि अवतरित किये हैं । संस्कृति के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने के लिए प्रत्येक युग में महापुरुष पैदा हुए हैं । महापुरुष अपनी महत्ता, दिव्यता और साधुता से समस्त विश्व को आलोकित करते हैं । भारत की रत्नगर्भा धरा में अनेक रत्न छिपे हुए हैं, जो समय-समय पर देशहित एवं समाजहित में अध्यात्म एवं नैतिकता को विकसित करने के लिए उजागर होते हैं । इसी क्रम में विक्रम संवत् १८४८ आषाढ़ सुदी पूर्णिमा के शुभ दिवस पर एक महान् आत्मा का आर्विभाव हुआ, जिसके देदीप्यमान प्रकाश से वसुधा ज्ञान-रश्मियों से जगमगा उठी जो विश्व में फैल कर अज्ञानता का नाश कर रही थी । वे कोहिनूर थे - रत्नराज, दादागुरु श्री धर्मविजयजी महाराज, जिन्होंने प्रभु महावीर के मार्ग को अपनाया । अहिंसा एवं तप के बल से इस महा मानव ने धर्म की ज्योति जगाई ।

दादागुरु श्री धर्मविजयजी महाराज का जन्म जोधपुर राज्य के जसवन्तपुरा परगने में मांडोली नामक एक छोटे से गाँव में हुआ । उनके पिताश्री का नाम दरजोजी था । दरजोजी जाति के रायका - (रबारी) थे । दादा गुरु धर्मविजयजी का सांसारिक नाम कोलोजी था । पिताश्री दरजोजी के देहावसान से कुटुम्ब निर्वाह का भार कोलोजी पर पड़ा । बचपन से ही कोलोजी को ईश्वर एवं भगवद्भक्ति में अटल श्रद्धा थी उनके जीवन निर्वाह का साधन पशुओं का पालन - पोषण था ।

एक बार मारवाड़ में भयंकर दुष्काल पड़ा । अन्न-पानी और पशुओं के लिए घास मिलना कठिन हो गया । ऐसे कठिन समय में वे कुटुम्ब को साथ लेकर देशाटन के लिए निकल पड़े । मार्ग में बिमारी फैल जाने से कितने ही पशु मर गये । परिवार के लोगों में भी सिर्फ कोलोजी और उनका एक डेढ़ वर्ष का बालक (वेलजी) जीवित रहे । घूमते-फिरते वे पूना के समीप चोक नामक गाँव में आये । वहां मारवाड़ से आए हुए, थूर गाँव के निवासी जसाजी नामक एक जैन गृहस्थ रहते थे । कोलोजी ने अपने पुत्र के साथ उनके यहाँ पशुओं की सार-सँभाल के लिए नौकरी कर ली । कोलोजी की अपूर्व भक्ति

भावना देखकर सेठ ने उन्हें पँच परमेष्ठी मँत्र सिखाया। कोलोजी अधिक समय तक ध्यान में ही तल्लीन रहते थे।

एक बार उनके पुत्र वेलजी को जंगल में सर्प ने डस लिया। उस समय कोलोजी ईश्वर के ध्यान में निमग्न थे। ध्यान से जब जागे तो उन्होंने सर्पदंशित पुत्र को मृत्यु की शरण में देखा। पुत्र को अपने गोद में लेकर उन्होंने यह दृढ प्रतिज्ञा की - यदि मेरा पुत्र बच जाएगा तो ही मैं अन्न जल ग्रहण करूंगा; नहीं तो परमेष्ठी मंत्र का ध्यान करते हुए यह शरीर छोड़ दूंगा। सेठ तथा अन्य लोगों ने यह प्रतिज्ञा छोड़ देने के लिए उन्हें बहुत समझाया परन्तु ईश्वर में अडिग श्रद्धा रखते हुए वे अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे। उपवास के तीसरे दिन श्रद्धा के प्रबल प्रताप से कोई सन्त महात्मा आ उपस्थित हुए और पुत्र को जीवित किया। तुरन्त ही कोलोजी ने अपने उस पुत्र को महात्माजी के चरणों में रख दिया और कहा - आपने इसको जीवन-दान दिया है इसके लिए मैं आपका अतिशय ऋणी हुँ। मुझे अपना शेष जीवन भगवद् भक्ति में बिताना है, इस लिए कृपया आप यह बतलाइए कि मुझे इस पुत्र की क्या व्यवस्था करनी चाहिए। उत्तर में महात्माजी ने कहा इस पुत्र को तुम किसी साधु अथवा यति को बोहरा देना और तुम भी जैन दीक्षा अंगीकार कर लेना इस से आत्मज्ञान सम्पादन कर तुम एक महापुरुष के रूप में पूजे जाओगे; यह तुम्हें मेरा आशीर्वाद है।

महात्माजी तुरन्त ही अदृश्य हो गए। इसके बाद कोलोजी ने तीन उपवास का पारणा किया। कुछ मास बाद उन्होंने अपने पुत्र वेलजी को एक यति को बोहरा दिया जो वेलजी यति के नाम से मंडार गांव में प्रसिद्ध हुए। इसके बाद कोलोजी को मणिविजयजी नामक एक जैन साधु मिले। उनके पास उन्होंने संवत १८७३ की माघ शुक्ला पंचमी के दिन दीक्षा ग्रहण की। तभी से उनका नाम मुनि महाराज श्री धर्मविजयजी रखा गया। खंडाला घाट, बम्बई और पूना के बीच एक बहुत रमणीय पहाड़ी स्थान है। यहाँ पर आपने बहुत लम्बा समय ध्यानावस्था में व्यतीत किया। जेठ महीने की कड़ी धूप में धधकती हुई टेकरी की चोटी पर विराजमान होकर दोपहर में एक बजे से चार बजे तक ध्यानस्थ अवस्था में खुले नयनों द्वारा सूर्य की किरणों की आतपना लिया करते थे। कड़ाके की ठण्डी में लगातार कई रात्रियां नदी किनारे व खुले पहाड़ी स्थल में ध्यानस्थ गुजार दिया करते थे।

कुछ समय खंडाला घाट में ध्यान कर अपने जन्म स्थान मांडोली में पधारे। कुछ समय में ही श्री धर्मविजयजी महाराज को स्वभावतः सहज ही आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई। आप इतने बड़े शक्तिशाली समर्थ पुरुष थे कि एक स्थान पर विराजते हुए भी आप उसी समयमें अनेक स्थानों पर अपने भक्तों को दर्शन देते थे।

एक समय आप रामसीण गांव से विहार कर आगे पधार रहे थे। उस समय आपके साथ बहुत से लोग थे। जेठ का महिना था। गर्मी सख्त पड़ रही थी। साथ के लोगों को प्यास सताने लगी। आस-पास में पानी मिलने का कोई उपाय न था इस लिये बहुत से लोग घबरा गये। अनन्त दयालु श्री दादा गुरुदेव के पास अपनी तर्पणी में थोड़ा सा जल था आपने उसमें से थोडा सा पानी पृथ्वी में गड्ढा करा कर डाला और उसके उपर एक कपड़ा ढकवा दिया। तुरन्त ही लब्धि के प्रभाव से उस गड्ढें में पानी उमड़ आया। प्रत्येक ने उस से अपनी प्यास बुझाई।

एक समय श्री धर्मविजयजी महाराज रामसीण में विराजते थे। चैत्र सुदी पूर्णिमा का दिन था। उन्हीं दिनों रामसीण गाँव से श्रावक पालीताणा यात्रा के लिए गये हुए थे। वे पहाड़ के ऊपर आदीश्वर दादा के दर्शन कर बाहर निकले तो उन्होंने वृक्षके नीचे गुरुदेव श्री को देखा। वन्दना के पश्चात् उन्होंने प्रश्न किया – भगवन् ! आप कब पधारे ? प्रत्युत्तर में 'ॐ शान्ति' शब्द सुनाई दिया। उसी दिन श्रावकों ने पालीताणा से रामसीण पत्र लिखा कि आज दिन यहाँ पहाड़ पर श्री धर्म विजयजी महाराज के दर्शन हुए हैं। क्या आप श्री अभी भी रामसीन में हैं अथवा विहार कर गये हैं। रामसीन से इस प्रकार का उत्तर आया कि चैत्र सुदी पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल दस बजे गुरु श्री ध्यान करने के लिये जंगल में पधार गए थे। शाम को चार बजे के बाद आप लौट आये थे और अभी यहीं पर विराजते हैं। इस प्रकार आपकी अपनी अनन्त आत्मशक्ति द्वारा एक ही समय दूर दूर देशों में अनेक स्थनों पर अपने भक्तों को दर्शन देते थे। आप श्री के जीवन चरित्र में इस प्रकार की अनेक अद्भुत और अलौकिक बातें हैं।

एक बार आपने अभिग्रह लिया कि हाथी बोहरावे तो पारणा करना। दो मास की कठिन तपस्या के बाद एक दिन आप जयपुर के बाजार में आत्मबल से पधार रहे थे कि आपको एक हलवाई की दुकान के पास एक मदमस्त हाथी आता हुआ दिखलाई दिया। श्री दादा गुरु वहां ठहर गए। हाथी भी वहां आया और अपनी सूँड से पास वाले हलवाई की दुकान से लड्डू उठा लिया। दादा गुरु ने अपना पात्र आगे किया और हाथी ने पात्र में लड्डू बोहरा दिया। बाद में श्री दादा गुरु ने पारणा किया।

श्री दादा गुरु ने नवकार मंत्र के ध्यान से सर्व सिद्धियों को प्राप्त किया।

नवकार केरा मन्त्रथी ए सर्व सिद्धि पामीया ।
नवकार केरा मन्त्रथी ए आत्मरसमां जामीया ।।
नवकार केरा मन्त्रथी ए वीर थईने म्हालीया ।
नवकार केरा मन्त्रथी ए परम पदने पामीया ।।

आपने अपनी मृत्यु का समय भी एक माह पहले भक्तों को बतला दिया था । यह भी बताया कि जिस स्थान पर मृतदेह का संस्कार करो वहाँ पालकी के चारों ओर नीम के चार सूखे खूंटे लगा देना । अग्नि स्वतः ही प्रज्वलित हो जायेगी । नीम के जो चार खूंटे गाड़ोगे वे भविष्य में नीम के चार वृक्ष होंगे। मेरी मृत्यु के बाद भविष्य में जब कोई महान् आदर्श व्यक्ति प्रकट होगा तब एक नीम का वृक्ष अदृश्य हो जायेगा।

मुनि श्री धर्मविजयजी के बताये अनुसार विक्रम संवत १९४८ के श्रावण वदी ६ के दिन आपने नश्वर देह का त्याग किया । हजारों लोग बिना किसी जाति भेदभाव के आपश्री की पालकी अग्नि संस्कार के लिए जंगल में ले गये । चार नीम के खूंटे गाड़कर बीच में गुरुजी की पालकी रखी गयी । पालकी के आस -पास चन्दन की लकड़ियां चुनी गई । इन्द्र महाराज ने उस समय इतनी अधिक वर्षा (श्रावण मास में) की कि जल का कोई पार नहीं रहा । आग स्वतः आपश्री के दाहिने पैर के अंगूठे से प्रकट हुई । शरीर के ऊपर के उपकरण, ध्वजा और जमीन में गाड़े हुए चार नीम के खूंटे वगैरह अखण्ड बने रहे, केवल शरीर ही जलकर भस्म हुआ।

नीम के चारों सूखे खूंटे भविष्य में चार नीम के वृक्ष हुए । मांडोली में दाह संस्कार वाली जगह पर गुरु श्री की देवली बनाकर गुरु श्री की चरण पादुका स्थापित की गई है । इस स्थान पर मांडोली में प्रतिवर्ष मेला भरता है । श्री धर्मविजयजी की समाधि स्थल के चारों ओर प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार चार वृक्ष थे। एक वृक्ष श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी को सम्पूर्ण आत्मज्ञान प्राप्त होने पर अदृश्य हो गया । यह वृक्ष कब अदृश्य हुआ इसका किसी को ज्ञान नहीं है। नीम के शेष तीन वृक्ष गुरु मन्दिर, मांडोलीनगर में आज भी स्थित हैं। ऐतिहासिक नीमों के बीच दादा गुरुजी की भव्य देवली शोभायमान है । भारत की रत्नगर्भा धरा में अनेक रत्न छिपे हैं, जो समय-समय पर देशहित और समाजहित में आध्यात्मिक एवं नैतिकता को विकसित करने के लिए उजागर होते हैं । दादा गुरुदेव का भी इस महान धरा मांडोलीनगर में आविर्भाव हुआ जिसके देदीप्यमान प्रकाश से मांडोली की वसुन्धरा ज्ञान किरणों से जगमगा उठी और आज तक ज्ञान रश्मियाँ विश्व में फैल रही हैं।

पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

# श्री तीर्थविजयजी महाराज

| | | |
|---|---|---|
| जन्म स्थान | : | मणादर |
| जाति | : | अहीर |
| दीक्षा | : | मांडोली |
| गुरू | : | श्री धर्मविजयजी |
| सांसारिक नाम | : | भगतोजी |
| निर्वाण स्थल | : | मुड़तरा (जालोर) |
| निर्वाण दिन | : | फाल्गुन शुक्ला 8, वि.सं. 1984 (दि.: 28–2–1928) |

श्री धर्मविजयजी महाराज के शिष्य महान् तपस्वी महात्मा श्री तीर्थविजयजी हुए। आप श्री भी जाति के अहीर थे। इस जाति का भूतकाल का इतिहास समुज्जवल एवं स्फूर्तिप्रद है। भारत की सर्वस्य रूपा गौजाति की रक्षक होने के नाते यह जाति भारत की रक्षा करने वाली कही जा सकती हैं। समय समय पर प्राणों की बाजी लगा कर इस जाति ने गौ वंश की रक्षा की है। उसके लिए भारत का बच्चा-बच्चा इस जाति का कृतज्ञ रहा है और रहेगा। वास्तव में ये लोग क्षत्रिय हैं। प्राचीन समय में क्षत्रिय लोग गौ वंश की रक्षा करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते थे। महर्षि वशिष्ठ, अयोध्या नरेश दिलीप और वासुदेव श्री कृष्ण तो अपनी गो-सेवा के लिए प्रसिद्ध हैं। क्षत्रियों के स्वाभाविक गुण आज भी इस जाति में पाये जाते हैं। ब्रह्मचर्य पालना, लाल वस्त्र धारण करना, दंड रखना, आदि क्षत्रियों के लिए मनु महाराज की कही गई बातें इनके रहन-सहन और आचार विचार में आज भी पाई जाती हैं।

श्री तीर्थविजयजी महाराज का जन्म-स्थान मणादर गांव था। आपने अपना सारा जीवन तपश्चर्या में पूर्ण किया। श्री तीर्थविजयजी का सांसारिक नाम भगतोजी था। वे महान् योगीराज श्री शान्तिसूरीश्वरजी के सांसारिक काका थे। वे बाल्यकाल से ही प्रभु भजन में लीन रहते थे। पशुपालन व्यवसाय के अन्तर्गत आप गाय-भैंसों को जंगल में छोड़कर ध्यान में मस्त हो जाते थे।

भगतोजी का विवाह चाँदना गांव में हुआ था। वे वहाँ गाय-भैंसों को एक दिन चराने के लिए स्वयं ले गए। अचानक एक गाय दलदल में फँस गई। उसे वहीं छोड़कर के अन्य गायों के साथ घर आ गए। जब सास-ससुर को उस गाय के बारे में जानकारी हुई तो उन्होंने भगतोजी से उसी समय गाय लाने को कहा जिससे कि कोई हिंसक पशु उसे मार न डाले। भगतोजी उसी समय जंगल में चले गए। जाते जाते रात्रि हो गई। भयानक रात्रि में उन्हें डर लग रहा था। हिंसक प्राणियों की चारों ओर से आवाजें आ रही थी। वे उस स्थान पर पहुंच गए जहाँ पर गाय फँस गई थी। बहुत रात्रि बीत जाने पर भी गाय दलदल से बाहर आ न सकी। आस-पास में कोई भी घर नहीं था। गाय की रक्षा हेतु वे पास में झाड़ी के समीप रात भर बैठे रहे। झाड़ी में बैठे बैठे वे प्रभु का स्मरण करने लगे।

प्रभु-स्मरण करते करते भगतोजी को एक भव्य प्रकाश का आभास हुआ, मानो सूर्य उदय हो गया हो। दिव्य प्रकाश में उन्हें श्री धर्मविजयजी महाराज के दर्शन हुए। श्री धर्मविजयजी महाराज भगतोजी के समीप आये और कहा कि मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ? ऐसा दृश्य देखकर भगतोजी अचम्भित रह गये। मन ही मन सोचने लगे कि मेरी लाज बचाने प्रभुवर स्वयं ही हाजिर हुए हैं। दोनों ने मिल कर गाय को खिंचा और गाय तत्क्षण निकल गई। इस प्रकार कष्ट की घड़ियां समाप्त हुई। भगतोजी के हर्ष का पार नहीं था। श्री धर्मविजयजी ने भगतोजी से मांडोली आने के लिए कहा।

भगतोजी गाय को लेकर घर आ गए और सास-ससुर को गाय सौंप दी। रात्रि की घटना से भी उन्हें अवगत करा दिया। उनके मन में वैराग्य भावना जागृत हो गई। उन्होंने मांडोली जाने की इच्छा व्यक्त की अंत में अपनी पत्नी को चुनड़ी ओढ़ाकर बहिन बना लिया तथा घर-बार त्याग कर चान्दना से मांडोली आ गये। मांडोली आकर उन्होंने श्री धर्मविजयजी महाराज को शीश नमाया। वे धर्मविजयजी के पास रहने लगे और उनके द्वारा बताये हुए कार्य करने लगे। गुरुदेव की आज्ञा में रहते हुए कुछ समय पश्चात् भगतोजी ने दीक्षा लेने की इच्छा जाहिर की।

श्री धर्मविजयजी ने भगतोजी को दीक्षा देकर तीर्थविजय नाम से सुशोभित किया। दीक्षा के पश्चात् वे एकान्त में ध्यान व प्रभु भजन करते थे। साधना के कठोर मार्ग पर वे दिन प्रतिदिन अग्रसर होते रहे। योग्य गुरु के योग्य शिष्य ने अपनी प्रतिभा का पूर्ण परिचय दिया। विभिन्न जंगलों-वनों में फिरते फिरते तप-साधना के बल से उन्होंने सिद्धि पाई।

एक समय श्री तीर्थविजयजी मणादर गांव पधारे और अपने भतीजे सगतोजी को अपने साथ रामसीन गांव ले आए। उस समय सगतोजी की उम्र सिर्फ आठ वर्ष की थी। पूर्व के प्रबल संयोग से सगतोजी को महान् तपस्वी श्री तीर्थविजयजी का संसर्ग प्राप्त हुआ। सगतो जी की आध्यात्मिक रूचि देखकर श्री तीर्थविजयजी अति प्रभावित हुए। आठ वर्ष तक सगतोजी ने श्री तीर्थविजयजी के पास रहकर विद्याभ्यास, तप और ध्यान किया। साधुओं के आचार विचार जाने, प्रतिक्रमण आदि क्रियाएं सीखी और आध्यात्मिक साधना की ओर अग्रसर हो गये।

श्री तीर्थविजयजी ने अपना अन्तिम समय मुड़तरा गांव में व्यतीत किया। संवत 1984 की फाल्गुन सुदी 8 (दिनांक 28-2-1928) के दिन आपका निर्वाण मुड़तरा गांव में हुआ। आपने अपने जीवन में ज्ञान और क्रिया द्वारा साधुता का महान् आदर्श उपस्थिति किया। वे महापुरुष उस युग में अपनी उपमा स्वयं थे। उनका जीवन एक सच्चे महात्मा का जीवन था। वहाँ न छल था, न कपट था; न माया थी न किसी प्रकार का दुराव छिपाव था। उनमें ज्ञान था पर ज्ञान का अहंकार न था, त्याग था पर त्याग का दर्प न था।

पृष्ठ प्रदत्त नेमीचन्द - मानमल वैद, फलोदी - हैदराबाद

ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरुदेव
जय गुरु जय गुरु जय गुरुदेव ।।

श्री गुरुदेव भगवान के चरण है - जो परम गुरु भक्त श्री हीरा भाई हींग वाले मद्रास से प्राप्त हुवें - हम सब गुरु भक्त उनके आभारी है जिनकी वजह से, श्री गुरुदेव भगवान के असल चरणों के दर्शन सम्भव हो सके।

पृष्ठ प्रदत्त सुनील - मंजू मेहता, जोधपुर

पृष्ठ प्रदत्त श्रीमती लक्ष्मी - कनकमल कटारिया, उदयपुर

पृष्ठ प्रदत्त

प्रीति सिंघवी, जोधपुर

विश्व विभूति
महान् योगीराज
हिज होलीनेस
पूर्ण योगेश्वर
जगत्गुरु
सूरि सम्राट
योगीन्द्र चूडामणि
राज राजेश्वर
युग प्रधान
नेपाल राजगुरु

# श्री श्री श्री १००८
# श्री विजय शांति सूरीश्वरजी महाराज

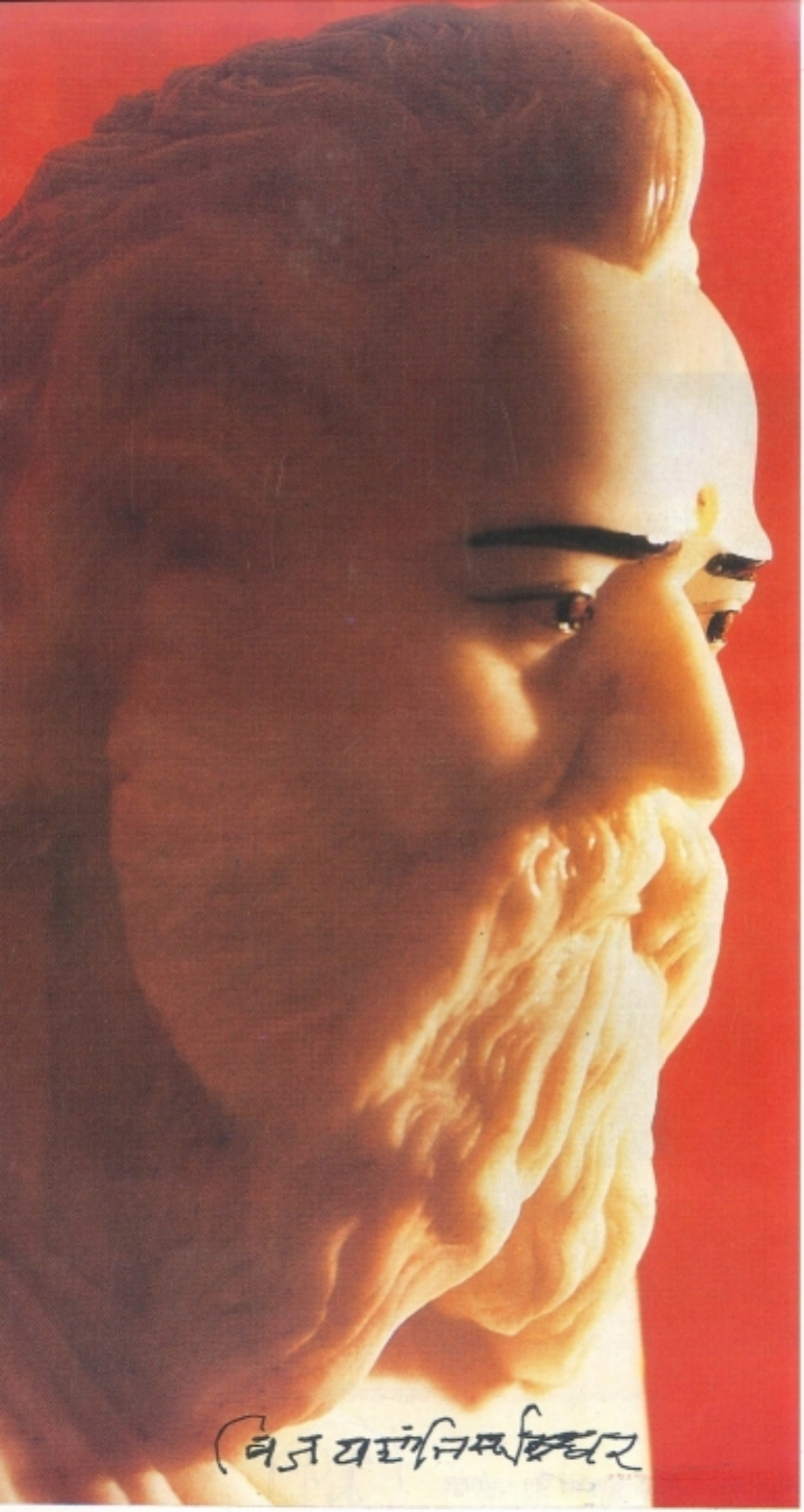

| | | |
|---|---|---|
| जन्म तिथि | : | माघ सुदी 5 (वसंत पंचमी)<br>वि. सं. : 1946<br>दिनांक : 25–1–1890 |
| जन्म स्थान | : | मणादर |
| जाति | : | अहीर |
| सांसारिक नाम | : | सगतोजी |
| दीक्षा | : | रामसीन |
| गुरू | : | श्री तीर्थविजयजी |
| निर्वाण स्थल | : | अचलगढ़ (आबू) |
| निर्वाण दिवस | : | आसोज वद 10<br>वि.सं. 2000<br>(दिनांक : 23–9–1943)<br>रात्रि 3.25 |

अन्तिम संस्कार स्थल : माण्डोली नगर

गुरूदेव भगवान के निम्न हस्ताक्षर श्रीमती दीपकंवर प्रकाशमल लोढ़ा, नागौर वालों के सौजन्य से प्राप्त हुए। सब गुरु भक्त उनके आभारी हैं।

आज भी उपरोक्त हस्ताक्षर जो एक पत्र पर हैं, संग्रहालय में दर्शनार्थ रखे हुए है।

विश्व की महानतम विभूति, अनेक सिद्धियों के स्वामी, परमाराध्य, प्रातः स्मरणीय, युगप्रधान, परम पूज्य, परम ज्ञानी, विश्व वन्दनीय, आचार्य सम्राट, महान् योगीराज, जगतगुरु श्री श्री १००८ श्री विजय शान्तिसूरीश्वर महाराज का जन्म राजस्थान के मरु प्रदेश में प्राचीन सिरोही राज्य के मणादर ग्राम में हुआ।

जन्म स्थल - मणादर

यह स्थल सुरम्य उपवनों की प्राकृतिक छटा और सुषमा के लिए इतिहास प्रसिद्ध है। अरावली पहाड़ियों का अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य जहाँ चारों ओर अपनी छटा बिखेरता है। वहीं स्वल्प जन - संख्या वाला ग्राम, प्राचीन भारत की स्मृति को ताजा कर देता है। इस पवित्र भूमि का कण-कण पवित्र व

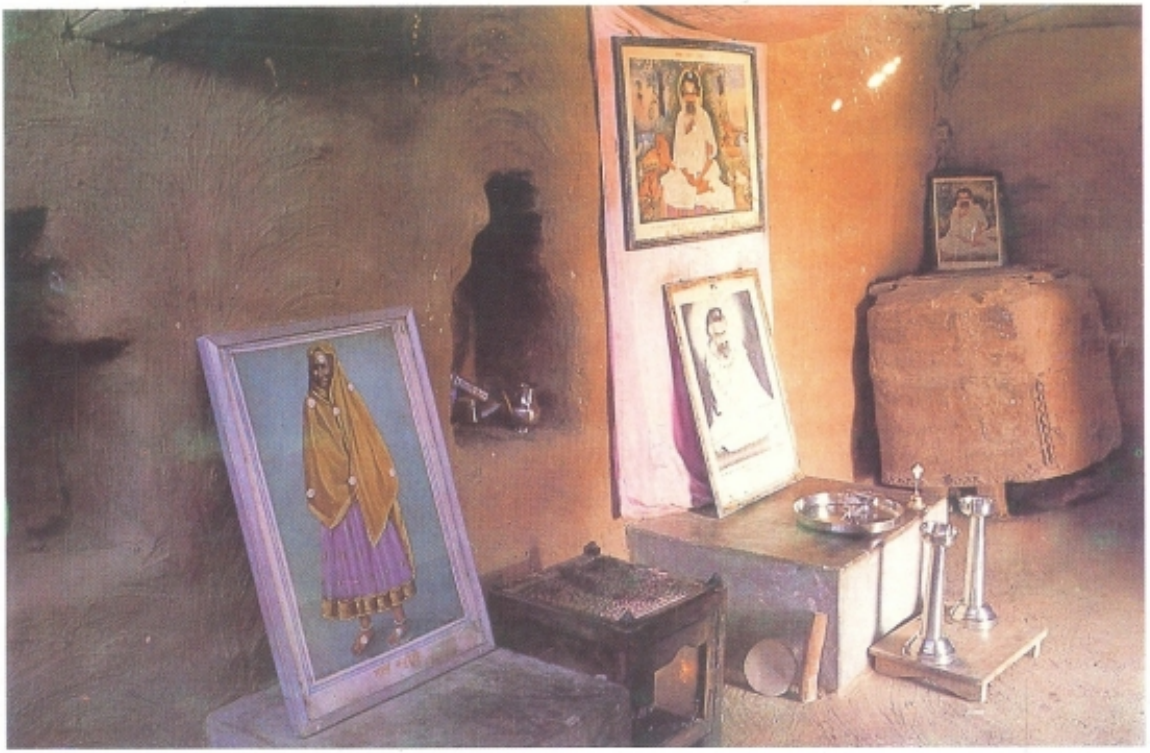

गुरुदेव भगवान की मातुश्री
माता बसुदेवी

कोई पार नहीं था। आपके जन्म से परिवार में बड़ी प्रसन्नता हुई। जैसे पूनम का चांद अपने उदय से पूर्व ही क्षितिज को निर्मल, शीतल और आकर्षक बना देता है, वैसे ही आपके जन्म ने समस्त परिवार की शोभा, समृद्धि और प्रतिष्ठा में निखार का पूर्वाभास ला दिया। इस पवित्र भूमि का कण-कण पवित्र व वन्दनीय है। आज भी यहाँ का शांत व शीतल वातावरण मानव के हृदय में भक्ति का स्त्रोत बहाता है। यहाँ पहुचते ही मनुष्य सारा सांसारिक व व्यावहारिक वातावरण भूलकर गुरु भक्ति में लीन हो जाता है।

बालक जन्म से स्वस्थ, हँसमुख और सुंदर था। मुख मण्डल की शोभा पूर्ण चन्द्र सी आह्लादकारी और हृदय-हारी थी। वसन्त पंचमी जैसी पुण्य तिथि में जन्म होने और जननी-जनक के हृदयाम्बर पर नवोदित चन्द्र की तरह शोभायमान होने के कारण बालक का नाम भी सगतो जी रखा गया। नामकरण की उस घड़ी में किसको पता था की यही सगतो जी आगे चलकर जन-गण-मन-गगन का वास्तव में सौभाग्य बन जाएगा। भक्तजनों का चित्त-चकोर सदा जिसके पावन दर्शन के लिए आकुल-व्याकुल बना रहेगा। जिसकी उपदेश-कौमुदी, भक्त-जगत के अंतस्थल को आलोकित करेगी और अज्ञान-तिमिर को दूर करनें में सर्वथा सफल और सबल सिद्ध होगी।

माता-पिता के असीम स्नेह-रस से पोषित शिशु सगतोजी शुक्ल पक्ष के चन्द्र की तरह प्रत्यक्ष विकसित होने लगा। इधर माता-पिता भी प्रफुल्ल-वदन शिशु को देख-देख विविध आशाओं और मनोरथों से अपने कल्पना उद्यान को सजाने लगे। परिवार भर का हर्ष - पारावार आशा-आकांक्षा के ज्वार से नित्य प्रति लहराने लगा। जन्म से ही आपके चन्द्रमुख, भव्य ललाट व स्निग्ध नेत्रों से प्रेम करुणा व दया की सरिता सी झरती दिखाई देती थी।

**स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रानु,**
**नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।**
**सर्वा दिशो दधति भानि सहस्रशिम,**
**प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥**
**- - - महाश्रमण मानतुंगाचार्य**

हे भगवान इस संसार में बहुत सी माताओं ने सैकड़ों पुत्रों को जन्म दिया। सारी दिशाऐं किरणों को धारण करती हैं किन्तु अनन्त किरणों के धारक सूर्य तो केवल पूर्व दिशा में ही उदय होता है।

संसार में उसी का उत्पन्न होना सफल और सार्थक है, जिसकी उत्पत्ति व वंश की समुन्नति हो। क्षण भंगुर और चंचल जीवन में किसी-किसी की जीवनलीला बरबस मनको मोहती रहती है। उसकी मधुर याद सदियों, सहस्त्राब्दियों तक मानस-पटल पर विद्युत-रेखा की तरह रह-रहकर चमक उठती है। स्मृतियाँ धुंधली बन जाती है मगर मन उन्हें फिर भी भूलना नहीं चाहता। उनके अलौकिक गुण, अदम्य उत्साह, द्रढ लगन, करुणा, परायणता और मानवता के प्रति की हुई सतत सेवा मधुरस्वप्न की तरह साकार रूप धारण कर निद्रावस्था में भी हृदय को एक अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करती है और प्रकाश स्तम्भ की तरह विषयांधकार को चीर कर जनमन को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती है।

बाल्यकाल प्राय : सभी का चंचलता और नटखटपन से भरा होता है। जिज्ञासा की भावना और ज्ञान की वृद्धि प्रबल होती है। मां की मोह भरी गोद और पुलक भरे पालने को छोड़ने के बाद जब शिशु प्रथम बार धरती पर उतरता है, तब से लेकर किशोरावस्था तक वह व्यवहार-वस्तु और शब्द-ज्ञान-कोष का संचय कर लेता है। प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ, लोक व्यवहार की भाषा, अनेक विध पशु पक्षियों के नाम व गुण का परिचय, सगे सम्बन्धियों की पहचान और अक्षर ज्ञान से उच्च ज्ञान तक की सीढ़ी पर चढ़ने का सतत प्रयास वह इसी अवस्था में करता है। हमारे लालसा भरे जीवन की सीढी बाल्यकाल के कृत्यों पर ही अवलम्बित है बचपन में हमारी जैसी इच्छा और भावना होती है, तथा जिस मार्ग का हम अवलम्बन लेते हैं, हमारे जीवन की वही आधार-शिला बन जाती है, जीवन की इमारत इसी नींव पर टिकी रहती है। धन्य है वह माता ! जो तप पूत-सपूतो को जन्म देती है। आपकी माताश्री कार्यनिष्ठा, सौजन्य व मृदुता की प्रतिमूर्ति थी। आपके माता-पिता सरल, सात्विक, धर्मप्रिय और शान्त विचारों वाले थे। बचपन में ही आपको धर्म में अगाढ़ निष्ठा रखने वाले माता-पिता का वरद हस्त प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप शैशवकाल में ही आपके हृदय में आध्यात्मिक साधना के प्रति गहन रुचि का पुण्योदय हुआ। आपके पिताश्री का मुख्य व्यवसाय पशु-पालन था। सगतो जी भी अपने पिता के संग जंगल में पशु चराने जाया करते थे और प्रकृति की गोद में खेला करते थे। पशु चराने जाते तब सभी पशुओं का ध्यान रखते। पशुओं के प्रति, प्रेम और करुणा-भाव ने शनै : शनै : स्वकल्याण और लोककल्याण की भावना को जगाया। बचपन से ही उनमें उत्तम और विलक्षण गुणों का स्फुरण होने लगा। बचपन से धार्मिक

संस्कार और धर्म के प्रति जागरुकता के विचार संभवतःपूर्व जन्म के संस्कार स्वरुप ही प्राप्त हुए थे ।

मनोयोग पूर्वक ही कोई काम सफल और सिद्ध होता है । जिस काममें आपका मन न लगे, लाख कोशिश करने पर भी उसमें कामयाबी नहीं मिल सकती । प्रवृत्ति, निवृत्ति, त्याग - ग्रहण, राग और विरागादि समस्त द्वन्द्वों का निर्णायक मन ही होता है। इसी की प्रेरणा से हमारी प्रवृत्ति संसार में होती है ।

**मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो :**
(मन ही बन्धन और मोक्ष का हेतु है)

बचपन से ही उनमें विलक्षण सूझ का उदय हो गया था । जिस मनुष्य के हृदय में लक्ष्य पाने की तीव्र अभिलाषा होती है, उसे कभी न कभी उसकी पूर्ति का मार्ग अवश्य मिल जाता है । जिस मनुष्य के भीतर शुभ आकांक्षाओं का बीज रोपन होता है, वह एक दिन अंकुरित होकर विशाल वृक्ष का रुप धारण कर लेता है । पूज्य गुरुदेव में आध्यात्मिक प्रगति की अभिलाषा जगी और उन्हें योग्य गुरु भी सहज ही मिल गए ।

**आध्यात्मिक साधना का दिशा बोध :–**

एक बार सगतो जी जंगल में गायें चराने गए हुए थे । जंगल में एक गाय बैठ गईऔर पुनः उठ ही नहीं पा रही थी । सगतोजी ने सभी प्रयास किए पर विफल रहे । संयोगवश महान संत श्री तीर्थविजयजी का वहां आगमन हुआ । सगतोजी को चिन्तित और उदास देखकर मुनि तीर्थविजयजी ने अपने ज्ञान के बल से, कारण का एहसास किया। सगतोजी की विलक्षण प्रतिभा को देखकर उन्हें सच्चा दिशा निर्देश देने का भाव जागृत हुआ । मुनिराज ने सगतोजी के सन्मुख एक प्रश्न किया कि यदि गाय उठ जाये तो तूं मेरे संग आयेगा ? सगतोजी ने तत्क्षण हाँ भरी और गुरुवर ने गाय को उठा दिया । यही प्रसंग श्री गुरुदेव के आध्यात्मिक साधना की ओर प्रवृत्त होने का कारण बन गया । पूर्वोपार्जित पुन्य-योग से केवल आठ वर्ष की

बाल्यकाल का रांगोली द्वारा एक काल्पनिक दृश्य

अल्प आयु में आपको महान तपस्वी श्री तीर्थविजयजी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। तत्पश्चात माता-पिता की आज्ञा प्राप्त कर गुरु तीर्थविजयजी की सेवा में रहने लगे। आपके गुरु, बाल्यावस्था में आपकी विलक्षण बुद्धि, ज्ञान, प्रतिभा और आध्यात्मिक जाग्रति की सच्ची पिपासा देखकार अत्यन्त ही प्रभावित हुए। दीक्षा से पूर्व आपके मन की दृढता और संकल्प शक्ति की परीक्षा ली गई जिस में वे खरे उतरे।

**दीक्षा**

राजस्थान के पश्चिमांचल जालोर जिले के रामसीन गांव में सगतोजी की दीक्षा हुई। दीक्षा से पूर्व बड़ी धूमधाम के साथ तैयारी की गई। रामसीन में दस दिन पूर्व से ही उत्सव रचे जाने लगे। स्वामिवात्सल्य एवं पूजोत्सव का ठाठ ही निराला था। जिनालय देव - विमान के समान दीखने लगे। माघ सुदी पंचमी को सुप्रभात में रामसीन गांव में मंगल बाजे बजने लगे। रामसीन गाँव की सजावट अद्वितीय थी। द्वारों से रामसीन गाँव को अलंकृत किया गया था। जगह-जगह इन्द्र धनुषी पताकाएँ फहरा रही थी और तोरण जैसे किसी महापुरुष के स्वागत की प्रतीक्षा कर रहे थे। मार्ग स्वच्छ किये जाने लगे। गृह-द्वारों की साज सज्जा होने लगी। जिनालय का रंग रुप निखर उठा। भक्तिगीतों की स्वर लहरियों से गगन मंडल गूंज उठा। समीप और दूर के लोग इस अवसर पर पधारे थे। शोभा-यात्रा भव्य बन गई। जयघोष की मंगल-ध्वनि से गगन गूंज उठा। ऐसा लगता था कि आनन्दोल्लास साकार रुप धारण कर रामसीन की पावन भूमि पर उतर आया हो।

समारोह का प्रमुख आकर्षण था वैरागी सगतो जी मुमुक्षा, जिन के मुख मण्डल की अलौकिकता को निहार कर उपस्थित जन समुदाय प्रफुल्लित हो रहा था। सभी नगरवासियों का उत्साह अद्वितीय था। ज्यों-ज्यों दीक्षा की मंगल-बेला निकट आने लगी, सगतोजी का उत्साह दूज के चन्द्र के समान बढ़ने लगा। पूज्य गुरुदेव तीर्थविजयजी के कर कमलों से दीक्षा कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ।

दीक्षा के पश्चात वैरागी सगतोजी का नाम मुनि श्रीशान्तिविजय रखा गया। अपने दीक्षा के पावन प्रसंग पर बोलते हुए मुनि श्री ने कहा था - "आज मैं मन, वचन और काया से सावध कर्मों का परित्याग कर पंच महाव्रतधारी साधुत्व का पथ स्वीकार रहा हूं जिस पथ पर चल कर अनेकानेक आत्माओं ने परमपद को प्राप्त किया है। वह दिन मेरे लिए धन्य होगा, जब मैं मन-वचन और काया से सम्पूर्ण मानव जाति और ८४ लाख जीवों के कल्याण के लिए अपने आप को समर्पित कर दूंगा।"

"मैं सद्ये हृदय से स्वीकार करता हूं कि मानव-जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि आत्मदर्शन है। आत्मा को विशाल साम्राज्य और उसके विशाल रुप के दर्शन के लिए अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के महाव्रतों को स्वीकार कर उसका सतत् पालन ही मेरा ध्येय है। मैं वीतराग प्रभु महावीर के पथ का अनुगामी हूं। मैं आजीवन संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करूंगा।"

सभी ने करतल ध्वनि से उनके उज्ज्वल भविष्य और संयमपूर्ण जीवन की सफलता की मंगल कामनाकी। पूज्य गुरुदेव को वह धन मिला जिसको पा कर किसी वैभवकी जरूरत नहीं रहती, वह चाबी मिली जिससे अनन्त सुख के ऊपर लगा हुआ कर्मताला खुल जाता है, वह साधन मिला, जिससे जीवन के अनन्त अशान्त वातावरण शान्त हो जाते हैं, वह तरणी मिली, जिस से जीव, भवसागर से पार हो जाताहै। जिस दिन आपने संयम लिया उस दिन आपको अत्यन्त रोमांचित प्रसन्नता हुई। आनन्द की ऊर्मियों

दीक्षा स्थल - रामसीन

पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई धर्मपत्नि चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

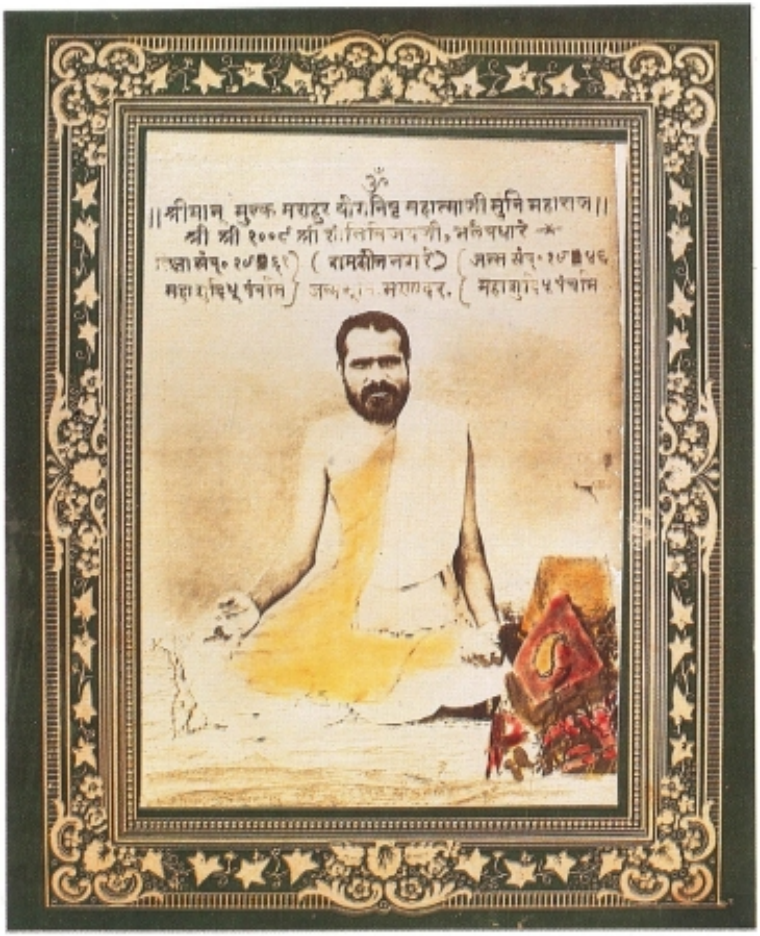


दीक्षा के पश्चात अपने दादागुरू की समाधि के दर्शनार्थ रामसीन से माण्डोली पहुंचे ' दादागुरु के समाधि-स्थल के दर्शन कर आप पुनः रामसीन पधारे । रामसीन में श्रीमान नोपाजी डाह्याजी ने एक बड़ा आलीशान मकान बनवाया था परन्तु उस मकान में प्रेत का वास होने से किसी की भी रहने की हिम्मत नहीं होती थी । गुरुदेव के प्रभाव से वह व्यंतर भाग गया और सभी लोग उसमें आराम से रहने लगे । गुरुदेव भगवान ने इस मकान में तीन दिन रह कर घोर साधना की।

← गुरुदेव की युवावस्था का दुर्लभ चित्र

नोपाजी का मकान ↓

से समस्त शरीर रोमांचित हुआ। अतिशय आनन्द भाव में मनुष्य प्रायः मौन रहता है, परन्तु अन्तर्वाणी मुखरित होती है ।

रामसीन नगरी के लिये यह मंगल प्रसंग दीवाली पर्व से कम महत्व का नहीं था । यह वह नगरी है जो महान योगीराज श्री विजयशान्ति सूरीश्वरजी महाराज के चरण कमलों की रज से पवित्र हुई है ।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात, मुनिश्री शान्तिविजयजी को कल्पना का अद्‌भूत संसार मिला । ऐसा प्रतीत होता था मानो विशाल मरु-भूमि में अमृत की भागीरथी स्वरूप सन्यासी चल पड़ा । अब मुनिश्री साधु वर्ग में सम्मिलित हो गये । उनके आगमन से ऐसा लगा जैसे सन्त-समाज रुपी उपवन में अभिनव वसन्त का आगमन हो गया हो। तेजोमय आभा से दमकता हुआ मुख मण्डल, उन्नत ललाट, हाथ में श्वेत मुंहपत्ति और कन्धे पर रजोहरण, शरीर पर धवल वस्त्र, यही था उनका साधु वेश ।

**साधना के पथ पर**

साधना से ही सिद्धि का द्वार खुलता है । अपने साधना काल में पूज्य गुरुदेव मौन आत्म मन्थन में तल्लीन रहे । कभी पहाड़ों की चोटियों पर, कभी एकान्त गुफाओं में, कभी शून्यागारों में तो कभी नदी-किनारों पर ध्यानावस्थित रहते । खान-पान पर अदभुत संयम, प्रमाद पर कठोर नियन्त्रण, अप्रमत्त भाव से सतत आत्मालोचन में तन्मय रहे । कड़कड़ाती सर्दी को सहन कर आत्म साधना

की मस्ती में झूमते रहते थे । ज्येष्ठ की तपतपाती हुई दुपहरियों में भी तब जबकि जमीन-आसमान जलते रहते थे - खुले मैदानों में वे ध्यानस्थ आत्म मंथन में निमग्न रहते थे । दिन को भी रात में बदल देने वाली काली-अन्धियारी घटाओं के घुमड़ने पर भी - जिनकी गर्जनाओ से वन का कोनाकोना काँप उठता था उन गिरती हुई वर्षाकालीन जल धाराओं के बीच भी निष्कम्प भाव से वृक्षों के झुरमुट में गुरुदेव आत्मज्योति का महाप्रकाश अवलोकन करते रहते थे । साधना पथ पर आगे बढ़ते हुए पूज्य गुरुदेव को कठिनाइयों की अनेक पर्वतमालाओं को पार करना पड़ा । जीवन के उन नितान्त एकान्त क्षणों में वे एक सहज आत्म-रमण का अपूर्व आनन्द लूट रहे थे ।

**ध्यान साधना**

ध्यान से कर्मों की निर्जरा होकर आत्मज्ञान प्राप्त होता है । जिस प्रकार श्री जिनदत्त सूरी ने ॐकार का ध्यान, श्री हेमचन्द्राचार्यने अर्हम् पद का ध्यान, श्री जिनकुशल सूरी ने ह्रीं का ध्यान विशेषतया किया था, उसी प्रकार गुरुदेव ने "**ॐ ह्रीं अर्हं नमः**" का ध्यान मुख्य रूप से किया । इसके साथ ही कई बीजाक्षरों को सिद्ध करके व सोऽहं तथा पिडंस्थ आदि ध्यान द्वारा उन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त किया । ध्यानस्थ दशा में आपको अपने दादागुरु श्री धर्मविजयजी की अपूर्व कृपा सहज ही प्राप्त होती थी ।

**मार्कण्डेश्वर आश्रम व सरस्वती मन्दिर में ध्यानः**

कुछ समय गुरुदेवने मार्कण्ड ऋषि के आश्रम के पास आए हुए सरस्वती देवी के मन्दिर में ध्यान किया था । यह मन्दिर सिरोही रोड स्टेशन से ५ किलोमीटर की दूरी पर अजारी ग्राम से २ किलोमीटर की दूरी पर है । यह स्थान पहाड़ों के बीच में निर्जन घनघोर वन में है । यह वन असंख्य खजूरों के वृक्षों से आच्छादित शान्त वातावरण से भरपूर है ।यह सरस्वती मन्दिर अति प्राचीन है । इस पवित्र स्थान पर पूर्व में वशिष्ठ ऋषि, विश्वामित्र, पण्डित कालिदास, श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरी, श्री अभयदेव सूरि, श्री बप्पभट्टसूरी, कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य, श्री वादी देवसूरीश्वर महाराज, श्री मानतुंगसूरि महाराज एवं श्रीमान देवसूरी महाराज, आदि कई महापुरुषों ने ध्यान किया बताते हैं । गुरुदेव ने भी इसी स्थान पर दिनरात सतत् मौनपूर्वक महीनों पर्यन्त ध्यान किया । सरस्वती देवी आपके ध्यान से प्रसन्न हुई और आपको प्रत्यक्ष दर्शन देकर वरदान दिया। आपके पूर्वजन्म के संस्कारों से आप में सहज ही आत्मज्ञान का प्रकाश फलित हो गया । मार्कण्डेश्वर आश्रम से गुरुदेव भगवान विचरण करते हुए आबू पधारे । वि.सं. १९७५-७९ में गुरुदेव ने मार्कंड आश्रम के सरस्वती मन्दिर की गुफा तथा आसपास के अन्य स्थानों में पांच वर्ष तक मौन अवस्था में कठोर तपस्या एवंम ध्यान किया ।माँ सरस्वती से आत्म साक्षात्कार होने पर आपको समस्त ज्ञान स्वतःही प्राप्त हो गया और आप अनेक भाषाओं के ज्ञाता बन गये । भविष्य और वर्तमान के पूर्व ज्ञान से किसी के मनोभावों को आप सहज ही पहचान लेते थे । ध्यान बल से आपको कई सिद्धियां प्राप्त हो गई थी । इस समय आपकी सेवा में किंवरली गांव के पं. लक्ष्मी शंकरजी रहते थे । उन्हें गुरुदेव की सेवा में रहने के फलस्वरूप गुरुकृपा से संस्कृत का विपुल ज्ञान सहज ही हो गया । उन्हें सिर्फ आठ दिनों में ही गीता व अन्य शास्त्रों के हजारों श्लोक कंठस्थ हो गये ।

पं. लक्ष्मी शंकरजी ने बताया कि गुरुदेव सरस्वती देवी की मूर्ति से वार्तालाप किया करते थे । देवी सरस्वती धूप दानी से प्रकट होती देखी गई तथा संभाषण में सूत्र उच्चारण करती थी ।

गुरुदेव को विभिन्न भाषाओं का सम्पूर्ण ज्ञान स्वतः ही हो गया था.। एक बार एक जर्मन कलाकार सपलिक गुरुदेव से मिलने आए। वे आपस में जर्मन भाषा में बातचीत कर रहे थे कि योगीराज ने उनको बीच में ही टोक

# ॐ ह्रीं अर्हम् नमः



पृष्ठ प्रदत्त मिसरीमल गोत्तमचन्द गुगलिया, सिकन्दराबाद

कर उनकी बातों का यथोचित् उत्तर दे दिया जिससे जर्मन दम्पति आश्चर्यचकित रह गये।

न्यूयार्क के ट्रिब्यूनल हैराल्ड की लेखिका कुमारी माईकल पीम की यह धारणा थी कि गुरुदेव वास्तव में ईश्वर के अवतार हैं।

पैरिस के पी. मार्क्स राइविरे ने कहा था कि गुरु शान्तिविजयजी के दर्शन करने से मुझे अलौकिक शान्ति प्राप्त हुई।

इस प्रकार गुरुदेव के सम्पर्क में अनेकों विदेशी आये जो गुरुदेव से अत्यन्त प्रभवित हुए।

वि.सं. १९९० में बामनवाड़ से केसरियाजी तीर्थ की ओर जाते समय भी गुरुदेव सरस्वती आश्रम गये थे एवं १९९२ में बामनवाड़ के चातुर्मास पश्चात भी गुरुदेव मार्कंड आश्रम व सरस्वती मंदिर पधारे थे।

योगीराजजी के उपदेश से ग्राम्य जनता प्रभावित होती थी। एक बार "मारकण्डेश्वर" के मेले पर आपको आमंत्रित किया गया। वहां हरिजन मंडल व कई जातियों के लोग भी एकत्र हुए । आपने जन समूह को शराब नहीं पीने, मांस नहीं खाने, पानी छान कर पीने आदि बातों का उपदेश दिया, जिसके फलस्वरुप वहां आये हुए, लुहार, गांछी, मीने, यादव, महतर, बलाई आदि जाति वालों ने गुरुदेव के उपदेशों को स्वीकार कर एक प्रस्ताव पारित किया कि जो इससे विपरीत चलेगा उसे सामाजिक रुप से दंडित किया जायेगा और अनुमान से पचास मील तक के गांवो में इस घोषणा के समाचार भेज दिये। इतना बड़ा काम एक दिन के उपदेश से हो गया। यह गुरुदेव के योग का ही प्रभाव था।

इस प्रकार गुरुदेव भगवान को मार्कण्ड आश्रम बहुत प्रिय था। यहां पर गुरुदेव ने वर्षो तक लगातार रह कर सरस्वती देवी की आराधना की थी । विशेष कर वि.सं. १९७५, १९७८, १९८५, १९८९, १९९०, १९९१ एवं १९९३ में आप कई बार विहार करते यहाँ आते जाते रहे।

मारकण्डेश्वर आश्रम का विहंगम दृश्य

सकल लोक सुसेवितपत्कजा, वर यशोर्जित शारदा कौमुदी ।
निखिल कल्मष नाशन तत्परा, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना, मणिकिरीट सुशोभित मस्तका ।
कनक कुंडल भूषित कर्णिका, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसु हरिद्गज संस्नपितेश्वरी, विधृत सोमकला जगदीश्वरी ।
जलज पत्र समान विलोचना, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा, निहित पुष्कर वृंदल सत्करा ।
समुदितार्क सदृक्तनु बल्लिका, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विधि वांछित कामदुधाद्भुना, विकद् पद्म हृदांतर वासिनी ।
सुमतिसागर वर्धन चन्द्रिका, जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

मारकण्डेश्वर आश्रम

पृष्ठ प्रदत्त सा. मंसालाल लुम्बा जी राठौड़, माण्डोलीनगर-पूना

निषण्णा कमले भव्या,
अब्जहस्ता सरस्वती।
सम्यग्ज्ञानप्रदा भूयाद्,
भव्यानां भक्ति शालिनाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ह्रीं ऐं नमः।

श्री – सरस्वती चरण पादुका ▲

◄ माँ सरस्वती की प्राचीन प्रतिमा

## पालीताणा की तरफ विहार

आबू पर्वत के आस-पास कुछ वर्ष ध्यान में व्यतीत करने के बाद गुरुदेव ने गुजरात और मालवा की तरफ विहार किया। सन् 1910 के लगभग आप पालीताणा पधारे। वहां पर आपकी एक जैन मुनिराज से भेंट हुई। वे आगम और जैन शास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता थे और जैन शैली के मर्मज्ञ थे। उनका साथ गुरुदेव के साथ लम्बे समय पर्यन्त रहा। अन्त में उन मुनिराज ने भी गुरुदेव की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि 'शान्तिविजयजी, आप तो जैन शास्त्रों के मर्म को मेरी अपेक्षा भी अधिक बारीकी से जानते हो। मालूम पड़ता है कि आपमें जन्मजन्मान्तरों से ज्ञान के संस्कार छिपे हुए हैं।

पालीताणा और गिरनार तीर्थ में कुछ समय ध्यान में व्यतीत करने के बाद आपने गुजरात से मालवा की तरफ विचरण किया।

▲ शत्रुंजय तीर्थ - पालीताणा

◄ गिरनार तीर्थ

## धार नगरी में शास्त्रार्थ

मालवा में विहार करते हुए एक समय आप धार नगरी पधारे। वहां आपका आर्य-समाजियों से शास्त्रार्थ हुआ। उस समय धार में वहां की रानी राज्य कार्यभार संभालती थी। उनकी अध्यक्षता में आर्य समाज के पण्डितों से शास्त्रार्थ में गुरुदेव ने थोड़े ही समय में ऐसे तर्क उपस्थित किये, जिससे सभा को गुरुदेव के पक्ष की सत्यता का भान हो गया और रानी साहिबा ने निर्णय दिया कि शास्त्रार्थ में शान्तिविजयजी की जीत हुई है।



पृष्ठ प्रदत्त टीकम - कान्तिलाल जैन, जोधपुर-मुम्बई

*"शत्रुंजय"*

*रागादि शत्रुओं को जय करना उसी का नाम शत्रुंजय है यद्यपि शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा तो अवश्य करना परन्तु आत्मा में रहे हुए राग-द्वेष आदि शत्रुओं पर जय करना यह भी शत्रुंजय है ।*

*"सम्मेतशिखर"*

*समता के शिखर पर बैठ जाना उसी का नाम सम्मेतशिखर है । सम्मेतशिखर की यात्रा तो अवश्य करना परन्तु आत्मा को समता के शिखर पर चढ़ा देना यह भी सम्मेतशिखर है ।*

*"अर्बुदगिरि "*

*अर्बुद नामक सर्प के कारण इस गिरि का नाम अर्बुदगिरि पड़ा है । आत्मा में रहे हुए क्रोध मान माया लोभ आदि कषायरुपी सर्पों का शमन कर ऊपर बैठ जाना उसीका नाम अर्बुदगिरि है यद्यपि अर्बुदाचल की यात्रा तो अवश्य करना परन्तु आत्मा को कषाय रुपी सर्प से मुक्त करना यह भी अर्बुदगिरि है ।*

ईडरगढ़ (गुजरात) तीर्थ पर श्री शान्तिनाथ भगवान के २३०० वर्ष प्राचीन जिनमंदिर के पीछे एक प्राचीन गुफा में भी आपने ध्यान साधना की थी । इसी गुफा में श्रीमद् आनन्दघनजी महाराज, श्रीमद् राजचंद्र, प. पू. पंजाब केसरी कमलसूरिजी, पू. तीर्थेन्द्रसूरिजी तथा सहजानन्दजी (भद्रमुहनजी) महाराज ने आत्म-साधना, ध्यान-साधना, मन्त्र-साधना व तप-साधना की थी । यहाँ से गुरुदेव भगवान विचरण करते हुए फैदाणी (जालोर) पधारे ।

**फैदाणी गाँव में जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा**

मांडोली नगर पधारते समय रास्ते में गुरुदेव फैदाणी गाँव पहुँचे । फैदाणी गाँव रामसीन - जसवन्तपुरा मार्ग पर है । यहाँ उस समय जैनियों के पैतीस घर थे, किन्तु कोई जिनालय वहाँ नहीं था । अत : पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि प्रभु भक्ति के लिए जिन प्रतिमा का होना आवश्यक है । गुरु संदेश का सत्कार कर पंचों ने जिन प्रतिमा स्थापित कराने का निश्चय किया । वि.सं. १९६७-६८ के लगभग प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई । इस अवसर पर मांगलिक लापसी का प्रसाद किया गया । इस शुभ दिन आसपास के गाँवों के सैंकड़ो लोग जिन प्रतिमा तथा गुरु दर्शनार्थ पधारे। इस आयोजन पर बिना पूर्व अनुमान के सैंकड़ों लोंगो के आ जाने से पंचो के मानस में एक चिन्ता छा गई कि अब इनको बिना भोजन कराये तो वापिस भेजना नहीं है ।रसोई बनाने में तो बहुत समय चाहिए । यह बात गुरुदेव के पास भी पहुंची। गुरुदेव ने फरमाया कि तुम बिना किसी चिन्ता के सब को भोजन खिलाओं, यह बनाया हुआ भोजन पर्याप्त है । गुरुदेव के वचनो को सुनकर पंचो में हर्ष की लहर दौड़

उपाश्रय - फैदाणी

गई । बाहर गाँव से आनेवाले मेहमानों को भोजन परोसा गया । उन सब को अच्छी तरह भोजन करवाने के पश्चात भी जब लापसी बच गई तो गाँव के हर एक घर में गुरुप्रसाद वितरित किया गया । इस अपूर्व घटना से सभी लोग चकित रह गये । कालान्तर में मंदिरजी का उथापन करके प्रतिमाएँ, बामनवाड़ भिजवा दी गई । यहां से गुरुदेव ने माण्डोली की तरफ विहार किया जिसकी सूचना गुरु श्री तीर्थ विजयजी को भेज दी गयी । माण्डोली पधारते समय मार्ग में गुरुदेव ने हजारों लोगों को विश्व-कल्याण का दिव्य संदेश दिया ।

माण्डोली पधारकर आपने अपने गुरु श्री तीर्थ विजयजी के दर्शन किये । गुरुदेव दादागुरु की समाधि के दर्शन को भी गये । यहाँ गुरुदेव ध्यानलीन रहने लगे । माण्डोली के आसपास उस समय डाकुओं का भय व्याप्त था । आसपास के गाँवो में दिन दहाडे डाके पडते थे । माण्डोली के जनसमूह में भी भय व्याप्त था । गुरुदेव ने सभी को कहा कि आप लोग निश्चिन्त रहें । माण्डोली में कुछ भी नही होगा । आसपास खूब लूट-पाट हुई परन्तु माण्डोली नगर गुरुदेव के आशीष से इन घटनाओं से अछूता रहा ।

## ऋषिकेश में कठोर तप-साधना

वि.सं. 1967 (सन् 1910 ) तक करीब 12-13 वर्ष के बीच में आपने सात वर्ष तक ऋषिकेश (आबूरोड़ से 7-8 कि.मी., गांव मानपुर के समीप) रहकर मौन साधना की थी। यहाँ के महंत स्वामी छगनदासजी से गुरुदेव का अच्छा सम्पर्क था। गुरुदेव ऋषिकेश में बड़ी विकट गुफा में ध्यान मग्न रहते थे। यहीं पर खोड गाँव के ब्राह्मण भभूताजी ने गुरुदेव की सेवा की थी। वे बताते थे कि गुरुदेव भगवान ने सांपो के बिलों पर बैठकर निरन्तर छः मास तक घोर साधना की। उन दिनों सिर्फ एक बार उड़द के बाकुलों का आहार लेते थे। यहीं पर एक बार गुरुदेव ने एकांक्षी नारियल

↑ ऋषिकेश की दुर्गम गुफा

↓ ऋषिकेश का विहंगम दृश्य

मंगवा कर उसे भी सिद्ध किया था। गुरुदेव भगवान उस श्रीफल से वार्तालाप करते थे। श्री फल को सिद्ध करने के बाद गुरुदेव ने उसे कुएं में डलवा दिया। (गुरुदेव भगवान के निर्वाण के पश्चात जो पूजा पेटी अचलगढ़ से सेठ साहब द्वारा पेढ़ी को मिली उसमें दो एकांक्षी नारियल हैं जो आज भी संग्रहालय में दर्शनार्थ रखे हुए हैं।)

इस प्रकार पूज्य गुरुदेव श्री शांति सूरीश्वर जी आत्मज्ञान के पूर्ण प्रकाश में निरन्तर आगे बढ़ते रहे। ज्योंही उन्होंने अक्षय निधि को पाया, तो वे प्रकाश के उस अक्षय-भंडार को बांटने के लिए अपने एकान्त जीवन को निर्जन वन-गुफाओं में से खींचकर मानव समाज में ले आये।

**सुन्धा माता तीर्थ पर पशुबली बंद**

राजस्थान में जालोर जिले के अरावली पर्वतमाला में १२२० मीटर ऊंचाई पर सुन्धा माता का मंदिर स्थित है। पुराणों में इस पहाड़ी का सुगन्धगिरि के रुप में उल्लेख है। पहाड़ के ऊपर चामुंडा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ पर दशहरा और नवरात्रि के त्योहारों पर देवी के मंदिर में धर्म के नाम पर इतने सारे पशुओं का वध करके भोग लगाया जाता था कि पहाड़ के तालाब के पानी में भी प्राय : रक्त वर्ण की आभा दिखाई देने लग जाती थी। वि. सं. १९७३-७४ का चातुर्मास गुरुदेव ने सुन्धा पहाड़ पर किया और गुरुदेव के उपदेश से वहाँ पशु बलि बंद की गई।

सुन्धामाता का मन्दिर

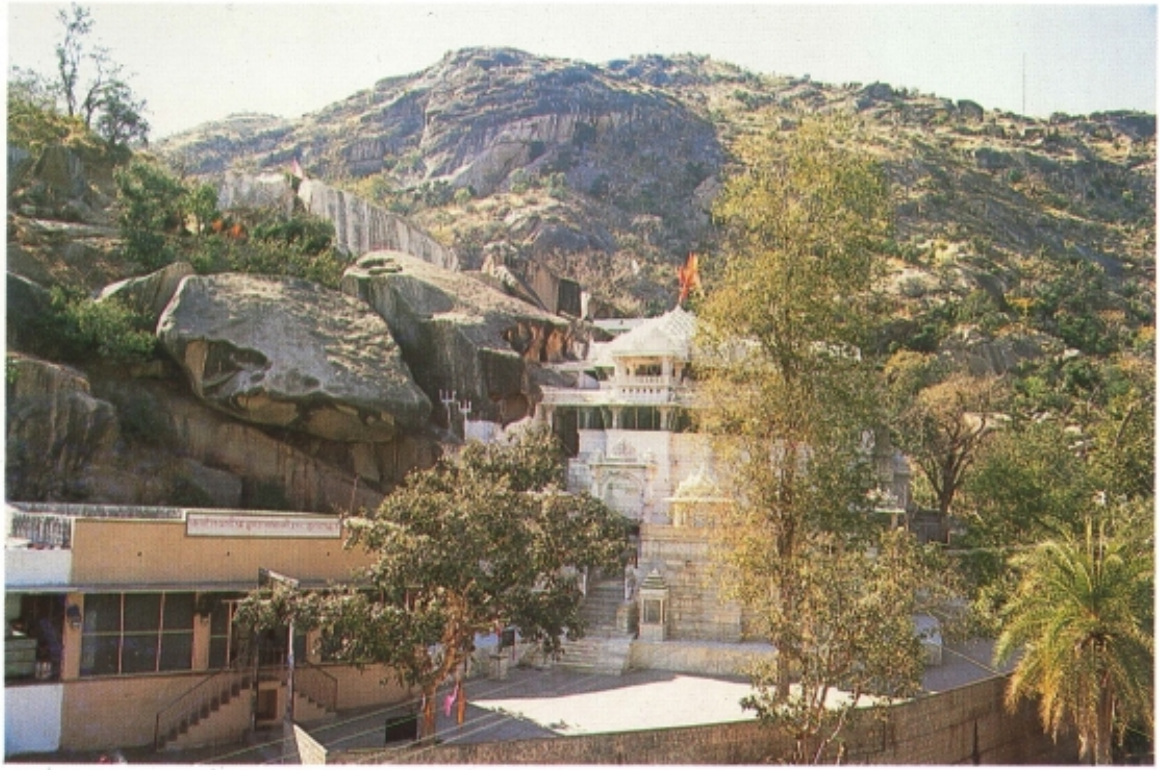

इसी अवधि में आप बामनवाड़जी तीर्थ पधारे। वहां धर्मशाला के प्रवेश द्वार के ऊपर के कमरे में खिड़की के पास ध्यान में लीन हो गये। उस रात्रि में अचानक कोई उपसर्ग हुआ जिससे गुरुदेव खिड़की से १५ फुट नीचे जमीन पर गिर गये, जिससे मस्तक से लहू की धारा बहने लगी। मंदिर के कर्मचारियों एवं पेढ़ी के नौकरों को मालूम पड़ते ही वे दौड़े और गुरुदेव से हालचाल पूछा। लेकिन आप तनिक भी विचलित नहीं हुए और कहा ॐ शांति। उस समय आपके सिर पर पट्टी बांधने व उपचार करने का कार्य कई महीनों पर्यन्त धनारी वाले श्री पूजजी महाराज ने किया।

५ मई सन् १९३३ तदनुसार वि.सं. १९८९ के वैशाख सुदी १५ के दिन बामनवाड़ जी में ८८ गांवों के राईका (रबारी) श्री गुरुदेव भगवान के दर्शन के लिए इकठ्ठे हुए थे तब गुरुदेव ने बोध देकर शराब एवं मांस का त्याग कराया था।

वि.सं. १९९० के वैशाख वदी १,२,३, के पोरवाल महा सम्मेलन में बामनवाड़जी में सम्मिलित होने के लिए आपको आमंत्रित किया गया। वहां श्री विजय वल्लभसूरिजी से आपका मिलन व विचार विनिमय हुआ। इस सम्मेलन में जनता की ओर से बहुत आग्रह पूर्वक "अनन्त जीव प्रतिपाल योगेन्द्र चूड़ामणि राज राजेश्वर" की उपाधि से योगीराज शांतिविजयजी को सम्मानित किया गया।

बामनवाड़ा तीर्थ का उत्तरीद्वार

रबारी सम्मेलन - बामनवाड़ा

बामनवाड़ा तीर्थ ↓

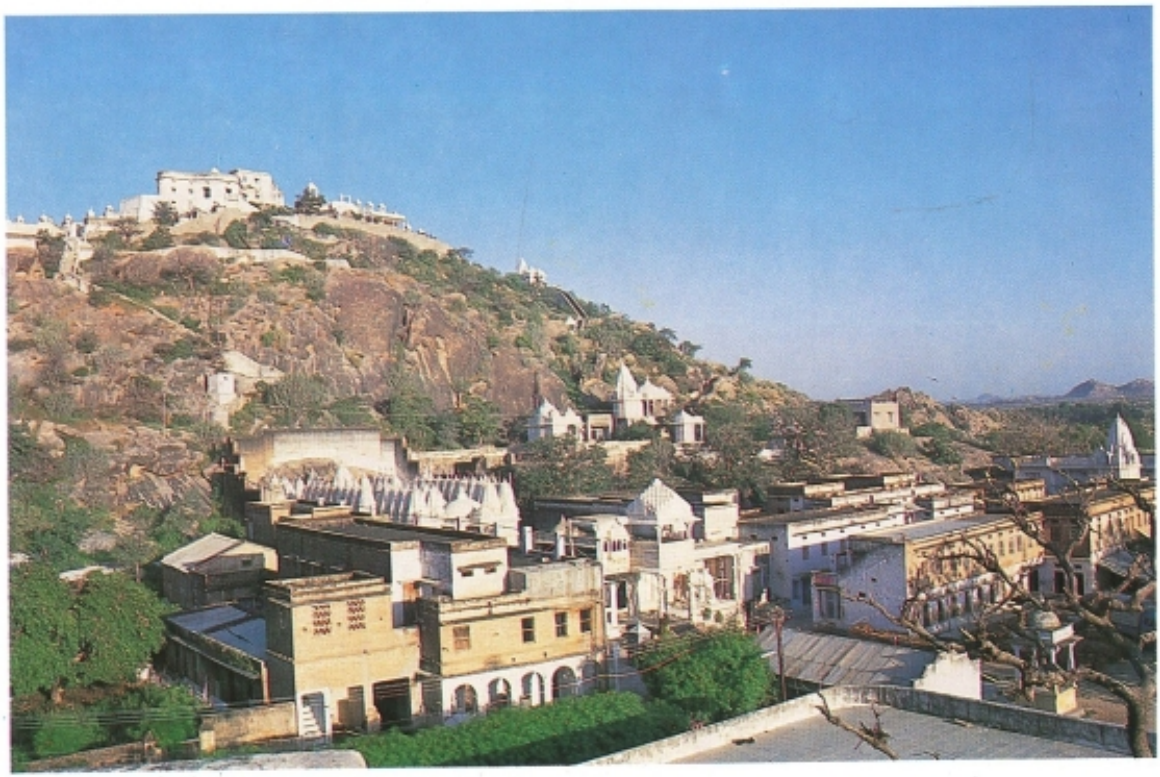



पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई धर्मपत्नि चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

बम्बई निवासी सेठ गुलाबचन्दजी राजाजी ग्राम दूजाना वालों ने कार्तिक सुदी १२ वि. सं. १९८९ में पंच तीर्थी का संघ निकालने की इच्छा प्रकट की। गुरुदेव भगवान ने विनती स्वीकार कर कार्तिक सुदी १५ को चतुर्विध संघ सहित श्री बामनवाड़जी से विहार किया।

संघ ने नन्दिवर्धनपुर (नांदिया) में श्री महावीर भगवान के दर्शन कर लाज ग्राम में चिन्तामणि पार्श्वनाथ के दर्शन किये। पश्चात् लौटाना गाँव में श्री आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा के दर्शन कर, दियाना गाँव में जीवित स्वामी श्री महावीर भगवान के दर्शन कर पेशवा होते हुए अजारी गाँव में श्री संघ ने पदार्पण किया। यहाँ पर बावन जिनालय वाला श्री महावीर स्वामी का विशाल मन्दिर है। इसी मन्दिर में कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य जी के कर कमलों से प्रतिष्ठित सरस्वती देवी की प्रतिमा भी है और यहाँ से एक मील दूर सरस्वती अरण्य (मारकण्डेश्वर) नामक स्थान में श्री सरस्वती देवी की प्राचीन और चमत्कारिक प्रतिमा है जहाँ गुरुदेव ने श्री संघ सहित दर्शन किये।

यात्री संघ ने पिंडवाड़ा में श्री महावीर स्वामी और चिन्तामणि पार्श्वनाथ, झाड़ोली में श्री शांतिनाथ भगवान के दर्शन कर आरासना ग्राम में पहुँचा, यहाँ पर श्री नेमीनाथ भगवान की अधिष्ठायिका श्री अम्बिका देवी (अम्बा माता) के प्राचीन मंदिर के दर्शन कर संघ वीरवाड़ा पहुंचा। वहाँ श्री आदिनाथ और श्री महावीर स्वामी के दर्शन कर संघ १९वें दिन श्री बामनवाड़जी लौट आया। संघ में जनता की उत्कृष्ट उपस्थिति ५००० थी।

महावीर जिनालय - वीरवाडा

मार्ग में आचार्य श्री विजय महेन्द्र सूरीश्वरजी, आचार्य श्री विजय गुलाब सोम सूरीश्वरजी, उपाध्याय श्री उद्योत विजयजी, पं. लब्धिसागरजी, मुनि मनहर विजयजी, मुनि मंगलचन्द्रजी और साध्वीजी श्री माणिकश्रीजी, श्री अमृतश्रीजी तथा श्रावक श्राविका आदि चतुर्विध संघ की प्रबल इच्छा हुई कि योगीराज गुरुदेव को श्री जगत गुरु सूरि (आचार्य) सम्राट की पदवी समर्पण कर कृत कृत्य बनें।

ग्राम-ग्राम में सभाऐं करके संघ ने उपरोक्त पद अर्पण करना चाहा किंतु गुरुदेव भगवान किसी तरह टालते रहे किंतु वीरवाड़ा ग्राम पहुँचकर संघ ने पक्का निश्चय कर लिया कि जब तक गुरुदेव पद ग्रहण नहीं करेंगे तब तक सब लोग अन्न जल का त्याग रखेंगे। ऐसा करने पर भी योगीराज मना करते रहे। प्रातः काल से अन्न जल का त्याग करके सबको बैठे-बेठे ३ बज गये।

फिर यकायक संघ में जोश फैला और सबने एक मत होकर निश्चय कर लिया कि अब हम मिलकर जबरदस्ती योगीराज को जगतगुरु सूरि सम्राट पद अर्पण करेंगे ही। वैसे ही एक साथ सकल संघ ने उत्कृष्ट भाव के आवेग में आकर ठीक ३ बजकर १५ मिनट पर पदवी समर्पण मानपत्र (यह पत्र केसर से लिखा हुआ था) और चद्दर आग्रह पूर्वक अर्पण कर दी। महाराज साहब ने फिर भी इनकार किया तब मुर्शिदाबाद निवासी बाबू जगपतिसिंह जी दूगड़ तथा संघवीजी आदि बड़े-बड़े प्रतिष्ठित सज्जनों ने कहा कि तीर्थंकर भी संघ को "नमो तिथस्स" करते हैं, आप कैसे संघ की आज्ञा को टाल सकते हैं? श्री संघ पच्चीसवें तीर्थंकर के तुल्य हैं, उसकी आज्ञानुसार आपको यह पद लेना ही पड़ेगा। इतना कहते हुए सबने हर्षोल्लास के साथ "सूरि सम्राट की जय, जगतगुरु श्री विजय शांतिसूरिश्वर महाराज की जय" के नारों से आकाश को गुंजा दिया। अपनी-अपनी शक्ति अनुसार सबने तन मन धन न्योछावर किया। मंगलगान और वाजिंत्र बजने लगे।

## बामनवाड़ा तीर्थ में गुरुदेव

उसी दिन रविवार को आचार्य श्री वहां से विहार कर श्री बामनवाड़जी पधार गये। बीकानेर निवासी हीरालालजी हजारीमलजी रामपुरिया के सुपुत्र दानवीर सेठ शिखरचंदजी रामपुरिया सपरिवार गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। उनकी तथा संघ पति सेठ गुलाबचन्दजी राजाजी दुजाणा वाले और सकल संघ की ओर से श्री बामनवाड़जी में तीज, चौथ और पंचमी तीन दिनों तक बड़े आनन्द के साथ पदवी समर्पण के उपलक्ष्य में उत्सव मनाया गया। विधि - विधान की क्रिया की गई। श्री आचार्य सम्राट ने अपने श्री मुख से दिव्य वाणी में सूरि मन्त्र के पंच परमेष्ठी का मांगलिक सकल संघ को सुनाया। उस समय

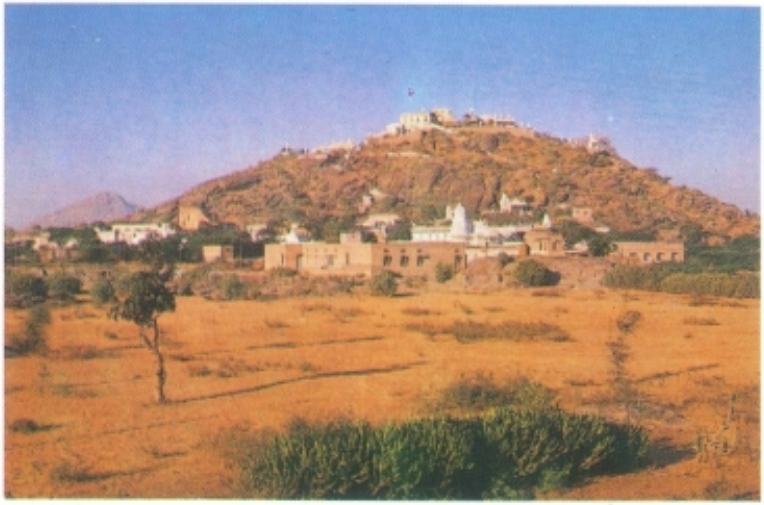

बामनवाड़ा

बामनवाड़ा से - वीरवाडा का विहंगम दृश्य

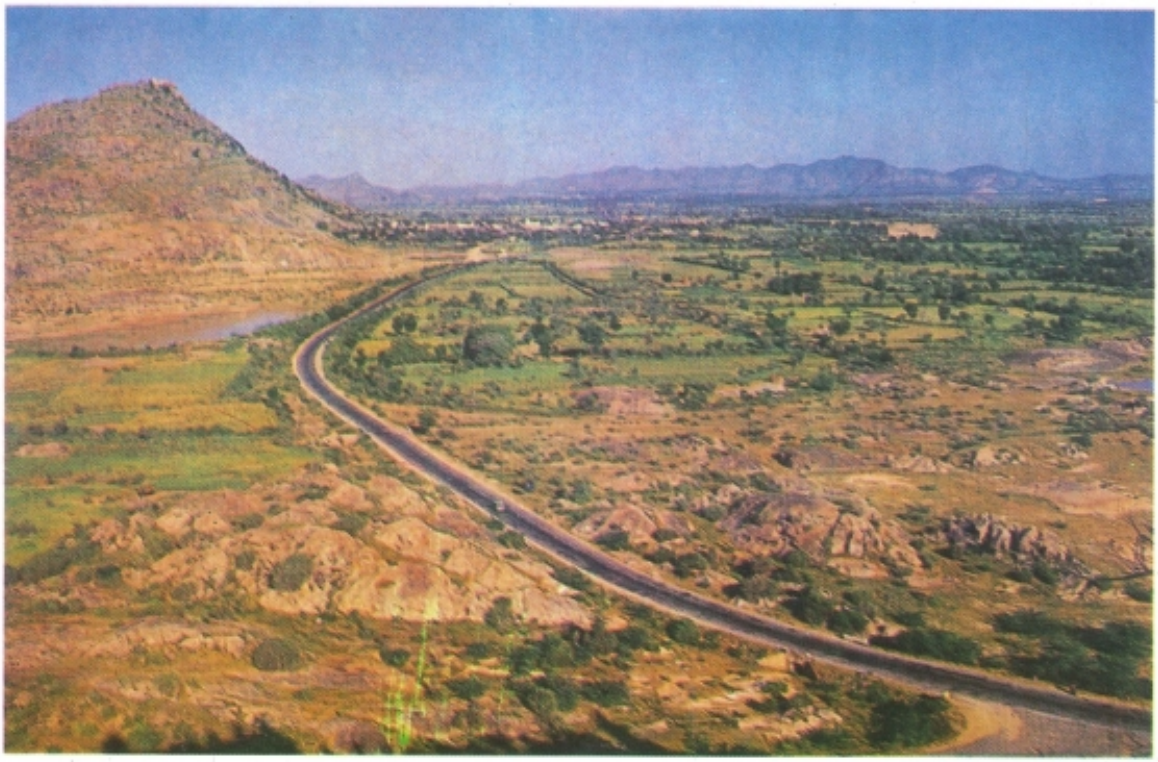



पृष्ठ प्रदत्त सोहनी देवी मंगलचन्द जी बैगानी, मुम्बई

बामनवाड़ा

सिंहासन

ऐसा मालूम होता था कि मानों साक्षात् सरस्वती देवी श्री आचार्य महाराज के मुखार विन्द से प्रकट हो रही है।

वि.सं. 1991 (दिनांक 8-2-1935) की माघ सुदी पंचमी पर बामनवाड़जी में गुरुदेव के कर कमलों द्वारा जिन बिंबों की अंजनशलाका आदि समारोह सम्पन्न कराया गया। इस अंजनशलाका में पार्श्वनाथ स्वामी का एक सहस्त्र फणा जिन बिंब था जिसके श्याम पाषाण पर निशान थे। गुरुदेव ने कहा था बाद में यह चिह्न मिट जायेंगे, तदनुसार वे चिन्ह मिट गये और नेत्रों से अमी झरनें लगी। ऐसे प्रभावशाली जिन बिंब को सं. 1995 (दिनांक 2-12-1938) के मिगसर मास में उम्मेदपुर (जालोर) के जिनालय में गुरुदेव द्वारा प्रतिष्ठित कराया गया।

गुरुदेव ने वि.सं. 1992 (सन् 1935) का चातुर्मास बामनवाड़ा में व्यतीत किया। आपके उपदेश से वहाँ पर "श्री महावीर जैन गुरुकुल" स्थापित किया गया। उसका उद्देश्य था कि इसके माध्यम से इस क्षेत्र के बच्चों पर धार्मिक शिक्षा का प्रभाव हो तथा अच्छे संस्कारों का उदय हो।

बामनवाड़ा तीर्थ की पहाड़ी पर गुरुदेव भगवान एक गुफानुमा कमरे में विराजते थे। खुड़ाला के एक भक्त द्वारा गुरुदेव के लिए बनाया हुआ संगमरमर का सिंहासन आज भी वहाँ मौजूद है। कमरे के पास एक हॉल है, जिसमें गुरुदेव भक्तों से मिला करते थे। यहीं गुरुदेव की एक प्रतिमा भी विराजमान है।

(सन् 1939) वि.सं. 1995 के माघ मास में गुरुदेव शिवगंज पधारे थे। ध्यानस्थ दशा में रमण करते हुए एक दिन गोचरी लेने धनरुपजी नामक एक श्रावक के घर गये। गोचरी लेने के बाद आपकी द्रष्टि उनके पुत्र सुकनराज पर गई और आपने पूछा इस बालक को क्या हुआ है ? धनरुपजी बोले यह बहुत वर्षों से अपंग दशा में है। गुरुदेव के रोम रोम में करुणा का संचार हो गया और बोले "ॐ शांति, ठीक हो जायगा" इसके पश्चात सुकनराज बालक धीमे-धीमे चलने लग गया और फिर उसने पूर्ण स्वस्थ होकर जीवन व्यतीत किया।

वि.सं. 1995 पोष वदी 13 के दिन गुरुदेव ने पोमावा की तरफ विहार किया। यहाँ जिनालय में श्री कुंथूनाथ भगवान की प्रतिष्ठा दिनांक 22-12-1938 को और शांतिस्नात्र पोष सुदी 6 को कराई, फिर पोष सुदी 10 को शिवगंज की तरफ विहार किया।

श्री धर्मतीर्थ शान्ति गुरु प्रतिमाएं, दादावाड़ी - शिवगंज

पोष सुदी 10 वि.सं. 1995 के दिन पोमावा से विहार करके आप शिवगंज पधारे जहाँ एक महिना और पन्द्रह दिन तक ठहर कर धर्मप्रसार, विश्व-प्रेम और भक्ति का संदेश दिया। नगर में सर्वत्र आनन्द फैल गया।

फिर बड़गाँव, कलापरा, राडवर होते हुए चूली गाँव पधारे। तीन चार महीने बाद आप पोमावा गाँव पधारे, वहाँ पर सेठ रतनचन्द मनरुपजी को एक रात्रि में कोई दैवी आभास हुआ और उनकी इच्छा गुरुदेव केचरणों में कुछ द्रव्य खर्च करने की हुई। उनकी माता व पत्नी ने भी बीसस्थानक की ओली के उजमणा करने की प्रेरणा दी। वि.सं. 1978 (सन् 1921)



पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

के जेठ सुदी 11 के दिन उजमणा का उत्सव बड़े ठाट बाट से किया गया। सेठ रतनचंदजी की भावना इतनी अधिक बढ़ गई कि जहां उनका विचार 5-6 हजार रुपये लगाने का था, उस जगह उन्होंने अपनी सारी पूंजी यहां तक कि गहने आदि बेचकर भी सब द्रव्य लगा दिया। दूसरे ही वर्ष चावल के व्यापार में नफे के रुप में इन्होंने दुगुना धन उपार्जित किया।

वि.सं. 1982 का चातुर्मास सिरोही में किया। वि.सं. 1984 में सिरोही के ऋषभदेव जिनालय का ध्वजादंड समारोह आपके सानिध्य में संपन्न हुआ। इस समय ध्वजादंड भूमि से जरा भी ऊँचा नहीं उठ रहा था। तब, आपने अपना ओघा छूकर ऊँचा उठाने का संकेत किया कि तत्काल यह कार्य आसानी से सम्पन्न हो गया।

सिरोही के जैन मन्दिर

## चामुण्डेरी (पाली) :

मूलनायक आदिनाथ भगवान - चामुण्डेरी

यहाँ पर श्री आदीश्वर भगवान का बड़ा मन्दिर है । इस मन्दिर की नींव वि.सं. १९६० में रखी गई थी । इसकी प्राण-प्रतिष्ठा वि.सं. १९८४ में जेठ वदी पंचमी को पूज्य गुरुदेव एवम् पूज्य महेन्द्र सूरीजी महाराज साहब के कर कमलों से सम्पन्न हुई। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर संगमरमर का कलात्मक झरोखा बना हुआ है । जिसमें भगवान आदीश्वर की माता मरुदेवी हाथी पर विराजमान है । इस मन्दिर को बनवाने में कामदार श्री गुलाबचन्दजी मूथा जी एवं श्री वनेचन्द जी हीराचन्द जी आदि पंचो ने तन, मन, धन से सहयोग दिया ।

जैन मन्दिर - चामुण्डेरी

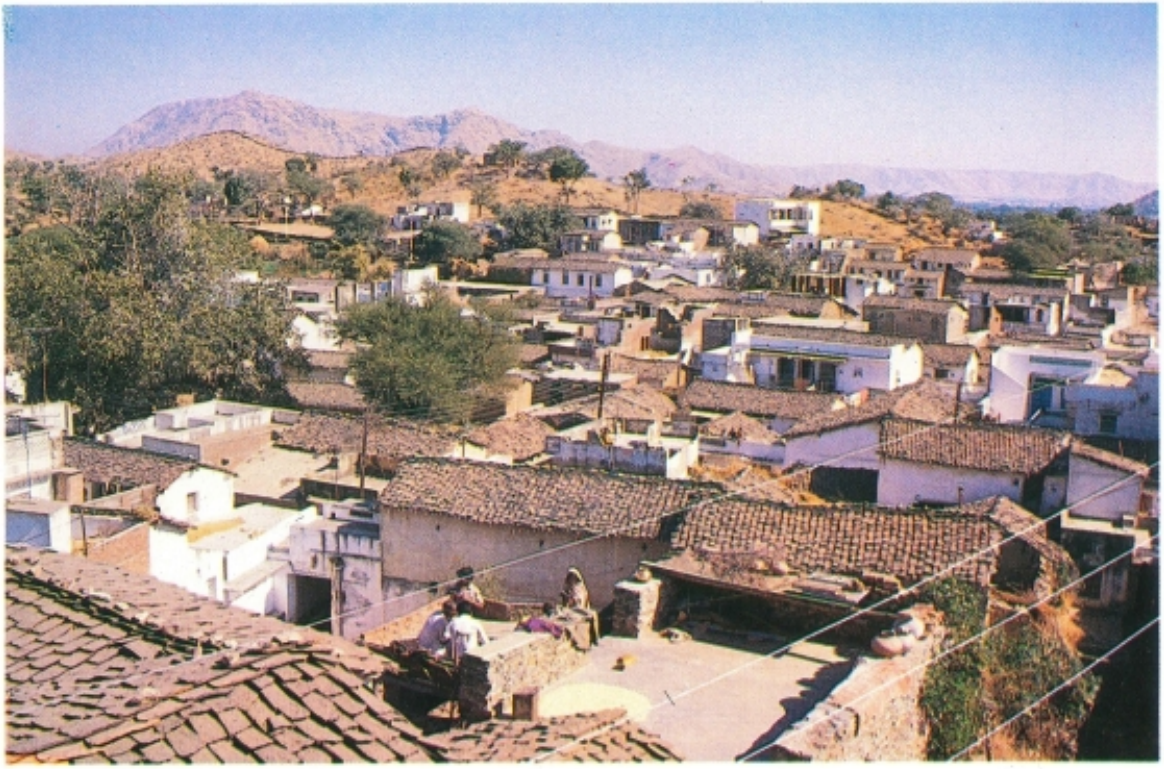

मदार गांव

तलेसरा भवन - मदार

**गुरुदेव एवम् केसरियाजी तीर्थ**

उदयपुर शहर से ६० कि. मी. दक्षिण में श्री केसरियाजी का प्राचीन जैन तीर्थ आया हुआ है। उस समय इस तीर्थ के विषय में स्थानीय पंडो व जैन समाज में विवाद चल रहा था। तीर्थ की आशातना को देखते हुए गुरुदेव ने इसके रक्षण के लिए पूरजोर शब्दों में घोषणा की कि "यदि केसरियाजी तीर्थ में चल रहे विवाद का मेवाड़ स्टेट की तरफ से शान्ति पूर्ण हल नहीं हुआ तो फाल्गुन सुदी १३ वि.सं. १९९० के दिन मैं मेवाड़ की सीमा में प्रवेश कर आमरण उपवास प्रारंभ कर दूंगा।" (उस समय गुरुदेव बामनवाड़जी में विराजते थे।) उधर उदयपुर स्टेट की ओर से पंडित सर सुखदेव प्रसादजी एडमिनिस्ट्रेटर ने यह आदेश निकाल दिया कि शान्ति विजयजी के उदयपुर स्टेट की सीमा में प्रवेश करने पर गिरफ्तार किया जाय। इस हेतु एक वारंट निकलवा कर उदयपुर स्टेट की सीमा पर सभी ओर पुलिस का कड़ा प्रबंध करवा दिया।

गुरुदेव ने यह संदेश प्राप्त होते ही अपने अद्‌भुत आत्मबल से उदयपुर स्टेट के मदार गाँव में (गोगुन्दा मार्ग पर उदयपुर से १० कि. मी. दूर) प्रवेश किया। वहाँ पर आपने धर्मीचंदजी तलेसरा के मकान में ठहर कर उपवास आरंभ कर दिये। मदार गाँव में हजारों लोग गुरुदेव के दर्शनार्थ आते थे।

उदयपुर स्टेट के महाराणा की ओर से सर सुखदेव प्रसादजी गुरुदेव से समझौता वार्ता करने के लिये आते रहते थे। उनके कई प्रयासों के बावजूद भी गुरुदेव ने अपना संकल्प नही छोड़ा। इसी बीच उदयपुर महाराणा के आमंत्रण पर आये नेपाल राज्य के शासक भी गुरुदेव के दर्शनार्थ आये। गुरुदेव के आलौकिक ज्ञान से प्रभावित होकर नेपाल शासक ने आपको **"नेपाल राज गुरु"** की उपाधि से विभूषित किया।

गुरुदेव के उपवास जारी थे। महाराणा श्री भोपालसिंहजी को दैविक प्रेरणा हुई, उन्होंने गुरुदेव की बात को स्वीकार कर लिया। उन्होंने गुरुदेव को उदयपुर स्थित मोतीमहल (फतेहसागर) में पारणा करने के लिए सादर प्रार्थना की। गुरुदेव मदार से देवाली होते हुवे मोतीमहल पधारे। चैत्र सुदी १३ संवत १९९१ के दिन गुरुदेव के ३० वां उपवास था। गुरुदेव ने महाराणा को उपदेश देते हुवे कहा कि आप भी केसरिया बाबा के भक्त हैं। आप सत्य और न्याय को दृष्टि में रख कर तीर्थ में शांति की स्थापना करें। उत्तर में महाराणा ने गुरुदेव को वचन दिया कि मैं अति शीघ्र तीर्थ के विषय में न्याय कर दूंगा और थोड़े ही समय में उन्होंने घोषणा करवा दी कि यह तीर्थ जैनियों का है। उल्लेखनीय है कि महाराणा श्री भोपालसिंहजी

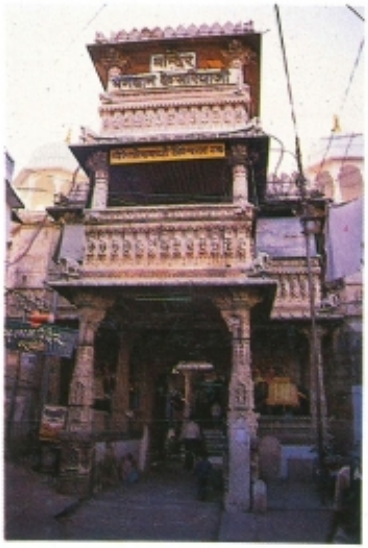

केशरियाजी तीर्थ

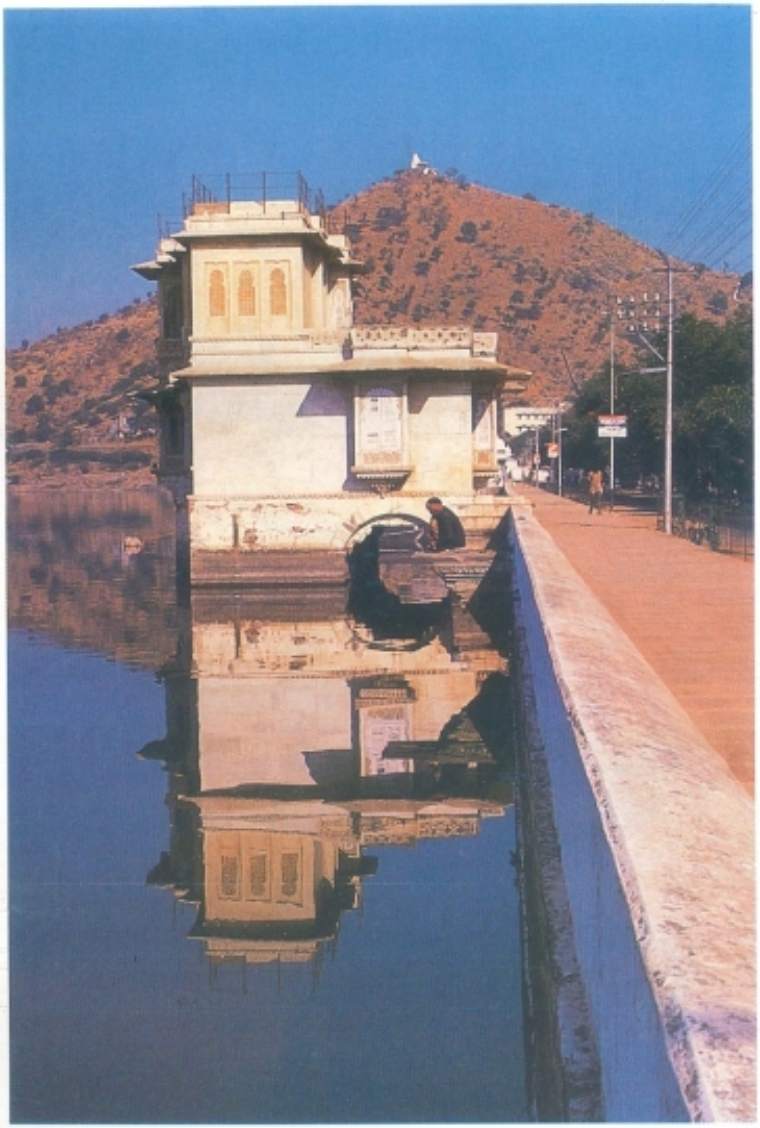

मोती महल - उदयपुर

प्रसाद गाँव का राजकीय विश्रान्ति गृह

के पिता महाराणा श्री फतेहसिंहजी द्वारा गजट में प्रकाशित विज्ञप्ति में भी इस तीर्थ को जैन श्वेतांबर तीर्थ होने का संकेत मिलता है। जिसमें बताया गया है कि प्रति वर्ष भगवान ऋषभदेव के जन्म दिन चैत्र वदी अष्ठमी को केसरियाजी में भगवान की प्रतिमा को आंगी पहनाई जाये।

श्री केसरिया जी तीर्थ की रक्षा के लिए जो परिश्रम गुरुदेव ने किया उसके लिए अखिल भारत वर्षीय श्वेताम्बर जैन साधु सम्मेलन ने भी अपने अहमदाबाद अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित कर गुरुदेव के प्रति अपना आभार व्यक्ति किया। तत्पश्चात् देवाली से गुरुदेव उदयपुर पधारे।

उदयपुर से गुरुदेव श्री संघ के साथ केसरियाजी के दर्शनार्थ गये, जहाँ ३ दिन तक भगवान जी के बगीचे में ठहरे। उन दिनों इस तीर्थ पर आनंद की लहर फैल गयी थी और देश के कोने-कोने से प्रतिष्ठित महानुभाव एकत्रित हो गये थे। केसरियाजी से लौटते समय गुरुदेव ने प्रसाद गाँव के राजकीय बंगले में विश्राम किया। यहाँ पर रात्रि में १२ बजे जिन शासन देव ने गुरुदेव को दर्शन दिये जिसके प्रभाव से कमरे में चकाचौंध करने वाला दिव्य प्रकाश फैल गया। शासनदेव कमरे में आधा-पौन घंटा ठहरने के बाद अदृश्य हो गये। वास्तव में जिन शासनदेव समय-समय पर गुरुदेव जैसे महान् पुरुषों के पास आते रहते हैं। प्रसाद गाँव से विहार करते हुए गुरुदेव भगवान बामनवाड़जी पधारे। यहाँ आपने भक्त किंकरदास को भजन बनाने की आज्ञा दी।

पृष्ठ प्रदत्त — मांगीलाल विजयचन्द बाठिया, बीकानेर

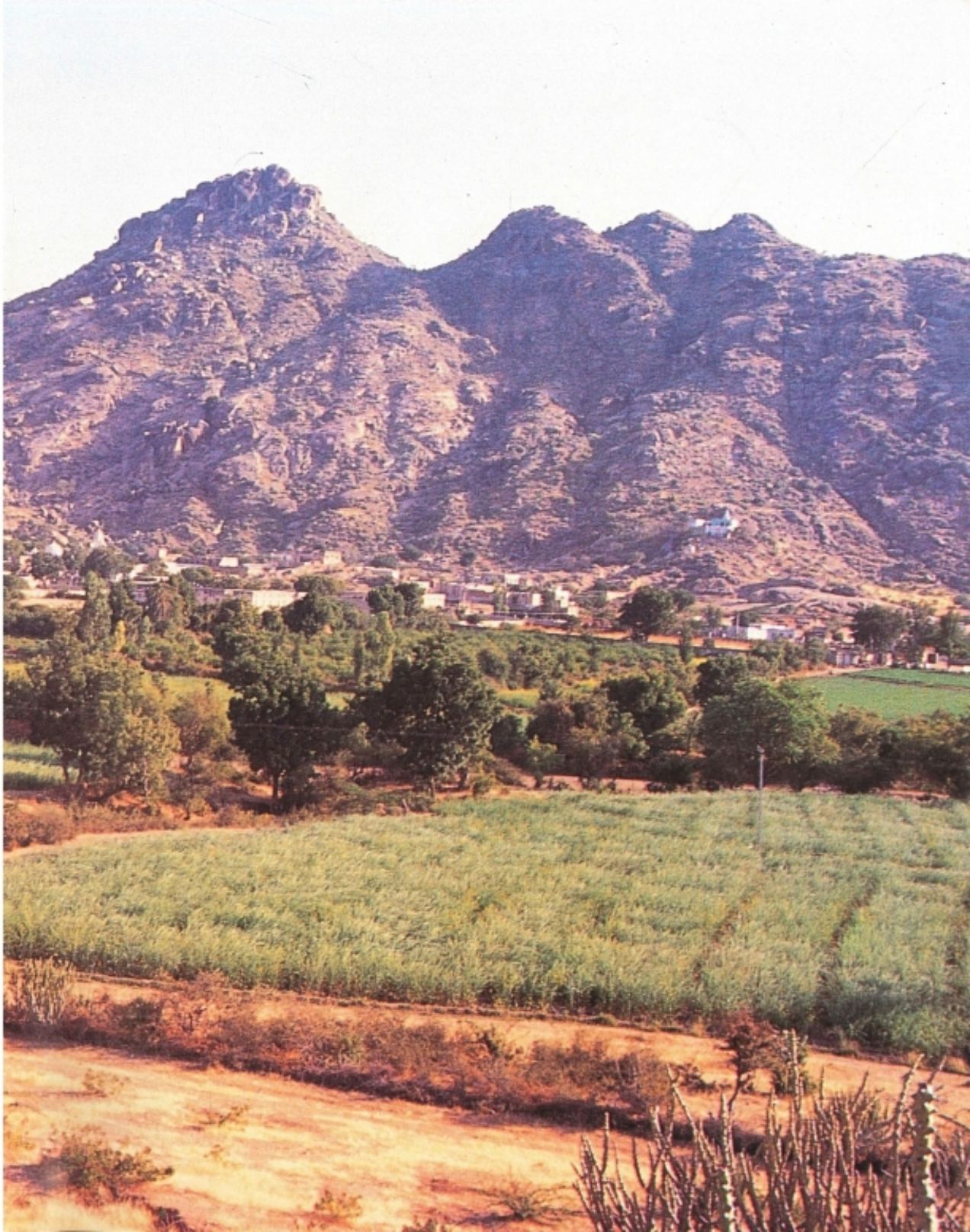

## बिसलपुर (पाली) में गुरुदेव

वि. सं. १९९२ का वर्ष मारवाड़ के इतिहास में एक महान वर्ष रहा है। इसी वर्ष बिसलपुर (जवांईबांध स्टेशन के पास) में जगद्गुरु, योगेन्द्र चूडामणि, जैन शासन प्रभावक योगीश्वर श्री श्री १००८ श्री विजय शांति सूरीश्वरजी महाराज साहेब के कर कमलों से वैशाख सुदी १० के दिन श्री धर्मनाथ भगवान आदि का अंजनशलाका - प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया जिसके समाचार ज्ञात होने पर दूर दूर से हजारो लोग बिसलपुर पहुँच गये। उन दिनों गर्मी के दिन थे और पानी की कमी थी। स्थानीय श्री संघ ने इस समस्या के समाधान के लिए गुरुदेव से प्रार्थना की। गुरुदेव लब्धिसंपन्न थे। उन्होंने प्रातः काल नदी पर जाकर अपने पात्र में से अंजलि भर जल लेकर नदी की ओर छिड़क दिया। गुरुदेव के पुण्य प्रभाव से कुओं में पानी के अखूट स्रोत फूट पड़े। किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रही। इस प्रकार बड़े हर्षोल्लास के साथ महोत्सव संपन्न हुआ। शासनोन्नतिकारक क्रियाओं के उपरांत अखिल भारत वर्ष की "ओसवाल" जाति के प्रमुख जगत सेठ श्री फतेहसिंहजी गेलड़ा के सभापतित्व में "मारवाड़ प्रांतिय जैन श्वेतांबर कॉन्फरेन्स" का भव्य अधिवेशन हुआ। जो समाज सुधार की शुभ भावनोओं से अंकित जैन समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए गौरव का विषय था। इस पुनीत कार्य में जैनाचार्य श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज के पदप्रभावक आचार्यवर्य श्री १००८ श्री विजयललित सूरीश्वरजी महाराज साहब आदि मुनिवर्यों की उपस्थिति ने सोने में सुगन्ध का काम किया। मारवाड़ में आपके द्वारा शिक्षण प्रचार की दिशा में अद्भुत कार्य हुए है।

दिनांक ९, १०, व ११ मई, १९३५ को अखिल भारत वर्षीयजैन श्वेतांबर कॉन्फरेन्स का वार्षिक अधिवेशन भी गुरुदेव की छत्र-छाया में हुआ जिसमें जैन समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, जोधपुर स्टेट के उच्च ऑफिसर व कांग्रेसी नेता मणीभाई कोठारी और जयनारायणजी व्यास आदि भी सम्मिलित हुए थे। प्रतिष्ठा व कॉन्फरेन्स का अधिवेशन सानंद सम्पन्न हो जाने पर श्री संघ ने एक सभा का आयोजन करके गुरुदेव को "युग-प्रधान" पद दिनांक १३-५-३५ को अर्पण किया। कहते हैं कि उस सभा मंडप में सर्वत्र केसर की वर्षा हुई।

धर्मनाथ भगवान की प्रतिमा

पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई धर्मपत्नि चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

## "हिज-हॉलीनेस" की पदवी (बिसलपुर)

श्री गुरुदेव ने तत्कालीन ब्रिटिश शासक पंचम जार्ज को दुधारु पशु वध रोकने हेतु लिखवाया था, उसके प्रत्युत्तर में पंचम जार्ज ने लिखा था कि यदि जनता तैयार हो तो मुझे इसमें आपत्ति नहीं है। इस उद्देश्य की पूर्ति में श्रद्धा व विश्वास व्यक्त करते हुए जार्ज ने श्री गुरुदेव को "हिज-हॉलीनेस"

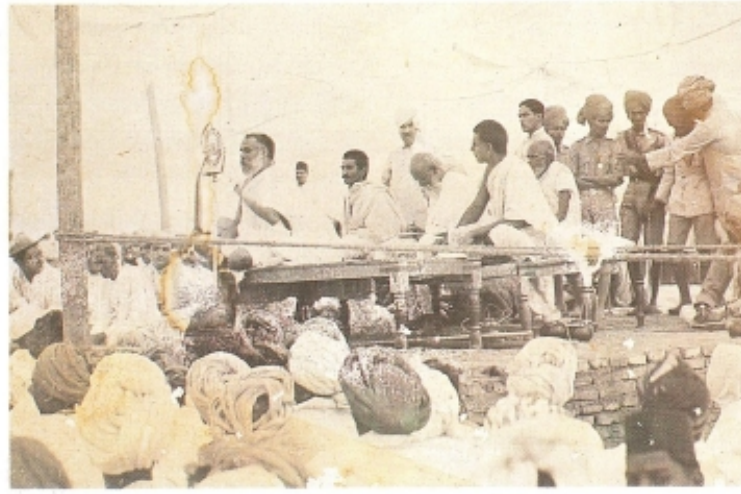

'हिज होलीनेस' पदवी समर्पण समारोह

की पदवी व चादर भिजवाई थी, जिसे महोत्सव के अवसर पर जगतसेठ साहब ने गुरुदेव को अर्पित की। गुरुदेव को "हिज-हॉलीनेस" की पदवी प्रदान कर ने हेतु इस अवसर पर खरतरगच्छ, तपागच्छ आदि के पांच आचार्यों ने वासक्षेप भेजी। इस समय सभी गच्छो के करीब साठ साधु साध्वी यहां उपस्थित थे। गुरुदेव पदवी आदि से हमेशा दूर रहना चाहते थे; परंतु संघ ने आग्रह पूर्वक "हिज-हॉलीनेस" की पदवी से विभूषित किया।

इस अवसर पर गुरुदेव ने फरमाया कि - "आप जो मुझे दे रहे हैं उसकी मुझे जरुरत नहीं है और जो मुझे चाहिए वह आपके पास नहीं है।"

विसलपुर से गुरुदेव भगवान ने चातुर्मास हेतु बामनवाड़ जी की तरफ विहार किया तथा आषाढ़ सुदी ११ दि. २५-७-१९३५ को बामनवाड़ जी में दादा जिनदत्त सूरि महाराज की जयन्ती मनाई। बामनवाड़जी से प्रस्थान कर मार्कण्डेश्वर आश्रम होते हुए गुरुदेव वि. सं. १९९३ में चातुर्मास हेतु अचलगढ़ पधारे।

**मांडोली में प्रतिष्ठा महोत्सव**

संवत १९९४ के फाल्गुन सुदी १० के शुभदिन आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय शांतिसूरीश्वरजी महाराज के कर कमलों द्वारा माण्डोली ग्राम में निर्मित नूतन जिनालय में पांचवे तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान की श्री अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव बड़े ही धूमधाम से हुआ था। माण्डोली नगर में इसके पूर्व कोई जैन मंदिर नहीं था। अतः आहोर से भगवान मल्लीनाथ स्वामी की प्रतिमा ला कर दो अन्य प्रतिमाओं के साथ श्रद्धेय यति वर्य उम्मेदजी के उपाश्रय में दर्शनार्थ रखी थी। तत्पश्चात् संवत् १९६० से नूतन मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया और इस के पूर्ण होते ही गुरुदेव के निर्देशानुसार मूलनायक भगवान सुमतिनाथ, शांतिनाथ, वासुपुज्य स्वामी एवं मल्लिनाथ भगवान की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करानें का मुहुर्त फाल्गुन सुदी १० वि.सं. १९९४ का शुभ दिन निश्चित किया

मन्दिर का बाहरी दृश्य

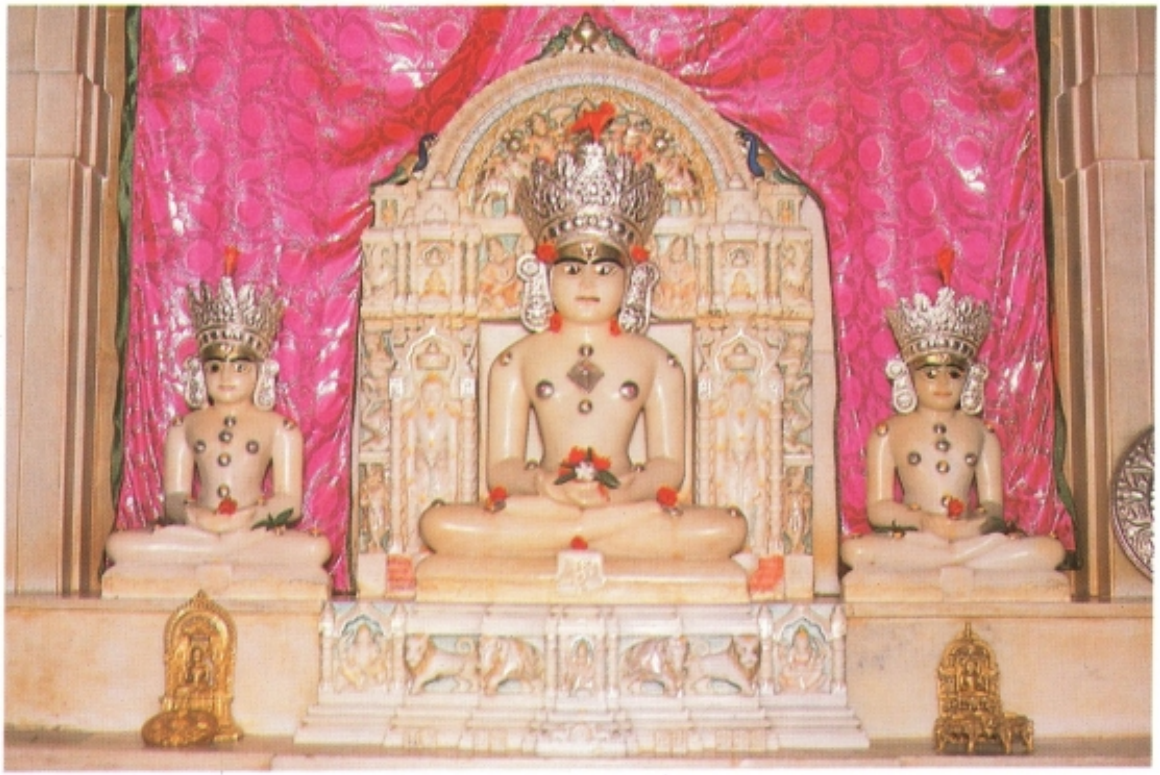

मूलनायक सुमतिनाथ भगवान

गया । लगभग १०५ जैन परिवारों की आबादी वाले सम्पूर्ण माण्डोली गांव को इन्द्र-पुरी सा सजाया गया। फाल्गुन सुदी ७ को गुरुदेव माउंट आबू से रामसीन होते हुऐ माण्डोली पधारे। हजारों लोगों के उत्साह एवं उल्लासमय वातावरण में गुरुदेव के कर कमलों द्वारा अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ ।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव की एक उल्लेखनीय घटना बताई जाती है कि गुरुदेव ने गांव-वासियों को प्रतिष्ठा के पूर्व ही बता दिया था कि "प्रतिष्ठा के दिन कोई प्रकोप होने वाला है। लेकिन मैं उस का निवारण कर दूंगा।" आपने अपने योग बलसे गांव पर आने वाले प्रकोप को कुछ मील दूर पूनक गांव में रोक दिया। वहाँ एक झोंपड़ी के पास आग का प्रकोप हो कर शांत हो गया और किसी प्रकार की कोई हानि नहीं हुई।

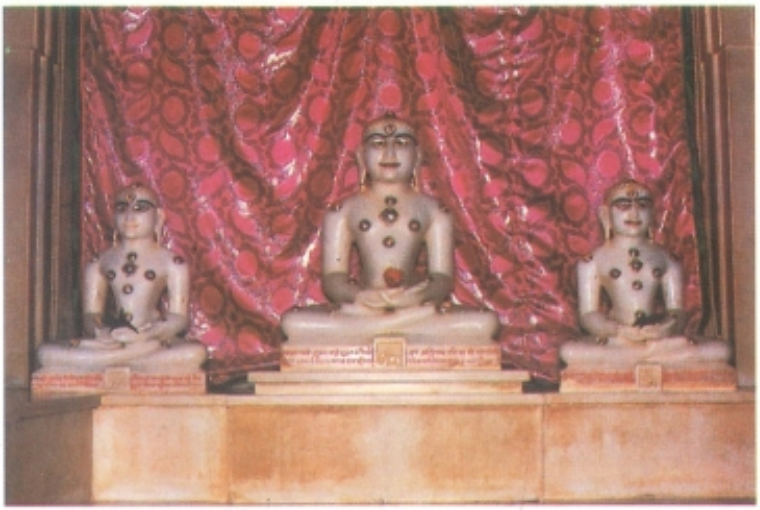

प्रतिष्ठा के पश्चात् गुरुदेव भगवान करीब दस माह यहां पर विराजे। वि. सं. १९९५ की गुरू पूर्णिमा तथा श्रावण वदी ६ को दादागुरु श्री धर्मविजयजी का निर्वाण दिवस मनाया गया।

देलवाड़ा से गुरुदेव के साथ एक भोले मुनि भी आए थे जो पहले गूंगे थे, बोल नहीं सकते थे, लेकिन अब अच्छी तरह बोलने लग गये थे। एक दिन सभा में नाना प्रदेशों के गृहस्थ व गांव के पंच आदि आए हुए थे तब गुरुदेव ने इस भोले मुनि को खड़ा किया और कहा मुनि आज तुम भाषण दो और भिन्न-भिन्न समुदाय के लोगों की समस्या का समाधान करो। भोले मुनि ने भी ऐसा विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया; सब श्रोतागण आश्चर्यचकित हो गये। भोले मुनि ने भी यात्रियों को, बाहर से पधारे खास व्यक्तियों को और माण्डोली के पंचों को अलग-अलग संबोधन करके उनकी गूढ़तम समस्याओं का हल बताते हुए उपदेश दिया। सभा में फलौदी के फूलचन्दजी झाबक और बालचन्दजी बच्छावत, सूरत के हीराभाई, अजमेर के सौभागमलजी लोढा, सेठ किसनचन्दजी आदि कई महानुभाव उपस्थित थे। भाषण के बाद गुरुदेव ने फरमाया कि इस साधु को भोला मुनि कहते हैं पर यह तो प्रखर विद्वान है। तब फूलचन्द झाबक ने अर्ज की कि भगवान इस समय भोलामुनि नहीं बोल रहा था, इस समय तो इसके देह के द्वारा कोई और शक्ति (गुरुदेव की शक्ति) ही काम कर रही थी। गुरुदेव मौन हो गये और सभी को मौन होने का संकेत दिया।

**माण्डोली नगर में अखिल भारत वर्षीय जैन सम्मेलन :**

अखिल भारतीय जैन सम्मेलन, माण्डोली नगर में श्री गुरुदेव भगवान की पावन निश्रा में दिनांक १० अक्टूबर १९३८ को हुआ। जिस में जैन तथा जैनेतर लगभग बीस हजार लोगों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, खानदेश, पूना, बम्बई, मद्रास कराची, गुजरात, काठियावाड़, सी.पी., मारवाड़, मेवाड़, मालवा आदि प्रमुख स्थानों के अतिरिक्त कुछ विदेशी लोगों ने भी भाग लिया था।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता कलकत्ता निवासी श्रीमान बाबू बहादुरसिंहजी सिंघी ने की थी। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए गुरुदेव ने भगवान महावीर के उपदेश से विश्वशान्ति ग्रहण करने एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का आह्वान किया। आपने कहा कि विश्वप्रेम ही धर्म है। जहाँ क्लेश है, वहाँ धर्म नहीं। आपने स्त्री शिक्षा पर जोर देते हुए कन्याविक्रय को बन्द करने का उद्‌बोधन दिया।

माण्डोली में ४८ गांवो के पंचों की विनती पर वि.सं. १९९५ के मिगसर सुदी ३ के दिन गुरुदेव ने उम्मेदपुर में जिन मंदिर की प्रतिष्ठा कराने के लिये विहार किया।
माण्डोली नगर से सियाणा में एक दिन विश्राम कर मणादर पधारे। यह गुरुदेव का जन्म स्थान है। दीक्षा के बाद आप प्रथमबार ही मणादर पधारे थे। दो दिन मणादर ठहरकर विहार किया एवं मिगसर सुदी ७ के दिन हरजी पहुँचे। यहां पर आचार्य श्री विजयललितसूरिजी एवं गुरुदेव का मिलन हुआ।

उम्मेदपुर मन्दिर का बाहरी दृश्य



पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई धर्मपत्नि चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

## उम्मेदपुर में प्रतिष्ठा महोत्सव



मूलनायक भीड़ भंजन पार्श्वनाथ - उम्मेदपुर

वि.सं. १९९५ मिगसर सुदी ९ को गुरुदेव, श्री विजयललितसूरिजी, अन्य साधुओं एवं श्रावकों के साथ उम्मेदपुर पहुँचे। मिगसर सुदी १० के दिन श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा गुरुदेव के करकमलों द्वारा प्रतिष्ठित की गई। ज्ञात रहे इसी विशाल भव्य प्रतिमा की अंजनशलाका आपके द्वारा वि.सं. १९९१ की वसन्त पंचमी को बामनवाड़ में की गई थी। यह वही प्रतिमा है जिस पर कुछ चिन्ह थे जो गुरुदेव की कृपा से मिट गये। यहां के मन्दिर की ध्वजा चढ़ाने की बोली स्विट्ज़रलैण्ड निवासी जार्ज ज्युटजेलर ने ली थी।

प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात गुरुदेव उम्मेदपुर से मिगसर सुदी १३ को विहार करके पादरली होते हुए तखतगढ़ पधारे। तखतगढ़ से दो मील पर बीटीया नामक गांव है। वहाँ एक वीर के स्थान पर प्रति वर्ष सैंकड़ों बकरों का वध होता था। दैवयोग से गुरुदेव दिनांक ६ दिसम्बर १९३८ को तखतगढ़ से विहार करते हुए लगभग चार बजे बीटीया गांव पधारे। भोपे ने यह बात सुन ली थी कि गुरुदेव इस रास्ते से पधारने पर मुझे जीव हिंसा बंद करने का उपदेश देंगे, इस भय से भोपा पहले ही वीर के मन्दिर से भागकर चार मील दूर किसी दूसरे गाँव में चला गया। गुरुदेव को मालुम हुआ कि भोपा यहाँ नहीं है, तब आपने वहां दो मिनट ठहर कर वीर के स्थान पर अपनी अमी-दृष्टि डाली और विहार कर पोष वदी ३ संध्या समय वांकली पहुँच गये।

रात्रि में उक्त वीर ने भोपे को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि गुरुदेव ने पधारकर अपने

गांव को पवित्र किया है और अब मैं उनका शिष्य हो चुका हूं इस लिए आज से जीव-वध नहीं चाहता हूं। तू अभी गुरुदेव के पास जा और मेरी आज्ञानुसार जीव-हिंसा नहीं करने का गुरुदेव से नियम ले कर आ।

उसी रात्रि में गुरुदेव ने भी भोपे को स्वप्न में दर्शन दिये जिससे उसको दृढ़ विश्वास हो गया। फिर भोपा दिनांक ११ दिसम्बर ३८, रविवार दोपहर में ३ बजे बांकली आया। देश विदेश के सैंकड़ों यात्रियों और संघ की उपस्थिति में गुरुदेव को नमस्कार करके सब स्वप्न आदि का सत्य हाल कह सुनाया। गुरुदेव का उपदेश सुनकर भोपे ने यह नियम ले लिया कि "आज से मैं वीर के स्थान पर या कहीं भी जीव वध नहीं करुंगा।"

अहा! कैसा हृदय परिवर्तन, कैसी अमीदृष्टि!

वांकली में तीन दिन ठहरकर पौष वदी ६ वि.सं. १९९५ को खिवांदी गांव में पधारे। यहाँ ७० वर्ष से समाज में कलह था, उसे मिटाया। आठ दिन तक जनता को भक्ति-सुधा का पान कराया व उपदेश द्वारा सामाजिक सुधार किये। आपने यह व्यक्त किया कि कानून द्वारा समाज सुधार करनें में भ्रष्टाचार बढ़ता है। अतः जनसाधारण को शिक्षित करना चाहिए ताकि वे स्वयं ही कुरीतियों से मुक्त हो सकें।

**पोमावा में प्रतिष्ठा महोत्सव**

वि.सं. १९९५ पोष वदी १३ को गुरुदेव ने पोमावा की तरफ विहार किया। जिनालय में श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिष्ठा तथा शांतिस्नात्र का भी आयोजन किया। तत्पश्चात आप शिवगंज पधारे।

**बड़गांव में समाजिक एकता**

गुरुदेव सुमेरपुर होते हुए बड़गांव आये। यहाँ पर भी समाज में पुराना क्लेश था जिसे मिटाने के लिए गुरुदेव ने भागीरथ प्रयास किया। यहाँ पर महिलाओं ने भी उस क्लेश को मिटाने में सक्रिय भाग लिया। यहाँ तक कि महिलाओं ने अपने अपने घर में कह दिया कि जब तक आप लोग गुरुदेव का कहना नहीं मानोगे तब तक हम रसोई नहीं बनाएंगे। इससे समाज में एकता स्थापित हो गई और सर्वत्र आनन्द की लहर फैल गई।

गुरुदेव बड़गांव से कलापरा, राडबर होते हुए चूली गांव पधारे और डेढ महीने विराजे। वहां ६० वर्ष पुराने कलह को मिटाकर शांति स्थापित की। चूली से विहारकर चार मील पर उथमण नामक गांव में विश्राम किया। यहां रात्रि के समय गुरुदेव ने नगीनदास भगत को साध्वीजी प्रमोद श्री जी को बुलाने भेजा। साध्वीजी ने जाने से इन्कार करते हुए कहा कि गुरुदेव रात्रि में कदापि नहीं बुलाते हैं। थोड़ी देर बाद उपाध्याय मणिसागरजी महाराज भी आए। उन्होंने भी यही संदेश दिया और कहा "शंका की कोई बात नहीं, भगत और मैं तुम्हारे साथ ही चलते हैं।"

तब प्रमोदश्रीजी, राजेन्द्रश्रीजी आदि सब साध्वियाँ साथ में गयीं। उन्होंने वहाँ पहुँचने पर गुरुदेव का बड़ा ही अलौकिक रुप देखा; कई शेर, चीते, सांप, बिच्छुओं के मध्य गुरुदेव विराजे हुए थे। एक सिंह अपना सिर गुरुदेव की गोद में टिकाये हुआ था, गुरुदेव उस पर अपना हाथ फेर रहे थे। साध्वीजी महाराज ने कहा, "गुरुदेव, यह क्या दृश्य देख रही हूँ!" गुरुदेव बोले, "समस्त विश्व अपना परिवार है।"

यहाँ से गुरुदेव अठवाड़ा, पोसालीया, भेव, पालड़ी, वागण, सिरोही, गोहीली, पाड़िव आदि ग्रामों में विचरते हुए अणादरा की ओर पधारे।

**गुरुदेव अणादरा में**

वि. सं. १९९६ के वैसाख सुदी ६ की प्रातः वेला में गुरुदेव अणादरा पहुँचे। यहां वैशाख सुदी ७ के दिन संप्रतिराजा के बनाए हुए प्राचीन जिनालय में प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न करवाया।

यहां गुरुदेव कभी गांव के बाहर एक बंगले में (जो कि जयपुर महाराजा का था) विराजते थे, तो कभी रहट(कुँए) के पास की एक मेड़ी में। कभी आप अणादरा से लगभग ६ - ७ कि.मी. दूर जंगल में पहाड़ों की तलहटी में बने करोड़ीधजजी के सूर्यनारायण मन्दिर में विराजते थे। इस मन्दिर में गुरुदेव ने एक चातुर्मास भी किया। इस मन्दिर में भक्तों द्वारा एक कमरे का निर्माण भी करवाया गया। इस वर्ष सं.१९९६ में मारवाड़ में बिल्कुल वर्षा नहीं होने से सर्वत्र भीषण दुर्भिक्ष फैला हुआ था, किन्तु गुरुदेव के अतिशय पुण्य प्रभाव से अणादरा के आस-पास कुछ वर्षा हो गई थी, जिससे जनता में शांति थी, सब जने आनन्द पूर्वक धर्म ध्यान में अपना समय व्यतीत करते थे। अणादरा से लगभग पांच कि.मी. की दूरी पर माउंट आबू की ओर जाने वाले कच्चे मार्ग पर गुरुदेव के उपदेशों से एक तालाब का निर्माण गाँववासियों तथा गुरुभक्तों के सामूहिक योगदान से करवाया गया। इस तालाब को 'आरेपो' कहते हैं।

अणादरा में स्व. आचार्य श्री विजयनीति-

अणादरा - आबू पर्वत से

मूलनायक भगवान की प्राचीन प्रतिमा →

जिनालय - अणादरा ↓

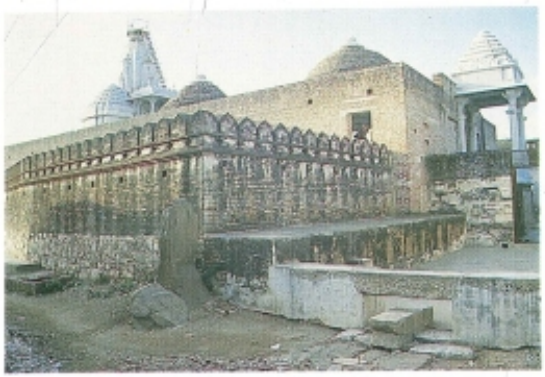

करोड़ीधज का मन्दिर →

पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

महत्तरा पद विभुषीता
प.पू. विनीताश्री जी म.सा.

दीक्षा स्थल - अणादरा

अणादरा से आबू पर्वत

सं. 1996 वसंत पंचमी को गुरुदेव भगवान की स्वर्ण जयंति मनाई गई थी उसके बारह दिन बाद सं. 1996 फागण वद 2 गुरुवार को पादरा (बडौदा) निवासी मोतीलाल पानाचंद जी की पुत्री तारा कुमारी (उम्र 14) व रतिलाल मोहनलाल वकील की पुत्री विद्या कुमारी (उम्र 13 वर्ष) दोनों की दीक्षा आचार्य सम्राट योगीराज की छत्र छाया में गुरुवर्या श्री जैन कोकिला प्रवर्तिनी विचक्षण श्री जी म. सा. की निश्रा में हुई थी क्रमशः नाम तारा का तिलक श्रीजी - विद्या का विनीताश्री रखकर गुरुदेव ने पू. विचक्षण श्रीजी म.सा की शिष्याएं घोषित की।

सूरीश्वरजी महाराज साहब समुदाय के छः साधु-मुनिराज श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनार्थ आये थे। उन साधुओं में श्री उमेद-विजयजी और अशोक विजयजी मुख्य थे। एक दिन श्री अशोकविजयजी महाराज साहब को मन में शंका पैदा हुई कि आचार्य श्री शान्तिसूरीश्वरजी महाराज साहब की फोटो में बाघ-सिंह इत्यादि जानवर दिखाई देते हैं, यह सब होना असम्भव है। श्री गुरुदेव इस वक्त क्या करते हैं उसे देखने के लिए अशोक विजयजी महाराज चाँदनी रात में ११ बजे श्री गुरुदेव के बंगले के आस पास चक्कर काट रहे थे। बंगले के चारों और कांटों की बाड़ थी। श्री गुरुदेव ने अशोक विजय ऐसा नाम लेकर आवाज दी और कहा कि पीछे की ओर से अन्दर आ जाओ। जैसे उन्होंने अन्दर जाने को कदम उठाया कि भय से स्थिर हो गये। उन्होंने श्री गुरुदेव भगवान को दो शेरों के बीच बैठे हुए देखा। गुरुदेव ने उनको कहा कि शेर कुछ भी नहीं करेंगे, डरना नहीं। वे धीरे से अन्दर पहुँचे। शेरों को गुरुदेव ने आज्ञा दी कि अब चले जाओ; वे दोनों शेर पालतु कुत्ते की तरह वहाँ से जंगल में चले गये। बाद में श्री अशोकविजयजी महाराज साहब ने थोड़ी देर श्री गुरुदेव से वार्तालाप किया और वापिस उपाश्रय में आकर सब साधुओं से इस घटना का वर्णन किया। दूसरे दिन सार्वजनिक सभा हुई जिसमें साध्वीजी श्री प्रमोदश्रीजी महाराज साहब तथा अन्य वक्ताओं के भाषण हुए। तब श्री अशोक विजयजी महाराज साहब श्री गुरुदेव के बारे में अपना गत रात्रि का अनुभव सबके सामने जाहिर करने को तैयार हुए, उस समय श्री गुरुदेव ने उन्हें मना कर दिया।

अणादरा में गुरुदेव के वचनों से दो आम के पौधे लगाए गये थे, जो आज विशाल वृक्ष बन गये हैं। इन आम के पौधों को सेठ किसनचन्दजी सिन्ध हैदराबाद से लाये थे। इन आम के वृक्षों पर एक में खट्टे एवं दूसरे में मीठे फल लगते हैं।

अणादरा में उस समय एक महन्त स्वामी बालकदासजी थे। वे भी जाति के रबारी थे। उनका गुरुदेव से बहुत ही घनिष्ट सम्पर्क रहा। यहीं पर गुरुदेव के भक्त अजीबगंज (मुर्शिदाबाद - बंगाल) निवासी रायबहादुर श्री श्रीपाल सिंहजी की धर्मपत्नि श्रीमति रानी केसर कुमारी जी जो गुरुदेव के दर्शनार्थ आईं थी, का स्वर्गवास संवत १९९६ की फाल्गुन सुदी १३ को हुआ। उनके अग्नि संस्कार के स्थान पर एक स्मारक भी बनाया गया।

**योगीराज की निश्रा में दीक्षा**

प्रवर्तनी श्री विचक्षण श्रीजी पर गुरुदेव की महती कृपा थी। वे एक बार आबू से अणादरा पहुँची; उनके साथ दो मुमुक्षु कन्याएँ भी थीं। उनके विशेष निवेदन से वि.सं. १९९६ फाल्गुन मास में शुभ मुहूर्त देखकर हजारों यात्रियों के समक्ष योगीराज विजयशान्तिसूरिजी ने तारा एवं विद्या को विधिवत दीक्षित किया। इन दोंनो को आपने क्रमशः तिलकश्रीजी एवं विनीताश्रीजी नाम दिया। योगीराज के हाथों यह प्रथम व अन्तिम दीक्षा थी।

वि.सं. १९९६ की वसन्त पंचमी के दिन गुरुदेव ५० वर्ष के हो गए थे। उस निमित्त भक्तों ने इस दिन अणादरा में स्वर्ण जयंति मनाने का निश्चय किया। भारत के कोने कोने से बहुत से भक्तजन एकत्रित हो गये। आठ दिन तक खूब धूमधाम व भक्ति के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

यहाँ गाँव के उपाश्रय में प्रमोदश्रीजी आदि साध्वियां ठहरी हुई थीं। संध्या समय जब सब साध्वी मंडल प्रतिक्रमण कर रहा था, अकस्मात एक सफेद सर्पिणी गुरुदेव द्वारा प्रतिष्ठित मन्दिर की ओर से आई और साध्वीजी के पास से होती हुई नृत्य करके सहसा अदृश्य हो गई। प्रातःकाल साध्वीजी जब गुरुदेव को वंदन करने गईं तब गुरुदेव ने कहा कि कल तुम्हारे पास सर्पिणी आई थी क्या ? गुरुदेव के मुख से यह सुनकर सब चकित हो गए। योगसाधना के प्रबल प्रभाव से गुरुदेव को कहीं भी घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान हो जाता था।

अणादरा में आचार्य श्री नीतिसूरिजी – समुदाय के एक मुनिराज गुरुदेव के दर्शनार्थ आये। ये पहले स्थानकवासी सम्प्रदाय में थे। तब इनका नाम दीपचन्दजी था। संध्या समय गुरुदेव गांव के बाहर एक मकान में विराजे हुए थे। ये मुनिराज भी गुरुदेव के पास आकर बैठ गये। गुरुदेव ने उनको स्पर्श करते हुए कहा "डरो तो कोय नी हो" उतने में ही उन्होंने गुरुदेव के स्थान पर एक शेर को देखा। थोड़ी देर में वापस शेर के स्थान पर गुरुदेव दिखाई देने लगे। प्रातः काल सभा में गुरुदेव के व्याख्यान के पश्चात् जब वे मुनिराज अपना यह अनुभव सुनाने के लिए खड़े हुए तब गुरुदेव ने ॐ शान्ति कह कर उन्हें चुप कर दिया और स्वयं सभा में से उठकर कमरे के अन्दर चले गये।

अणादरा में चैत्र सुदी वि. सं.१९९७ में नवपदजी की ओली की आराधना धूमधाम से करवा कर आप आषाढ़ सुदी १३ को देलवाड़ा पहुँच गये।


पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

# समस्त विश्व अपना परिवार है

महान् तपो भूमि

# आबू गिरीराज

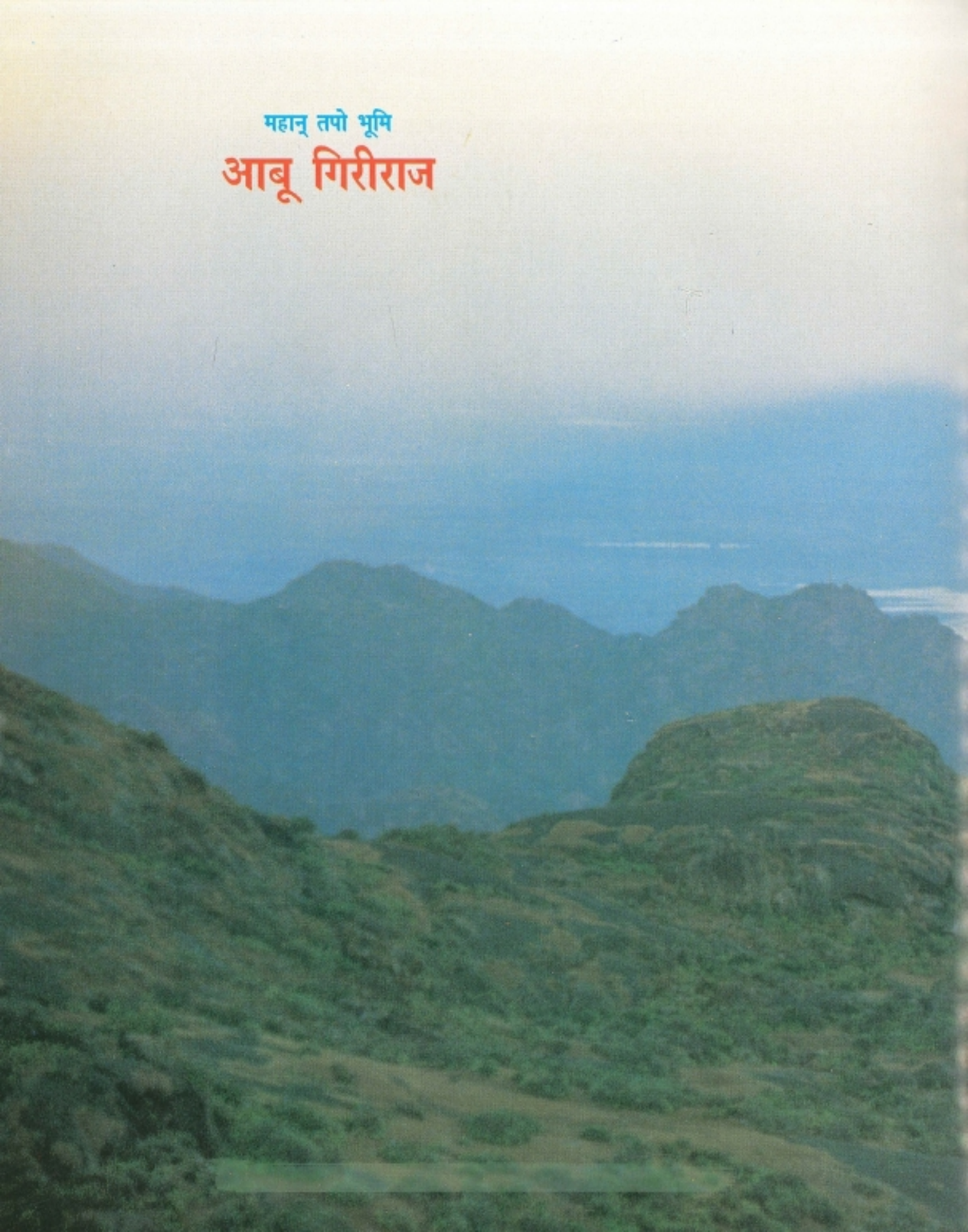

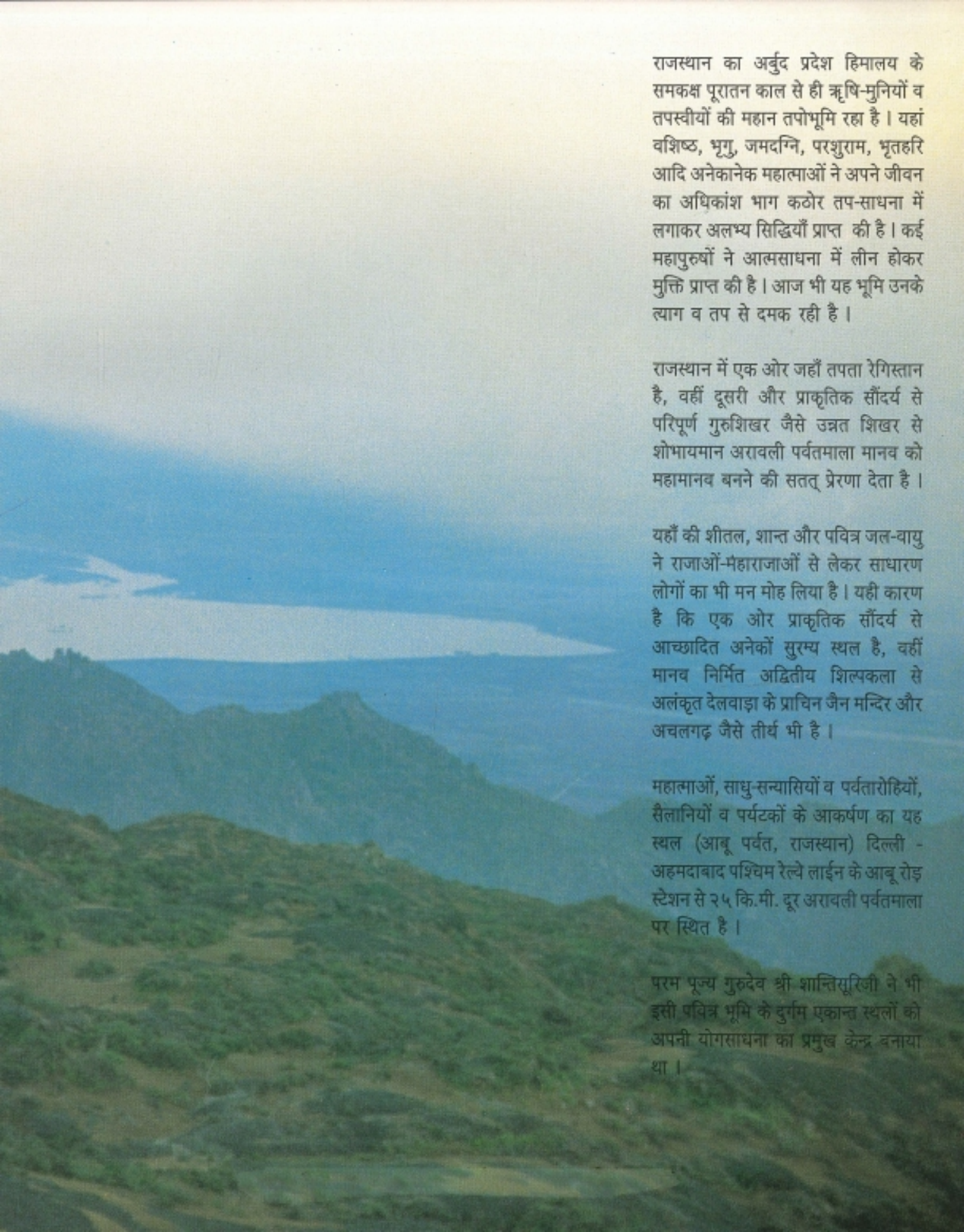

राजस्थान का अर्बुद प्रदेश हिमालय के समकक्ष पूरातन काल से ही ऋषि-मुनियों व तपस्वीयों की महान तपोभूमि रहा है। यहां वशिष्ठ, भृगु, जमदग्नि, परशुराम, भृतहरि आदि अनेकानेक महात्माओं ने अपने जीवन का अधिकांश भाग कठोर तप-साधना में लगाकर अलभ्य सिद्धियाँ प्राप्त की है। कई महापुरुषों ने आत्मसाधना में लीन होकर मुक्ति प्राप्त की है। आज भी यह भूमि उनके त्याग व तप से दमक रही है।

राजस्थान में एक ओर जहाँ तपता रेगिस्तान है, वहीं दूसरी और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण गुरुशिखर जैसे उन्नत शिखर से शोभायमान अरावली पर्वतमाला मानव को महामानव बनने की सतत् प्रेरणा देता है।

यहाँ की शीतल, शान्त और पवित्र जल-वायु ने राजाओं-महाराजाओं से लेकर साधारण लोगों का भी मन मोह लिया है। यही कारण है कि एक ओर प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित अनेकों सुरम्य स्थल है, वहीं मानव निर्मित अद्वितीय शिल्पकला से अलंकृत देलवाड़ा के प्राचिन जैन मन्दिर और अचलगढ़ जैसे तीर्थ भी है।

महात्माओं, साधु-सन्यासियों व पर्वतारोहियों, सैलानियों व पर्यटकों के आकर्षण का यह स्थल (आबू पर्वत, राजस्थान) दिल्ली - अहमदाबाद पश्चिम रेल्वे लाईन के आबू रोड़ स्टेशन से २५ कि.मी. दूर अरावली पर्वतमाला पर स्थित है।

परम पूज्य गुरुदेव श्री शान्तिसूरिजी ने भी इसी पवित्र भूमि के दुर्गम एकान्त स्थलों को अपनी योगसाधना का प्रमुख केन्द्र बनाया था।

**शान्ति आश्रम**

गुरूदेव जब भी माउण्ट आबू पधारते थे तो तलहटी पर तालाब के किनारे एक ऊँची चट्टान पर स्थित शांति आश्रम में जरुर ठहरते थे। यहाँ एक गुफा में छोटा कमरा है, जिसमें एक छोटी खिड़की भी है। गुरुदेव जहाँ जहाँ भी कमरों में ठहरे वहाँ एक ही प्रकार के पक्के बिछौने (पाट) देखने को मिलते है।

यहाँ गुरुदेव ने राहगीरों के लिए एक प्याऊ व पशुओं के लिए एक तालाब का भी निर्माण करवाया था।

यहाँ एक धर्मशाला और उपाश्रय भी है, जहाँ पैदल यात्रा करने वाले साधु-साध्वी व यात्री

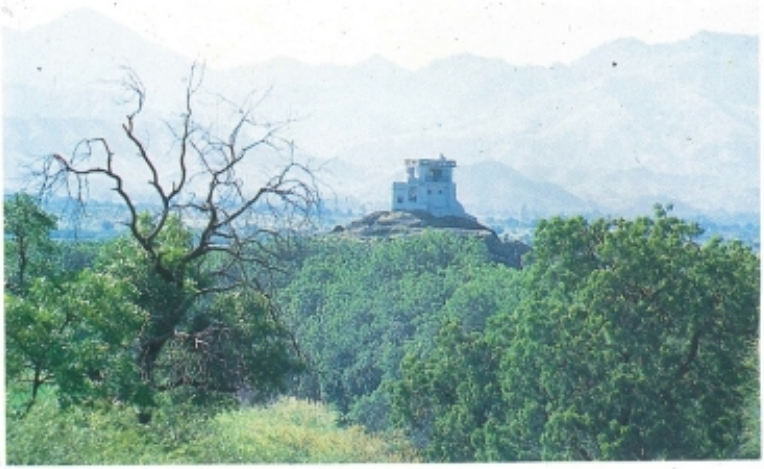

शान्ति आश्रम - तलहटी - आबू रोड़

← गुरुदेव का कमरा

शान्ति आश्रम ↓

गुरुदेव का चन्दन का पाट

ठहर सकते है। यहाँ चंदन का बना एक पाट भी है जो गुरुदेव उपयोग में लाया करते थे, जिस पर गुरुदेव की एक ध्यानस्थ छवि रखी हुई है । निर्वाण के बाद अचलगढ़ से माण्डोली जाते समय एक रात के विश्राम में इसी पाट पर गुरुदेव की पालखी रखी थी। यहाँ की व्यवस्था श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी द्वारा देखी जाती है ।

गुरुदेव के सभी साधना स्थल ऐसे बने है जहाँ से प्रकृति के अनुपम दृश्य देखे जा सकते है।

शांति आश्रम से ही आबू पर्वत की मुख्य चढ़ाई प्रारम्भ होती है ।

# श्रीमान् योगनिष्ठ महाराज श्री शांतिविजयजी

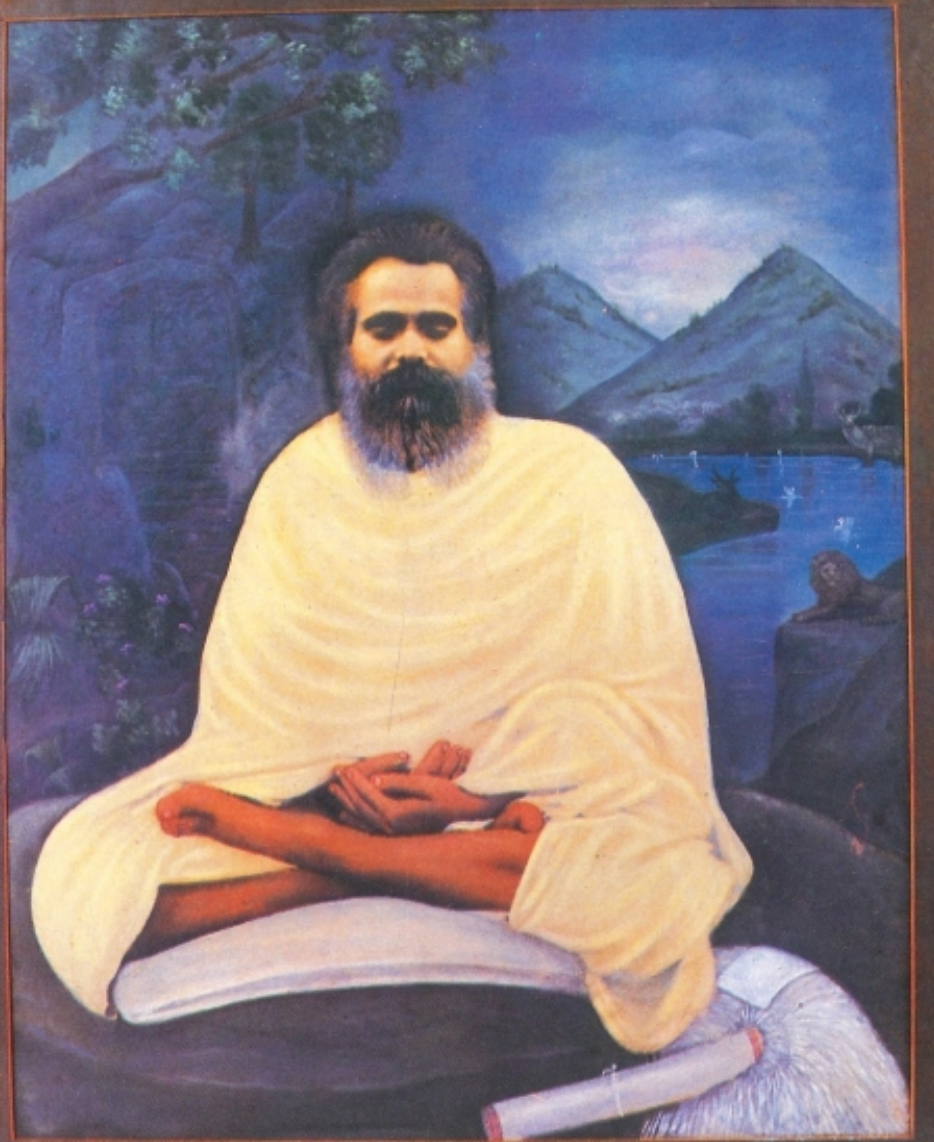



पृष्ठ प्रदत्त देवीचन्द लक्ष्मीचन्द वैद, वैलूर

वि.सं. १९८० में गुरुदेव अति रमणीय तपोभूमि आबू गिरिराज पर ध्यान हेतु चले गये । कभी गुरु शिखर की गुफाओं में तो कभी अचलगढ़ की गुफाओं में, कभी वशिष्ठ आश्रम गोमुख, कभी सफेद गुफा, लाल गुफा में समाधिस्थ अवस्था में विराज जाते थे । वि.सं. १९८५ में आपने चातुर्मास आरणा में किया जो आबूरोड और माऊन्ट आबू के बीच में स्थित है, वहाँ जिन मन्दिर भी है । गुरुदेव वहाँ किसी चट्टान पर बैठकर लगातार ध्यान समाधि में मग्न रहते थे । ऐसा अनुमान है कि यहाँ पर आपको पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो गई थी । शास्त्रों में इनका उल्लेख "प्रतिभा ज्ञान" या "अनुभव ज्ञान" नाम से किया गया है ।

उपाश्रय - आरणा - माउंट आबू

माउण्ट आबू का विहंगम दृश्य

**शान्ति शिखर**

अधर देवी के ऊपर का शिखर जिसे अभी शांति शिखर कहते हैं, वहाँ लगातार मौन पूर्वक कई दिन रात ठंड और जंगली जानवरों की बिना परवाह किये आप ध्यान मग्न रहते थे ।

शान्तिशिखर पर आम के दो वृक्ष हैं उन की छांव में एक चबूतरा बना हुआ हैं। इन्हीं आम्र वृक्षों के नीचे गुरुदेव ध्यान एवं आत्म साधना किया करते थे ।

शान्ति शिखर, माउंट आबू

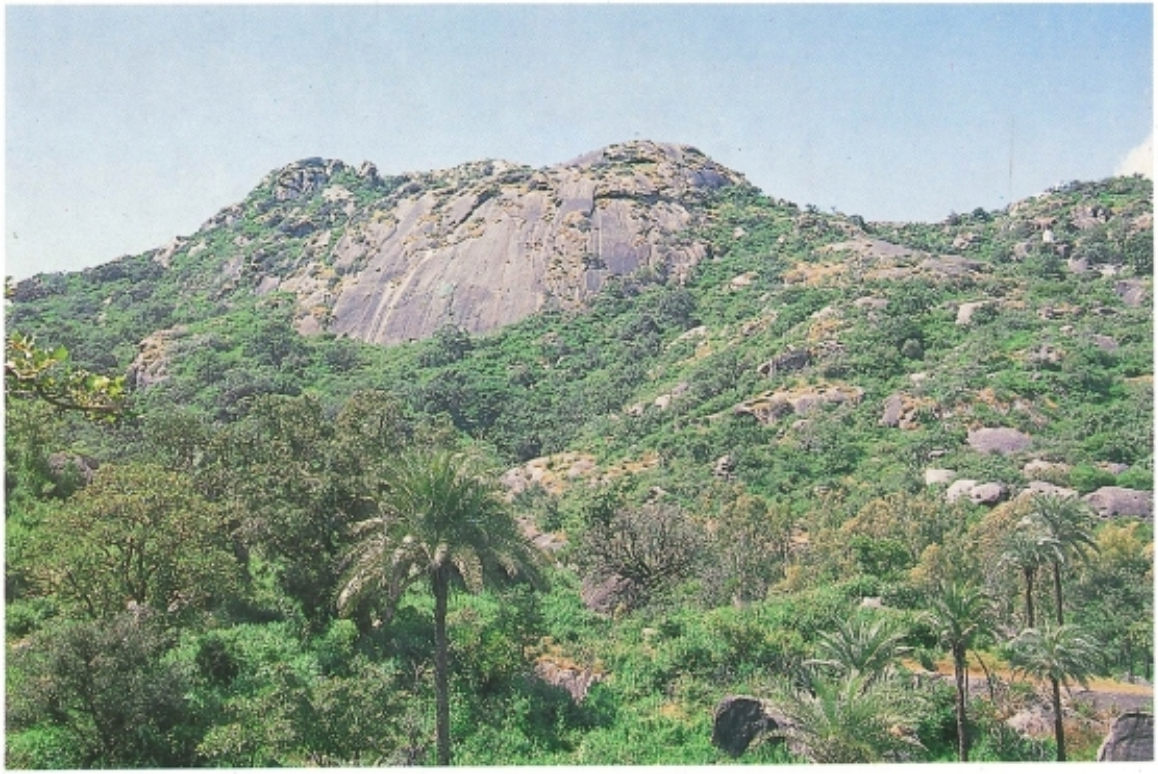

आम्रवृक्ष - शान्ति शिखर

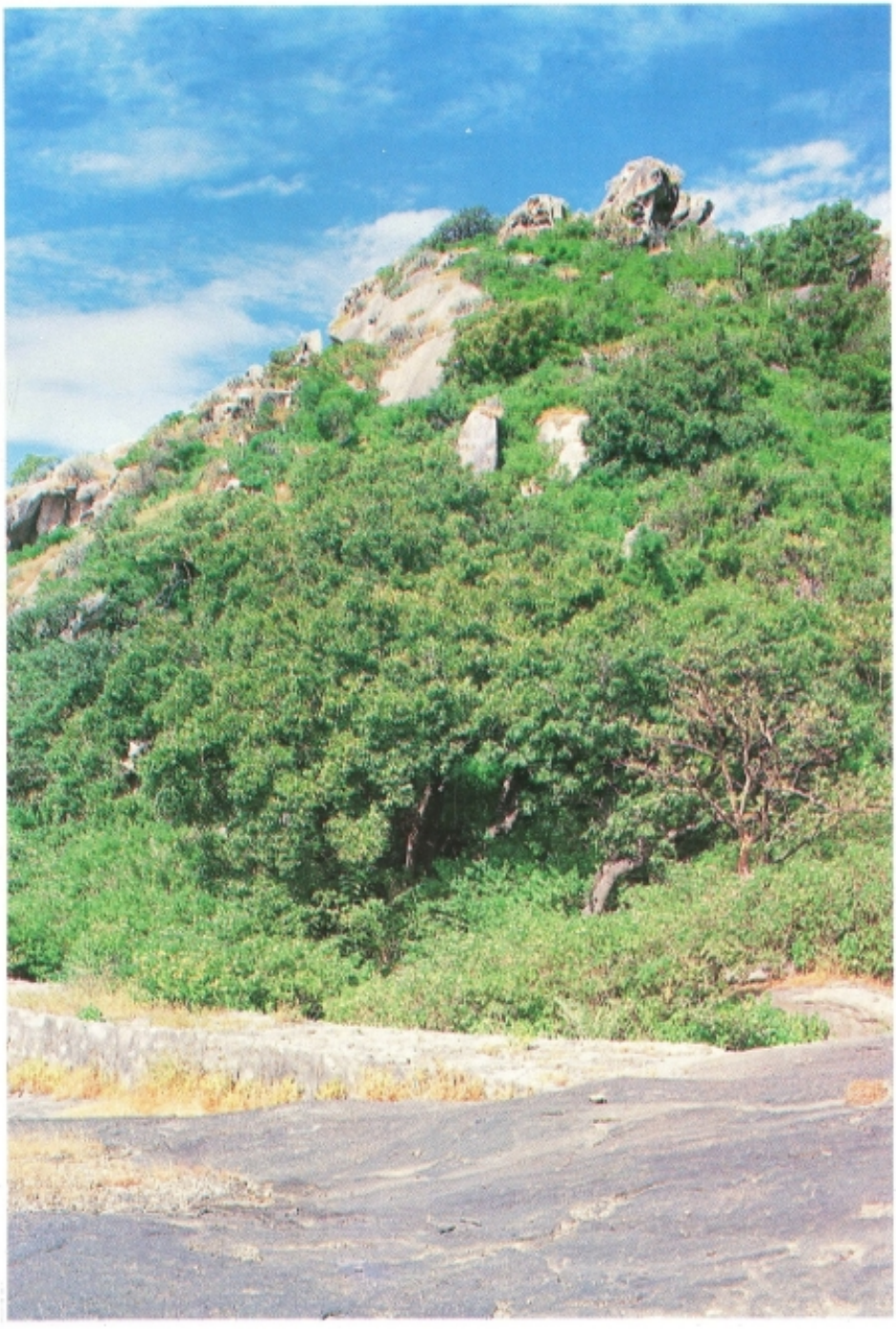

पृष्ठ प्रदत्त | विनय कांकरिया धर्मपत्नि सुषमा कांकरिया - अहमदाबाद

वशिष्ठ आश्रम की दुर्गम घाटी

आरणा के बाद एक चातुर्मास वि.सं. १९८१ में वशिष्ठ आश्रम (गोमुख) में किया। इस काल में वहाँ बहुत ठंड व बहुत ही वर्षा होती थी। कुहरा इतना रहता था कि कुछ भी द्रष्टिगोचर नहीं होता था। इस कड़ाके की ठंड में भी गुरुदेव केवल कोपीन (लंगोट) पहिने हुए महीनों पर्यंत ध्यान मग्न रहे। आश्रम में स्वर्णचंपा वृक्ष के नीचे आप आत्म साधना किया करते थे। इन दिनों कई योगी महात्मा भी आपके संपर्क में आये थे।

↓ वशिष्ठ आश्रम - माउंट आबू

गुरुदेव वशिष्ठ आश्रम से नीचे एक मील पर जमदग्नि ऋषि की गुफा में भी ध्यान करते थे। गोचरी का प्रबन्ध पं. लक्ष्मी शंकरजी करते थे। दिन भर में एक बार आहार पानी लेते थे। मौन, उन्मिलनवत् चक्षु से आप काउसग्ग मुद्रा में आदर्श ध्यान में रहते। एक दिन गोचरी लेकर लक्ष्मीशंकरजी पहुंचे तो देखा कि गुरुदेव के सम्मुख एक सर्पणी ("श्वेत पद्म नागिन") छत्र करके ध्यान में बैठी है। नागिन की लाल आंखें और बड़ी बड़ी सफेद बालों की मूछें थी। योगिराज नेत्र बन्द कर के ध्यान में थे, यह दृश्य देखकर

पं. लक्ष्मीशंकरजी भी पास में बैठ गये। गुरुदेव ने नागिन की ओर अद्वैत अमृतदृष्टि से देखा। फिर नागिन जल कुण्ड में प्रवेश कर गयी, तत्पश्चात् आपने पण्डितजी को संकेत दिया जिससे वे ऊपर के मन्दिर में चले गये, लेकिन रातभर उन्हें नींद नहीं आई, वही ध्यान आता रहा।

स्वर्णचम्पा के वृक्ष - वशिष्ठ आश्रम
माउण्ट आबू

देलवाड़ा में ही मंदिर के पीछे जंगल में लाल गुफा एवम् श्वेत गुफा में भी गुरुदेव भगवान ध्यान करने पधारते थे।

लाल गुफा

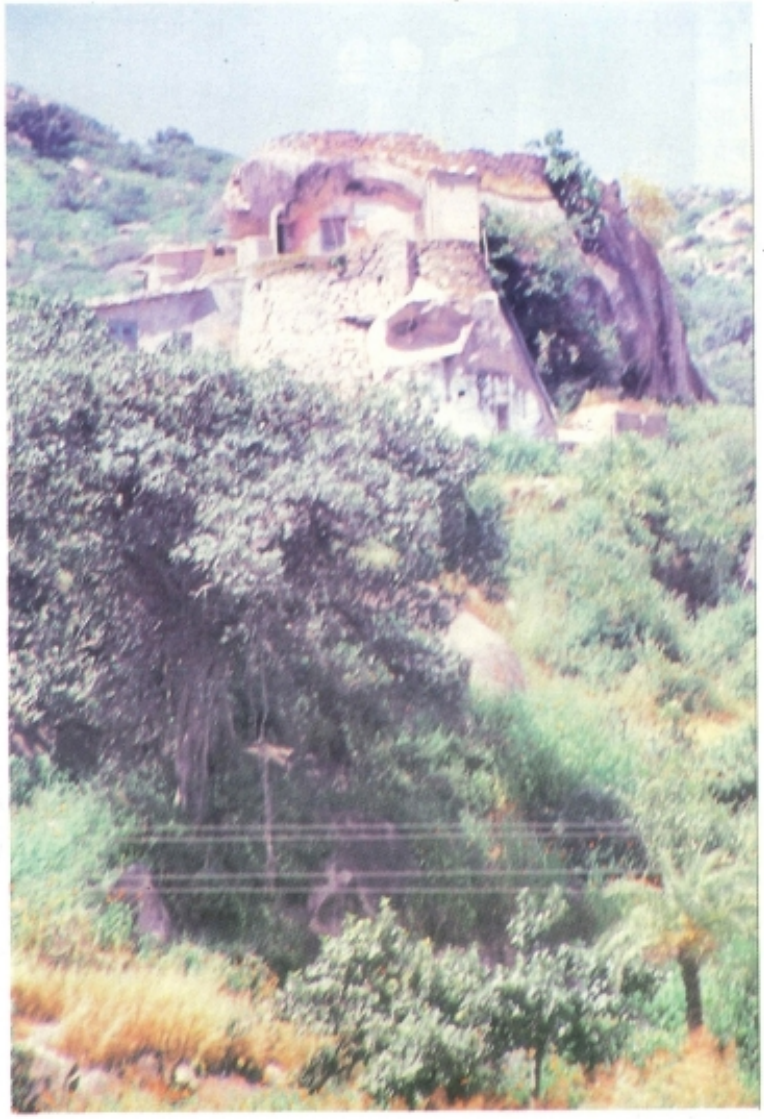



इन दिनों वड़ताल (गुजरात) के श्री स्वामी नारायणजी के अध्यक्ष मण्डलेश्वरजी ने अपने चार शिष्यों को वशिष्ठ आश्रम में योगिराज से आदेश प्राप्त करने के लिए भेजा क्योंकि उनके शरीर में लकवा हो गया था। गुरुदेव की आज्ञा मिलने पर वे उसी समय वड़ताल पहुँचे और बड़े अधिकारीजी को ले आए। वशिष्ठ आश्रम की ७०० सीढ़ियाँ डोली द्वारा उतर कर मन्दिर आए, लकवे से चलना-फिरना दूभर था । इतने में योगिराज भी रमते-रमते मन्दिर में आए । दोनों महात्माओं का सत्संग समागम हुआ । मण्डलेश्वरजी ने भेंट के रूप में धनराशि योगिराज के चरणों में रखी, योगिराज बोले ये रूपये आपके, आपको ही अर्पण हैं, हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं, आप ले लो। तब उन्होंने रूपये वापस उठा लिए और निरोग होने का आशिर्वाद मांगा। तब योगिराज ने करुणामय नेत्रों से उन्हें देखा, जिससे उनका लकवा दो दिन में ठीक हो गया। ७०० सीढ़ियाँ चढ़ने की शक्ति आ गई। अतः प्रसन्न हो कर योगिराज की जयजयकार करते हुए वे अपने स्थान वड़ताल (गुजरात) चले गये।

गुरुदेव का प्रकृति से इतना सामंजस्य था कि योगावस्था में जब कभी आप आनंदित होते तो वृक्षों के साथ भी वार्तालाप कर लेते थे जैसे कोई दो पण्डितों के बीच शास्त्रार्थ हो रहा हो।


पृष्ठ प्रवत्त कान्तिलाल चम्पालाल जैन, जोधपुर

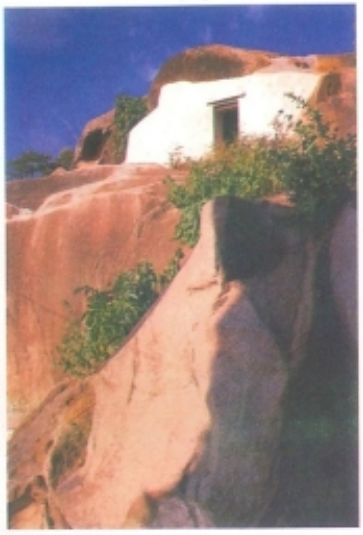

गणेश गुफा

गणेश मन्दिर

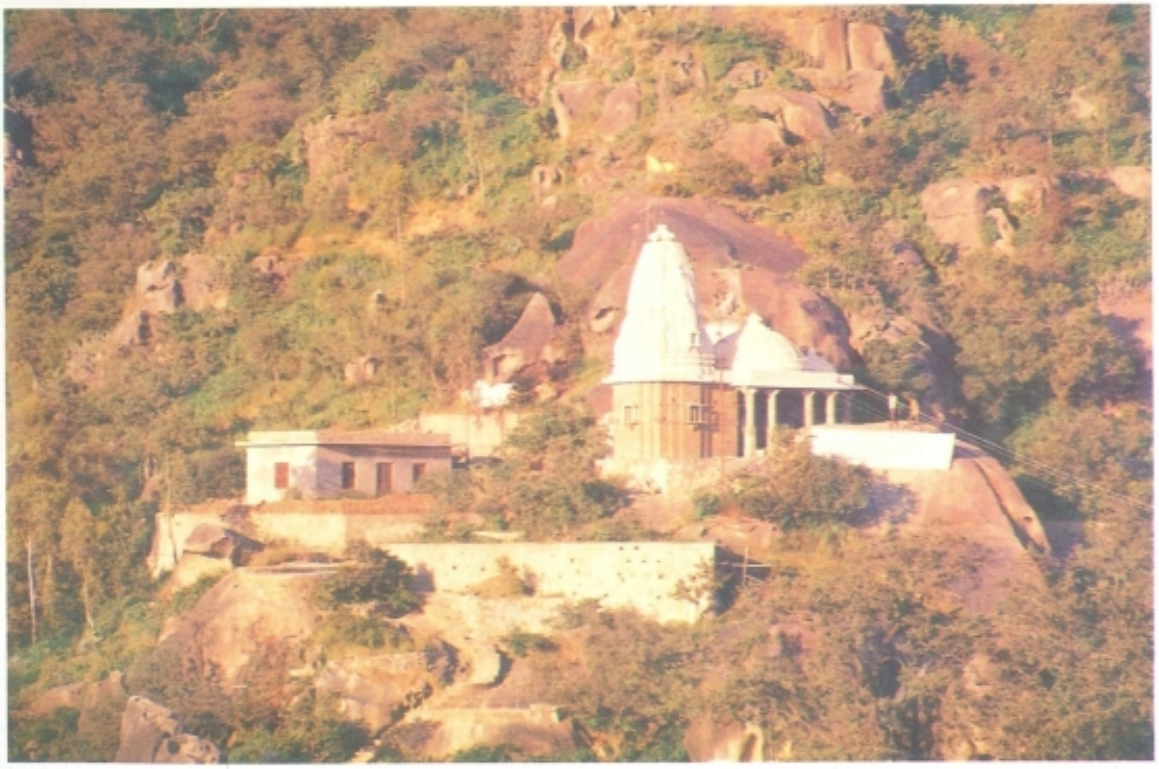

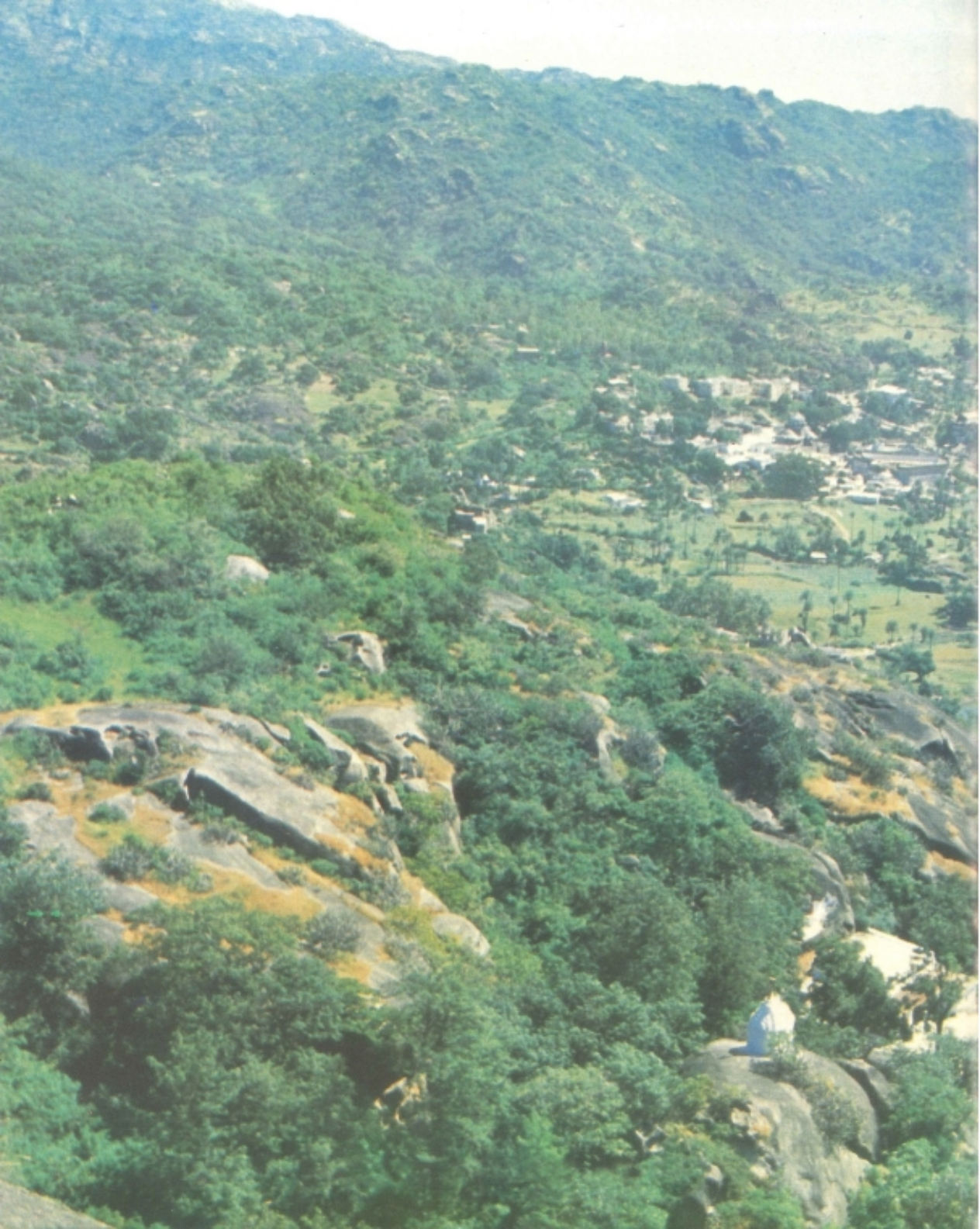

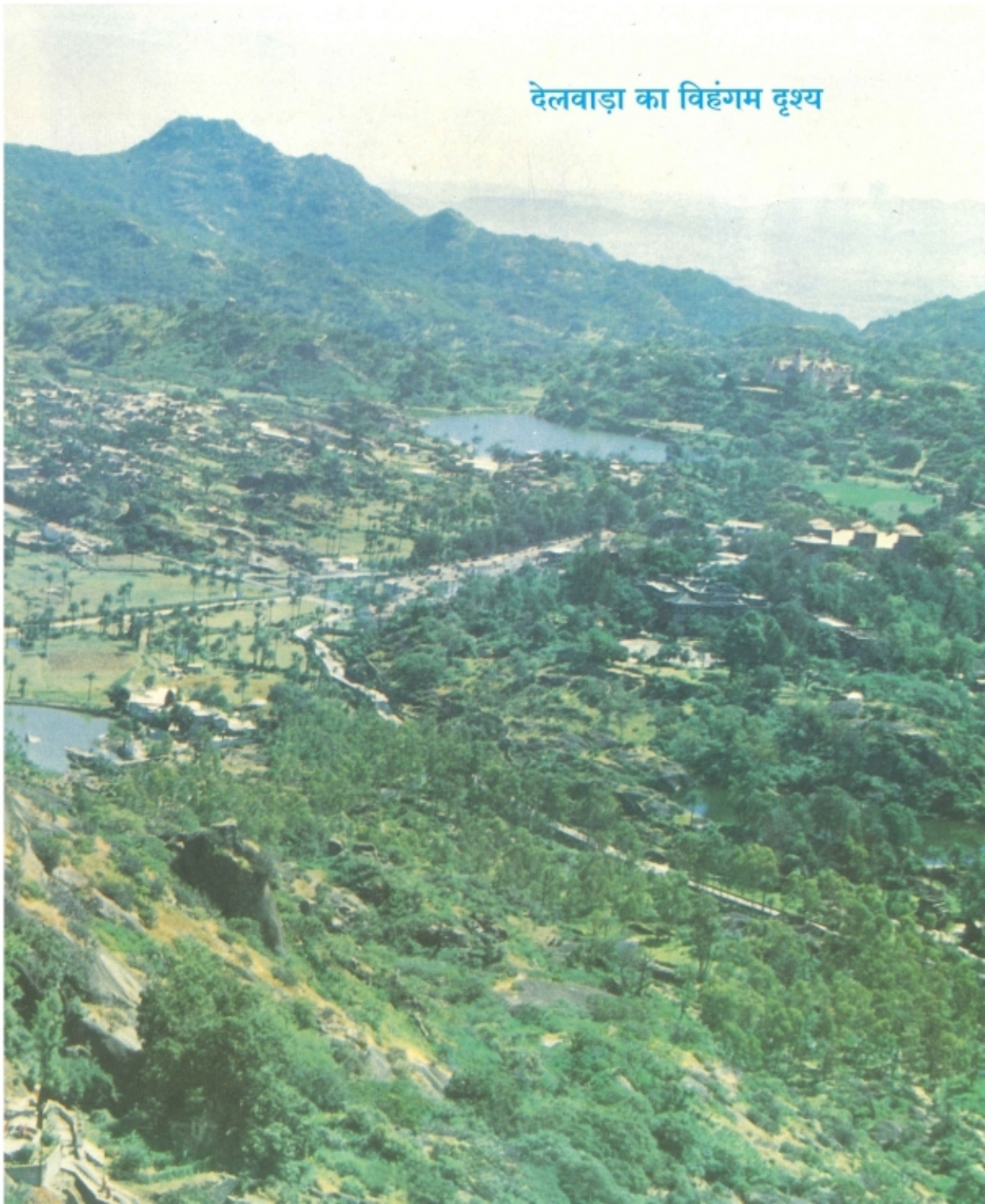

देलवाड़ा का विहंगम दृश्य

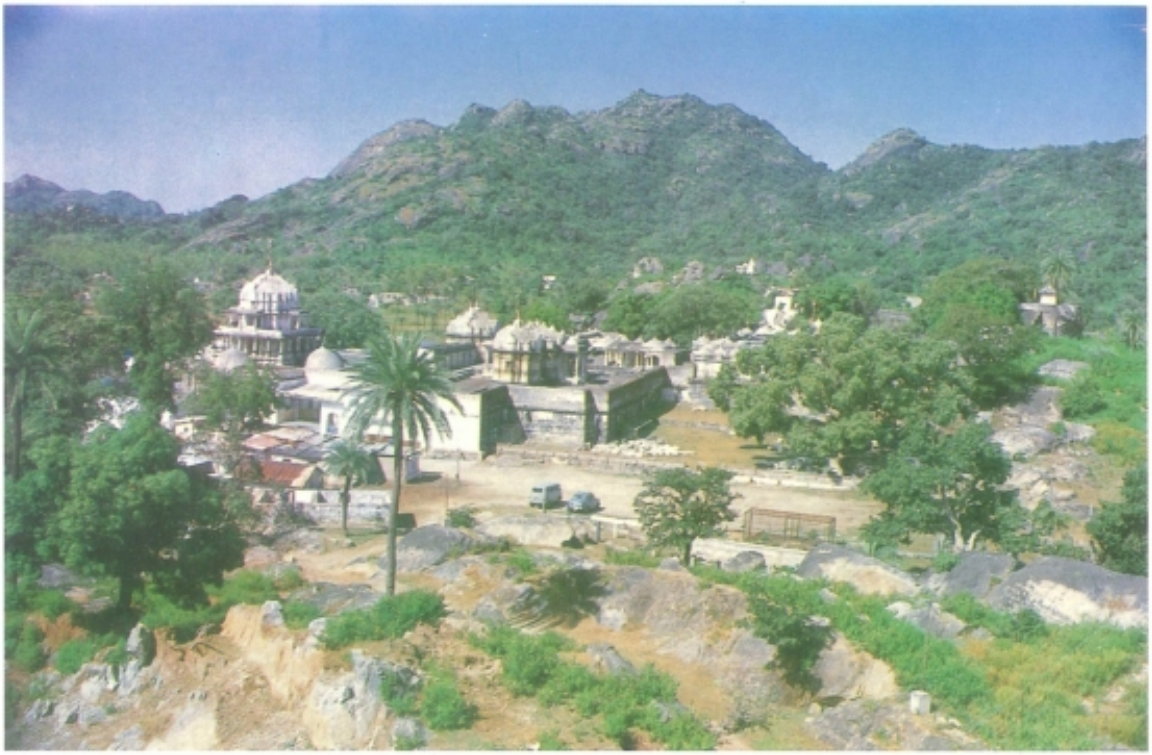

विश्वविख्यात देलवाड़ा के जैन मन्दिर

## अहिंसा का दिव्य संदेश

वि.सं. १९८९ में जब गुरुदेव देलवाड़ा तीर्थ में विराजते थे तब आपने अहिंसा का दिव्य संदेश दूर-दूर तक भेजा । उस समय प्रत्येक नगर और गांव में नवरात्रि एवं दशहरा के त्यौहारों पर धर्म के नाम पर जीव हिंसा होती थी, उसे रोकने के लिए गुरुदेव ने भारत के सभी राजा-महाराजाओं को तार द्वारा संदेश भेजा था । बहुत से नरेश गुरुदेव के आत्मबल और चमत्कारों से प्रभावित थे । इस संदेश का सभी रजवाड़ों पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा और इस संदेश को स्वीकार करके छोटे मोटे ४५ से अधिक नरेशों ने अपने-अपने राज्य में जीव-हिंसा बन्द करने की व्यवस्था की

और उसके शुभ समाचार उन्होंने तार और पत्रों द्वारा गुरुदेव को भेजे । यही गुरुदेव के वचनों की महान् सिद्धि थी । जिन रजवाड़ों ने 'हिंसा बन्द' के तार भिजवाये उनमें मुख्यतः भावनगर, रोहिट (पाली), मालीया, ध्रोल स्टेट, पाटरी स्टेट, इन्दौर स्टेट, जोबनोर, चाणोद, निम्बाज, ग्वालियर, मैसूर, सिरोही ध्रांध्रा, धौलपुर, रीवां, वाव, सीकर, धरमपुर, वडिया, थाणा देवली, वांकानेर, लुणावडा, छोटा उदैपुर, सीतामऊ, राजपीपला, वांसदा स्टेट, जोजावर, मोरबी, प्रतापगढ़, देवगढ़ मदारिया, वला स्टेट, सुदासणा, सायला, पेथापुर, कालन्द्री, खुड़ाला, नाना, झाबुआ स्टेट, धामोतर (मालवा), पोकरण, पालीताणा, बरगांव, दासपां, मांगरोल, सांचोर, दीगोर देवड़ा एवं रोल परगना आदि हैं ।

देवरानी जेठानी का गोखरा - देलवाड़ा के जैन मन्दिर

देलवाड़ा में गुरुदेव गिरनारी गुफा में विराजते थे । देलवाड़ा में वस्तुपाल तेजपाल द्वारा निर्मित नेमीनाथ भगवान के मन्दिर के पास से ऊपर जाने का रास्ता है। गिरनारी गुफा दो पेड़ों के बीच (एक पेड़ जामुन का व दूसरा पीपल का) स्थित है । इसी गुफा के पास एक कमरा बना हुआ है जिसमें गुरुदेव विराजते थे । गुरुदेव ने निर्वाण के पश्चात् स्विट्जरलैण्ड निवासी जार्ज जुटलेजर को इसी स्थान पर दर्शन दिये थे ।

गिरनारी गुफा - देलवाड़ा





पृष्ठ प्रदत्त मै. गुरुदेव मोटर्स, चैन्नई

गिरनारी गुफा - देलवाड़ा

गुरुदेव ने अपने जीवन में ज्ञान, ध्यान व साधना का अधिकांश समय आबू पर्वत के घने जंगलों - गुफाओं एवं नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण एकांत स्थलों में व्यतीत किया और देलवाड़ा व अचलगढ़ में एक से अधिक चातुर्मास भी किये । गुरुदेव भगवान कार्तिक सुदी १ वि. सं. १९८६ (दिपावली) में देलवाड़ा विराजे थे । आपके सानिध्य में वि.सं. १९८७ की गुरु पूर्णिमा देलवाड़ा में बड़ी धूम-धाम से मनाई गई । वि.सं. १९८९ एवं १९९४ का चातुर्मास आपने देलवाड़ा में किया । आषाढ़ सुदी १३ वि. सं.१९९७ को अणादरा से विहार कर चातुर्मास करने हेतु आप देलवाड़ा पधारे । चातुर्मास पश्चात् शनिवार दि. १६-११-४० को विहार कर आप अचलगढ़ पधारे और फिर जीवन पर्यन्त वहीं रहे ।

वि. सं. १९८७ में गुरुदेव देलवाड़ा (आबू) में विराजते थे। उस समय जॉर्ज ओग्लीव की नियुक्ति वहाँ हुई थी। तीन वर्ष पूर्व जब जॉर्ज ओग्लीव एक साधारण पद पर नियुक्त थे तब बीकानेर नरेश के कहने पर गुरुदेव के दर्शनार्थ आये थे। उस वक्त गुरुदेव ने फरमाया था कि तुम्हारी नियुक्ति अब राजपुताना के ए.जी.जी. के पद पर होगी। उस समय उन्होंने मन में यह निश्चय किया था कि मैं उस कुर्सी पर बैठने के पहले गुरुदेव के चरणों में उपस्थित होकर फिर अपना कार्य भार सम्भालुंगा। तीन वर्ष बाद जब उनकी नियुक्ति इस पद पर हुई, तब वे इस बात को भूल ही गये थे। गुरुदेव ने धन तेरस के दिन एक सूत की माला जार्ज ओग्लीव को भेंट स्वरुप भेजी। तुरन्त ही उनकी स्मृति ताजी हो गई और अपनी प्रतिज्ञा याद आई। अतः बिना विलम्ब किये हुए वे गुरुदेव के चरणों में आशीर्वाद लेने देलवाड़ा पहुँचे। बाद में अपना पदभार ग्रहण किया।

बीकानेर हाउस का बाहरी दृश्य

बीकानेर हाउस का भीतरी दृश्य

इन्हीं दिनों गुरुदेव के दर्शनार्थ अलवर दरबार, भाद्राजून, पाटण आदि कई नरेश आए थे। बीकानेर नरेश सर गंगासिंह जी भी अपने दोनों कुंवर सहित पधारे थे। इन सब के बैठने के लिए सुंदर गलीचा बिछाया गया था, पर गंगासिंह ने पैर से गलीचा हटाते हुए कहा कि गुरुदेव के समक्ष हमें गलीचे पर नहीं वरन् नीचे बैठना चाहिए।

इसी वर्ष महात्मा गांधी ने देश की आजादी के लिए सत्याग्रह प्रारम्भ किया था और स्थान



पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसरबाई चम्पालाल लूकड़, फलोदी-जोधपुर

-स्थान पर सत्याग्रही राजनैतिक कैदी बनाए गये थे। कई भक्तों ने श्री गुरुदेव से प्रार्थना की कि गांधी जी आदि राजनैतिक कैदी छूट जाने चाहिए। गुरुदेव ने कई दिन पहले उन्हें कह दिया था कि गांधीजी आदि छूट जाएंगे और कांग्रेस के साथ अंग्रेज सरकार समाधान करने की घोषणा दिनांक ४-३-३१ को कर देगी। गुरुदेव के बताये हुए समय पर दिनांक ४-३-३१ को ही ब्रिटिश सरकार ने गांधी इरविन पेक्ट की घोषणा की और राजनैतिक कैदी छोड़ दिये। श्री गुरुदेव की यह भविष्यवाणी उस वक्त "बम्बई समाचार" में प्रकाशित हुई थी।

वि.सं. १८८८ की गुरुपूर्णिमा माउन्ट आबू में लींबड़ी नरेश की कोठी के सामने नरेश द्वारा निर्मित "समर हिल" बंगले में धूम धाम से मनाई गई। उस वक्त श्री गुरुदेव के चरणों में कई रजवाड़ों की तरफ से सैकड़ों थाल मेवा-मिठाई से भरे हुए आये थे। प्रत्येक दर्शनार्थी को रुपया नारियल की प्रभावना बांटी गई थी। इस प्रकार २२०० नारियल प्रभावना में सेठ हीराचन्दजी कालन्द्री वालों की तरफ से बांटे गये थे।

इन्हीं दिनों जामनगर दरबार श्री दिग्विजयसिंहजी भी आपके दर्शनार्थ पधारे थे। अमेरिकन लेखिका श्रीमती नीलाक्रेमकुक भी कुछ समय पहले यहां आकर रही थी। इसी वर्ष गुरुदेव के उपदेश से माउन्ट आबू पर पशु चिकित्सालय खोला गया था। उसमें सेठ साहब किशनचन्दजी लेखराजजी ने बड़ी रकम का दान दिया था। तदुपरांत कई भक्तों ने इसमें अच्छी रकम दी थी। संभवतः यह पशु चिकित्सालय राजस्थान का सबसे पुराना यानि प्रथम अस्पताल है। इस अस्पताल का नाम गुरु श्री शान्ति विजय पशु चिकित्सालय रखा गया।

समरहिल बंगला - माउन्ट आबू

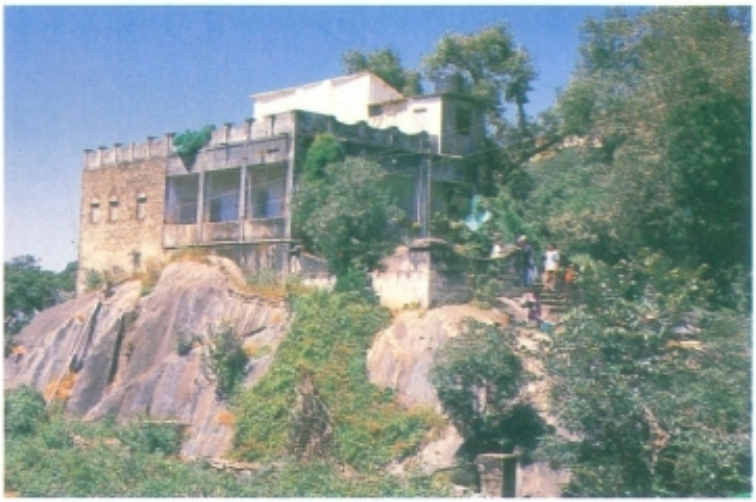

गुरु श्री शान्तिविजयजी राजकीय पशु चिकित्सालय - माउन्ट आबू

गुरु मन्दिर - माउंट आबू

## माउंट आबू में गुरुदेव के अन्य स्थल

पृष्ठ प्रदत्त संजय सुराणा, बैंगलोर

←गुरु श्री शान्ति विजय पार्क - माउंट आबू

गुरु श्री शान्तिविजयजी आयुर्वेदिक अस्पताल - माउंट आबू

गुरुदेव की प्रतिमा

शान्ति सदन में गुरुदेव की प्रतिमा ↑

शान्ति सदन का कमरा ↑

↓ शान्ति सदन - माउंट आबू

पृष्ठ प्रदत्त श्रीमती सिम्मी सुरेन्द्र कुमार लोढ़ा, जोधपुर

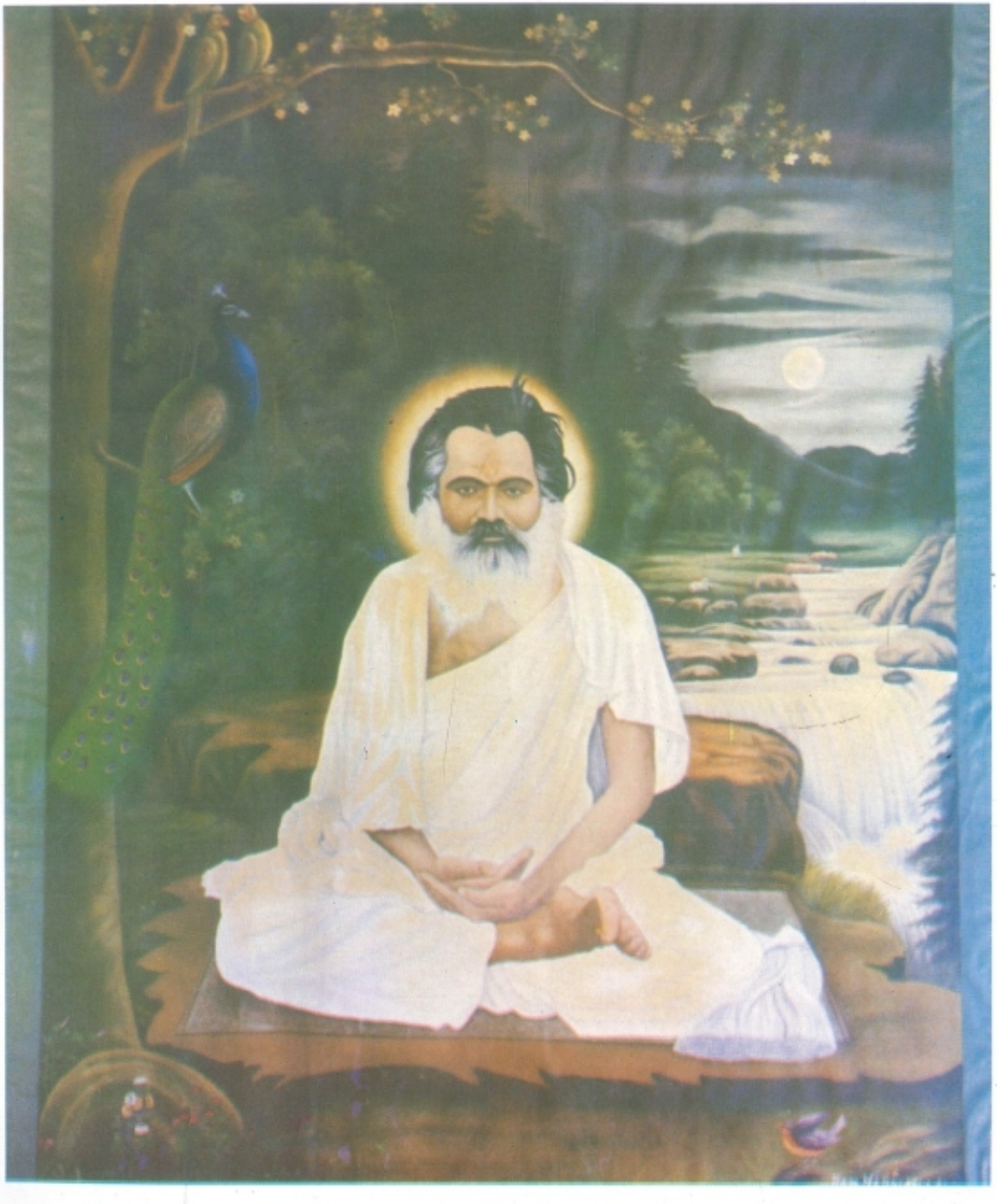

पृष्ठ प्रदत्त | प्रकाशचन्द - पंकज सुराणा, जोधपुर-हैदराबाद

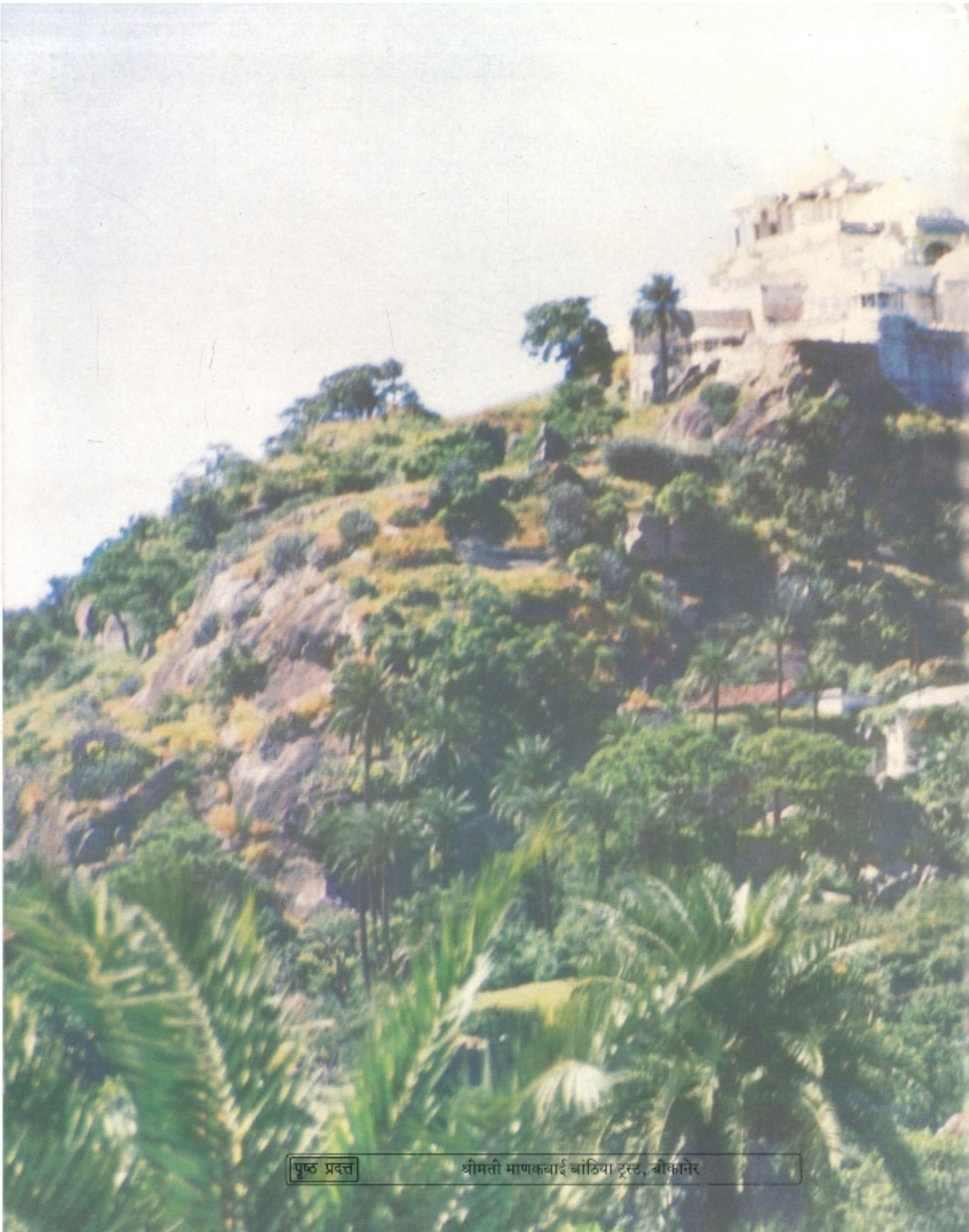

पृष्ठ प्रदत्त श्रीमती माणकबाई चांठिया ट्रस्ट, बीकानेर

अचलगढ़ के जैन मन्दिर

वि.सं. १९९३ श्री अचलगढ़ तीर्थ

आबू पर्वत के उन्नत शिखरों पर स्थित अचलगढ़ तीर्थ विख्यात है । मेवाड़ के महाराणा कुंभा के मंत्री शेठ धरणाशाह पोरवाल द्वारा निर्मित भगवान आदिनाथ को समर्पित इस मंदिर में धातु की कुल १८ प्रतिमाएँ हैं व उनका वजन १४४४ मन कहा जाता है । इन प्रतिमाओं की चमक व वर्ण से प्रतीत होता है कि इनमें सोने का अंश ज्यादा है । इतनी विशालकाय धातु की प्रतिमाएँ अन्यत्र नहीं हैं । इन प्रतिमाओं का डुंगरपुर के कारीगरों द्वारा बनाया जाना माना जाता है । महाराणा कुम्भा द्वारा वि.सं. १५०९ में निर्मित दुर्ग के अवशेष भी हैं । आबू के योगीराज विजय शान्तिसूरीश्वरजी की अंतिम तपोभूमि व निर्वाणभूमि भी यही है । गुरुदेव ने यहाँ कुंथुनाथ भगवान के मंदिर की प्रतिष्ठा भी करवाई । वे इस मंदिर के समीप एक कमरे में विराजते थे । यह कमरा पाटण निवासी नगीनादास कर्मचन्द संघवी ने गुरुदेव के लिए बनवाया था । गुरुदेव का निर्वाण भी इसी कमरे में हुआ था । इसके अतिरिक्त मुख्यमंदिर के ऊपर एक पहाड़ी पर बने कमरे में भी गुरुदेव ध्यान किया करते थे । आनन्दघंदजी सीपानी द्वारा निर्मित इस कमरे का नाम आनन्द आश्रम था । गुरुदेव के देवलोक होने के बाद इस कमरे में उनके परम भक्त स्विट्जरलैण्ड निवासी जार्ज ज्युटजेलर भी काफी समय इस कमरे में साधना करते रहे । जार्ज का अन्तिम समय पावापुरी में निकला एवं इनका स्वर्गवास राजगृही में हुआ ।

अचलगढ़ तीर्थ

पृष्ठ प्रदत्त श्रीमती राजूदेवी स्व. श्री डालमचन्द बांठिया, कोलकत्ता

अचलगढ़ का भव्य दृश्य

जोर्ज ज्युटजैलर

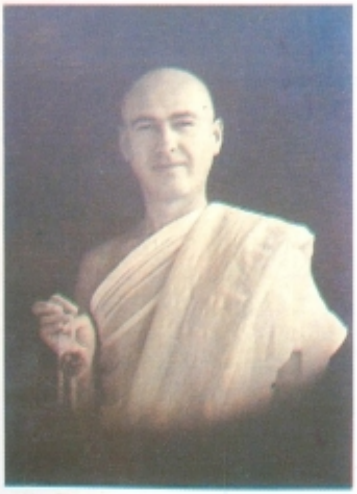

श्री पुंडल तीर्थोद्धारक आत्मानुरागी स्वामी श्री रिखबदासजी द्वारा रचित "आबू के योगीराज" पुस्तक में अनेकों चमत्कारिक व अलौकिक घटनाओं का आँखों देखा वर्णन है। उनमें से एक वर्णन यह भी है कि एक वकत योगीराज अचलगढ़ विराजते थे, जब स्वामीजी (स्वयं लेखक) भी पास थे। २२ रजवाड़ों के नरेश व राजकुमार आदि सिरोही के राजकुमार की शादी करके दर्शनार्थ आये थे। दरवाजा बन्द था। सारे राजा और राजकुमार दर्शन की प्रतिक्षा कर रहे थे। ज्यों ही दरवाजा खुला, सारे के सारे गुरुदेव के चरणों में साष्टांग नमस्कार करने लगे। सब सजे धजे होकर भी उन्हें वस्त्रों का भान न रहा, इतनी भक्ति थी उनमें। स्वामीजी लिखते हैं कि उस वक्त का दृश्य फोटो लेने योग्य था, परन्तु कैमरा नहीं था। गुरुदेव ने उनसे (राजाओं से) शिकार व माँस-मदिरा का त्याग करवाया था।

भृगु आश्रम

घने जंगल के बीच भृगु आश्रम

अचलगढ़ की उन्नत पहाड़ियों से दूर-दूर तक घाटी और हरे-भरे घने जंगल नजर आते हैं। इन्हीं घने जंगलों में एक प्राचीन तपोभूमि है - भृगु आश्रम। आश्रम से कुछ ही दूरी पर

ऊंची चट्टान पर बना गुरुदेव का कमरा - भृगु आश्रम

घने पेड़ों के झुरमुट में एक विशाल चट्टान में गुफा भी है जहाँ गुरुदेव जंगली जानवरों से निर्भीक होकर ध्यान करने जाया करते थे । प्रत्यक्षदर्शी ठाकुर भैरुसिंह (जो गुरुदेव की अन्तिम अवस्था में निरन्तर १३ वर्षों तक साथ रहे) ने शेर, चितों जैसे हिंसक पशुओं से घिरे गुरुदेव को मित्रवत् व्यवहार करते देखा है । आश्रम में एक चट्टान पर गुरुभक्त नागपुर निवासी पानमलजी झवेरी ने एक कमरे का निर्माण भी कराया था । जो अब भी मौजूद है । यह स्थान बहुत ही शांत, एकांत एवं रमणीय है । यहाँ भृगु ऋषि ने दीर्घकाल तक साधना की थी ।

विकट गुफा - भृगुआश्रम

# जहाँ सरलता है वहाँ आत्म समाधि है ।



पृष्ठ प्रदत्त कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

## भृतहरी गुफा

अचलगढ़ बस स्टेण्ड के पश्चिम में मंदाकिनी कुण्ड के पास रानी पिंगला का महल है। उसी के पास पहाड़ में एक गुफा है। उसे भृतहरी गुफा कहते हैं। इस गुफा का प्रवेश बड़ा छोटा सा है, जिसमें प्रवेश के बाद बाँई ओर तीन-चार संकड़ी सीढ़ियाँ हैं, जिसमें बैठकर ही नीचे उतरा जा सकता है। नीचे छोटी सी समतल जगह विद्यमान है जहाँ पर सामने की ओर उजाला नजर आने लगता है। इसी गुफा में एक धूनी है।

इस गुफा के बारे में कहा जाता है कि राजा भृतहरी जो कि विक्रमादित्य के बड़े भाई थे, उन्होंने राज-पाट छोड़कर इस गुफा में तपस्या की थी। गुरुदेव भगवान ने भी इस गुफा में बहुत ध्यान किया था।

घने जंगलों के बीच - भृतहरी गुफा

भृतहरी गुफा

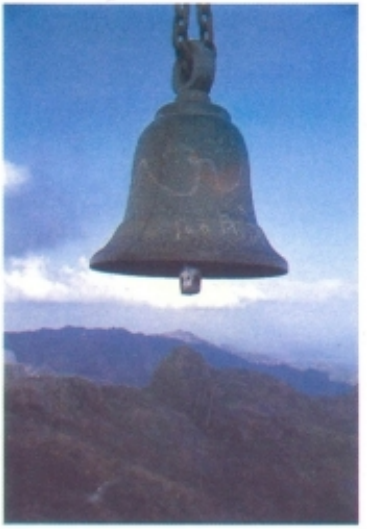

गुरु शिखर

**मूर्ति हमें यह सिखाती है कि हमने भी ध्यान किया था, यदि तुम्हें भी हमारे जैसा बनना हो तो तुम भी ध्यान करो।**

गुरु शिखर पर गुरुदेव की गुफा

### जीवन यात्रा का अन्तिम पड़ाव

जीवन के अन्तिम समय में गुरुदेव अचलगढ़ में विराजे थे। अपने निर्वाण के तीन-चार महिने पूर्व ही समाचार पत्रों में यह घोषणा निकलवा दी थी कि "अब कोई मेरे दर्शनार्थ न आएँ। मैं ध्यान में बैठने वाला हूँ। फिर भी कोई चला आता तो कहते, "अब मेरे दर्शन नहीं होंगे मैं गुरु शिखर जाने वाला हूँ" फिर कहते, "मुझे देह की क्या आवश्यकता है, इस देह से जो काम होना था वह सब मैंने कर लिया। मुझे बड़ा आनन्द है।" सेठ किसनचन्द आदि बहुतेरे भक्तों को चार महिने पूर्व ही विदा करके भेज दिया था। इन दिनों तपस्वी छोगमल धनाजी ने ५१ उपवास किये थे। वे गुरुदेव के कमरे के बाहर ही सोते थे। उपवास काल में गुरुदेव की कृपा से उनको चक्रेश्वरी, सरस्वती आदि देवियों के अपूर्व दर्शन हुए। गुरुदेव ने उनको भी अपने गांव भेज दिया। सं.२००० का पर्युषण पर्व समाप्त होने पर गुरुदेव अचलगढ़ के शिखर पर चौमुखजी आदिनाथ भगवान व दुमंजिल के चौमुखजी आदि सब बिम्बों के दर्शनार्थ पधारे।

इन दिनों गुरुदेव नाम मात्र के लिए थोड़ा सा आहार ग्रहण कर लेते थे और प्रायः दिन रात आत्म समाधि में लीन रहते थे। दो-दो, तीन-तीन दिन तक कमरे का दरवाजा भी नहीं खोलते और न ही किसी को दर्शन देते थे।

दिनांक १८ सितम्बर ४३ को सेठ फूलचन्द माणकचन्द शाह अपनी पत्नी लीलाबहन के साथ बम्बई से आए क्योंकि दो दिन पूर्व ही उनके पुत्र कान्तिलाल का देहान्त हो गया था। गुरुदेव ने उनको आश्वासन देते हुए कहा कि उसकी सद्गति हुई है, मैं तुमको उसके दर्शन कराऊँगा। फिर वे दोनों २३ सितम्बर ४३ के दिन गुरुदेव से विदा लेकर वीर नगर के लिए रवाना हो गये, किन्तु गुरुदेव ने एक साइकिल सवार को भेजकर उनको माउण्ट आबू से वापस अचलगढ़ बुला लिया। रात को साढ़े दस बजे इनको गुरुदेव ने बुलाकर टार्च की रोशनी में स्व. कान्तिलाल के साक्षात् दर्शन कराये। फिर गुरुदेव ने सान्त्वना देकर आत्म शांति के लिए बोध वचन कहे।

इस समय गुरुदेव को बुखार था और श्वास तीव्र गति से चल रहा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक नहीं जानकर फूलचन्दभाई, लीलाबहन, चंपकभाई, सुरजमलजी, कमलाप्रसादजी इत्यादि गुरुदेव के पास ही रात भर बैठे रहे। गुरुदेव भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण समय की चर्चा करते हुए उपदेश देने लगे कि कोई भी आयुष्य को एक पल भी नहीं बढ़ा सकता।

गुरुदेव ने देह त्याग करने के पहले आत्म शक्ति से जगह-जगह कई भक्तों को इस विषय में संकेत दे दिये थे।

### निर्वाण

वि.सं. २०००, आसोज वदी १०(द्वितीय), गुरुवार दिनांक २३-२४ सितम्बर की रात्रि में करीब २.३० बजे पूज्य गुरुदेव की हृदय गति मंद पड़नी शुरु हुई। ठीक ३ बजे आपने चौपन वर्ष की जीवन यात्रा परिपूर्ण कर ध्यानावस्था में परम शान्ति के साथ अपने नश्वर देह को त्याग कर आत्मा से परमात्मा में विलीन हो गए।

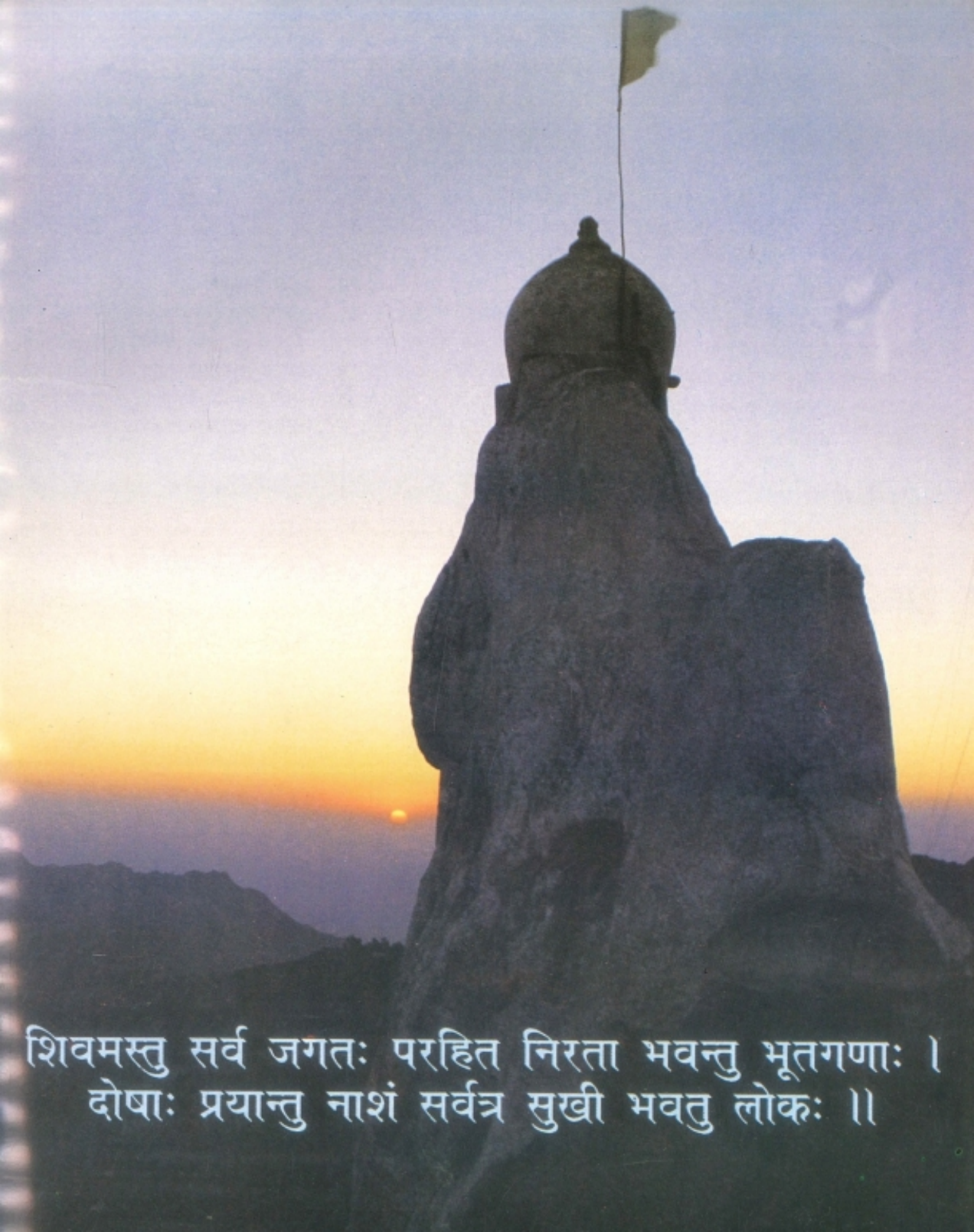

शिवमस्तु सर्व जगतः परहित निरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ।।

परम पूज्य गुरुदेव के निर्वाण व अग्नि संस्कार के समाचार भारतवर्ष के सब भक्तों को तार, टेलीफोन व रेडियो द्वारा दे दिये गये । कई गुरुभक्त अचलगढ़ पहुँच गये । अर्धनेत्र खुले, पद्मावस्था में गुरुदेव की शान्त, सौम्य देह दिव्य आलोक से परिपूर्ण थी । नेत्रों में दिव्य ज्योति थी । पूरा कमरा चन्दन की सुगन्ध से महक रहा था ।

अचलगढ़ में आज भी इस कमरे में चन्दन का वह पाट रखा हुआ है, जिस पर गुरुदेव ने निर्वाण प्राप्त किया । पाट पर रखी गुरुदेव की आकर्षक छवि के दर्शन कर गुरुदेव की उपस्थिति का आभास होता है ।

गुरुदेव के देह को अर्धपद्मासनावस्था में पालकी में विराजकमान करा के अचलगढ़ से आसोज वदी १२ दिनांक २५ सितम्बर १९४३ को माउण्ट आबू के लिए प्रस्थान किया । दोपहर में माउंट आबू पहुँचे । वहां बाजार में एजेंट टू दि गर्वनर जनरल एवं जनता ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । फिर पालकी के साथ सारे समुदाय ने श्री शांतिविजय पशु चिकित्सालय होते हुए मांडोली की ओर प्रस्थान किया । संध्या समय तलहटी में शान्ति आश्रम नामक स्थान में रुके । सेठ किसनचन्दजी भी यहीं सम्मिलित हुए । यहां पहुँचते ही सेठ साहब और रुक्मणीबहन ने गुरुदेव के सामने एकांत में बहुत भक्ति पूर्वक प्रार्थना की । सेठ साहब को गुरुदेव सजीव से दिखाई दिये ।

सेठ साहब को अपने कर्त्तव्य का बोध होते ही वे पालकी के साथ माण्डोली की ओर अग्रसर हुए । एकत्रित जनसमुदाय को आबू रोड़ से माण्डोली तक पहुँचाने के लिए कई बसों का प्रबन्ध सेठ किसनचन्दजी ने करवा दिया । दिनांक २६ सितम्बर १९४३ की शाम को सारा जनसमुदाय पालकी सहित माण्डोली पहुँच गया । रात भर सैकडों लोग बागरा तथा सिरोही मार्गों से आते रहे । गुरुदेव की माताजी और भाई भी वहाँ पहुँच गये थे । रात्रि में १० बजे अग्निसंस्कार के लिए बोली प्रारम्भ हुई । अहमदाबाद की श्रीमति शान्ता बहन चिनुभाई ने गुरुदेव के साक्षात् दर्शन पाकर उत्साहित होकर ५१०००/- रूपये की बोली लगा कर अग्नि संस्कार का लाभ प्राप्त किया ।

निर्वाण स्थल - अचलगढ़

ॐ सर्व शक्तिमान् परमात्मा का वाचक है।

आत्म शुद्धि के लिये ॐकार का जाप परम लाभदायक है।

"उपवास" आत्मा के समीप वास करना उसी का नाम उपवास है।

मन, वचन, काया से किसी जीव को दुःख देना उसी का नाम हिंसा है।

जो दूसरों को अभयदान देता है वह सर्वधा भय से मुक्त हो जाता है।

"क्षमा तुल्यं तपो नास्ति - क्षमा तुल्य संसार में कोई तप नहीं है।

धर्म झगड़े का नाश करता है। जहां झगड़ा है वहां धर्म नहीं है।

धर्म श्रद्धा का विषय है; बुद्धि का विषय नहीं है।

जहाँ परमात्मा है वहाँ प्रेम है और जहाँ प्रेम है वहाँ परमात्मा है।

अपार जन समूह की उपस्थिति में सोमवार दिनांक २७ सितम्बर १९४३ को सूर्योदय की स्वर्णिम आभा के साथ ही दादा गुरु श्री धर्मविजयजी की समाधि के पास ही चन्दन की चिता पर गुरुदेव की पालकी रख दी गई और अग्नि संस्कार कर दिया गया। अग्नि प्रज्वलित हो उठी। चिता में सैकड़ों मन चंदन , नारियल, घृत, कपूर आदि चढ़ाया गया। चारों ओर सुगन्ध फैल रही थी और गुलाल से आकाश में लालिमा छा गयी थी। अग्नि संस्कार का यह दृश्य ऐसा लग रहा था मानो एक तेज पुंज अनन्त में फैल गया हो। उपस्थित हजारों लोगों ने अश्रुपुरित नेत्रों से गुरुदेव को अपनी अन्तिम भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। देर से पहुँचने वाले भक्तों एवं उपस्थित जनसमुदाय को गुरुदेव ने साक्षात् अभयमुद्रा में दर्शन देकर कृतार्थ किया। यह चिता निरंतर तीन दिन तक जलती रही।

संध्या समय किंकरदास (गुरुदेव के भजनों के रचयिता) एवं सैकड़ों भक्त चिता के पास बैठकर गुरुदेव के भजन गाने लगे।

स्विटरजरलैंड निवासी श्री जार्ज भी अग्नि संस्कार के समय पालिताना होते हुए माण्डोली पहुँच गये थे। गुरुदेव के वियोग से उद्विग्न होकर वे आबू की लाल गुफा में जा कर उपवास पूर्वक ध्यान करने लगे, तीसरे दिन गुरुदेव ने प्रत्यक्ष दर्शन देते हुए कहा "जॉर्ज, शान्ति इज ग्रेट योग" इसी प्रकार अपने निर्वाण के बाद भी गुरुदेव समय-समय पर अपने भक्तों को प्रत्यक्ष व स्वप्न में दर्शन देते रहते हैं। आज भी जो गुरुदेव को पवित्र मन से स्मरण करते हैं उन्हें दर्शन देकर उनकी शुभ मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं।

**न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह शरीर तो आग, मिट्टी, पानी, हवा तथा आकाश से बनता है और उसी में विलीन हो जाता है। आत्मा न जन्मति है और न मरती है। यह तो अमर है।**

ॐ
शांति

# अंतिमसंस्कार स्थल – माण्डोली

राजस्थान के जैन तीर्थों की कड़ी में जालोर जिले का अपना विशिष्ट स्थान है जिसकी गोद में भीनमाल, सांचोर, भांडवाजी, सरली, आहोर, जालोर के सर्व विख्यात जैन मन्दिर न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से अपना महत्व बनाये हुए हैं, अपितु यहाँ की शिल्पकला का आर्कषण, शिलालेखों की महत्ता, प्राचीन बनावट, गगनचुम्बी शिखरों की भव्यता, जैन मूर्तियों के चमत्कार आदि स्वतः ही इनके महत्व को अंकित करते हैं । ऐसे ही पवित्र एवं पूज्यनीय धार्मिक स्थलों में माण्डोली में बना गुरुमन्दिर भी एक विशिष्ट स्थान रखता है । माण्डोलीनगर जालोर जिले की भीनमाल तहसील एवं जसवन्तपुरा पंचायत समिति का एक छोटा गांव है । उत्तरी रेल्वे के मारवाड़ बागरा स्टेशन से १८ कि.मी., भीनमाल से ३० कि.मी. की दूरी पर, जालोर-भीनमाल मार्ग पर तथा पश्चिम रेल्वे के दिल्ली-अहमदाबाद मार्ग के सिरोही रोड़ स्टेशन से ६६ कि.मी. की दूरी पर सिरोही-जालोर वाया रामसीन मार्ग पर स्थित है ।

माण्डोली सात सौ वर्ष पुराना ऐतिहासिक गांव है । रामसीन के काबा राजपूत परिवार के एक अग्रणी सदस्य ठाकुर मालदेवजी उर्फ मांडोजी ने यह गांव बसाया था उन के नाम पर इस गाँव का नाम माण्डोली पड़ा ।

माण्डोली नगर की कुल आबादी लगभग चार हजार है । यहाँ सभी धर्मों एवं जातियों के लोग हिलमिल कर रहते हैं ।

**गुरु मन्दिर माण्डोली में ही क्यों ?**

सम्भवतया माण्डोली में गुरुमन्दिर की नींव करीब दो सौ वर्ष पूर्व में ही लग गई थी जब दादा गुरु धर्म विजय जी का जन्म माण्डोली ग्राम में हुआ था और निर्वाण भी माण्डोली में हुआ था । निर्वाण के पश्चात् उस स्थान पर श्री संघ ने छत्री बनाकर उसमें लाल पत्थर के चरण पादुका विराजमान किये । कहते हैं दादा गुरुदेव के निर्वाण दिवस (श्रावण वदी ६) को इन चरणों के अंगुठे से दूध निकलता था । लेकिन नूतन मंदिर

बनाने पर उन चरणों को दादा गुरुदेव के मंदिर में स्थानांतरित करने पर दूध निकलना बन्द हो गया।

श्री धर्मविजय जी के शिष्य तीर्थविजयजी हुए । तीर्थ विजयजी के शिष्य शांति विजयजी हुए। इन दोनों का जन्म स्थान मणादर था। इन्होंने कोई शिष्य नहीं बनाया । शांति विजयजी की दिक्षा रामसीन में हुई थी। दिक्षा लेते ही गुरुदेव सीधे मांडोली दादा गुरु के दर्शनार्थ पधारे। गुरुदेव को दादा गुरु के स्थान की वजह से माण्डोली से विशेष प्रेम था । यह बात गुरुदेव ने कई बार गुरु भक्तों को तथा गांव वालों को संकेत से बता दी थी। यह बात दूसरी है कि उस वक्त किसी को यह समझ में नहीं आया। उदाहरण स्वरुप - माण्डोलीनगर के पंच महाजन जब भी गुरुदेव से विनती करने आते कि गुरुदेव मांडोली पधार कर चातुर्मास करावें तब गुरुदेव का जबाब होता, "मैं तो हमेशा के लिए माण्डोली आकर बैठूंगा या हमेशा के लिए माण्डोली आ रहा हूँ।

सेठ किसनचन्दजी को भी निर्वाण के पहले गुरुदेव ने माण्डोली में अग्नि संस्कार के लिए दादा गुरु की छत्री के पास वाला स्थान बता दिया था, अतः निर्वाण के समाचार जब सेठजी को दिये गये, तो उनका जबाब था कि अग्नि संस्कार माण्डोली में होगा।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भक्त शिरोमणी सेठ किसनचन्दजी जो हैदराबाद (सिंध) की सुविख्यात फर्म - पहुमल बद्रर्स के मालिक थे, को पूज्य गुरुदेव ने अग्निदाह से बचाया था।

एक बार वे अपने निवास स्थान पर रात्रि में परिवार सहित आराम से सो रहे थे। अचानक बिजली के तारों से घर में आग लग गयी। सभी गहरी निंद्रा में थे। तभी गुरुदेव ने उन्हें दर्शन देकर नींद से जगाया और कहा -'उठो तुम्हारे घर में आग लग गयी है।' गुरुदेव भगवान की कृपा से सेठजी, उनका परिवार व अन्य बहुत से नर-नारियों और बच्चों के प्राण बच गये।

अपनी अनन्य भक्ति से ही सेठजी ने गुरुदेव के अग्नि संस्कार के बाद माण्डोली श्री संघ द्वारा प्रदत्त उसी पावन धरती पर संगमरमर का अद्वितीय, विशाल, भव्य मन्दिर का निर्माण करवाकर गुरुदेव के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है। आज यह चमत्कारी मन्दिर जन-जन का तीर्थ धाम बन गया है।

श्री शांतिसूरीश्वरजी गुरु मंदिर – माण्डोली नगर

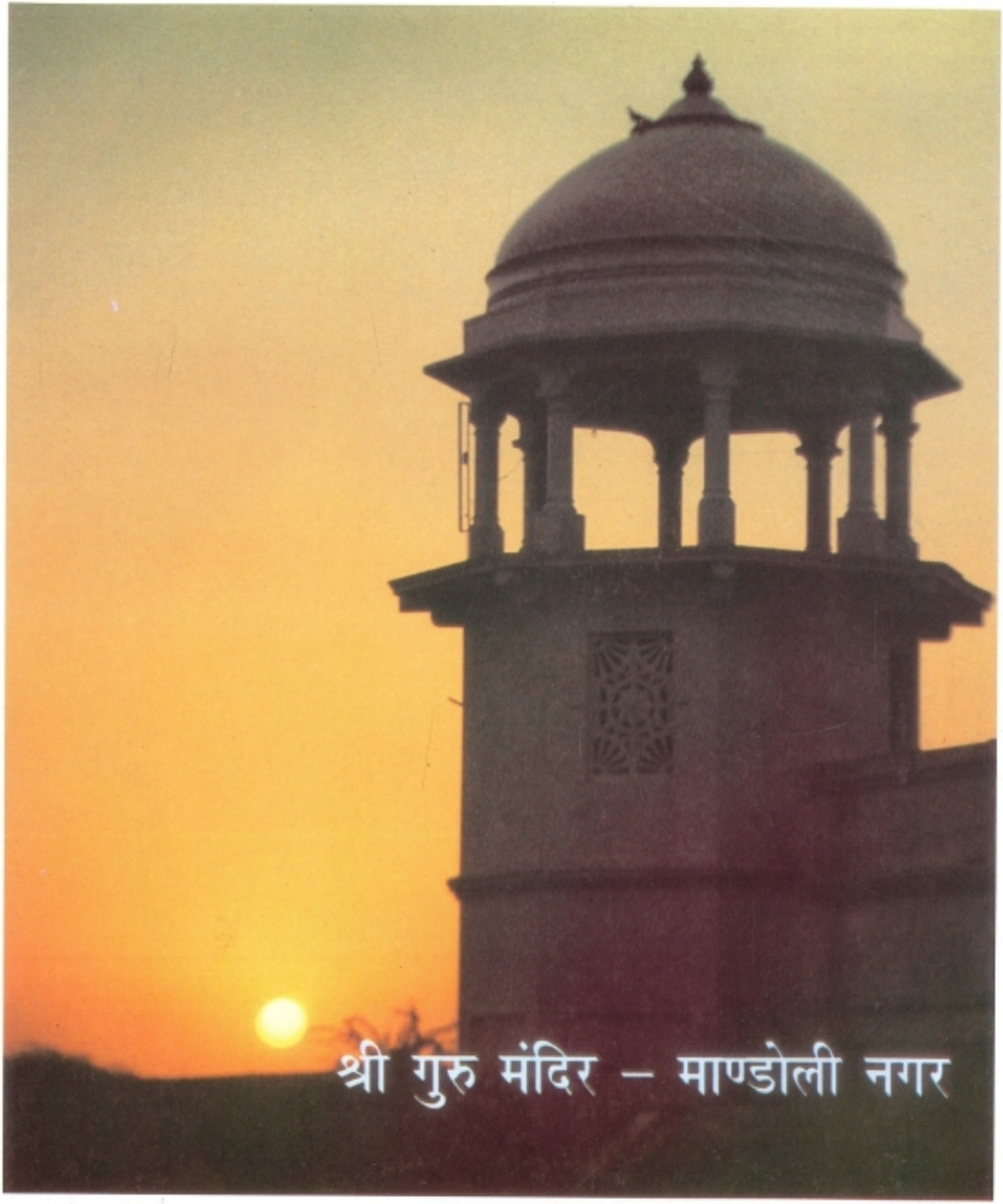




पृष्ठ प्रदत्त कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

गुरु मन्दिर भारतीय वास्तुकला का एक अद्वितीय स्वरुप है जिस में हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई और जैन धर्मों की वास्तुकला का समन्वय देखने को मिलता है । गुरु मन्दिर का प्रवेश द्वार गिरजाघर जैसा ऊँचा बना हुआ है । जिस में घंटाघर बनाया गया है । मन्दिर की चार दिवारी के चारों कोनों पर मस्जिदनुमा अर्द्धगोलाकार गुम्बजों वाली गुमटियाँ हैं ।

गुरु मन्दिर का प्रवेश द्वार पश्चिमभिमुख है । मन्दिर में प्रवेश करते ही हरे-भरे बगीचे के बीच एक विशाल ऊँचे चबूतरे पर गुरुमन्दिर दृष्टिगोचर होता है । मन्दिर के मूल नायक परम पूज्य गुरुदेव विजयशान्ति सूरीश्वरजी भगवान की अत्यन्त आर्कषक, भव्य, आदमकद, पद्मासन प्रतिमा दूर से ही मन मोह लेतीं है । ऐसा लगता है कि गुरुदेव स्वय मुस्कराते हुए हमें पास बुला रहे हों । मूल गर्भ गृह के चारों ओर गुरुदेव के जीवन से सम्बन्धित मुख्य घटनाओं का सुन्दर चित्रण किया हुआ है । सम्पूर्ण मन्दिर संगमरमर का बना हुआ है । जिस पर खुदे हाथियों की आकृतियाँ, कलात्मक जालियाँ और बेल-बूटों की पच्चीकारी देखते ही बनती हैं । मुख्य मन्दिर के इस चबूतरे के चारों कोनों पर चार छतरियाँ (देहरियाँ) बनी हुई हैं । जिस में आगे की दो छतरियों में क्रमशः गुरुदेव की अधिष्टायक एवं प्रेरणादायक पद्मावती देवी एवं सरस्वती देवी की सुंदर प्रतिमाएं विराजमान हैं । पीछे की दो छतरियों में क्रमशः गुरुश्री तीर्थविजयजी एवं श्री शान्तिसूरीश्वरजी की चरण पादुकाएं स्थापिता की हुई है ।

# योगीराज श्री शान्तिसूरीश्वरस्य स्तुति

विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा

विमलज्ञान सुबोध सुधाकरम् ।
भविक लोक चकोर कलाधरम् ॥
परम शान्त सुधारस जलधरम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥१॥

मदन मोह महारिपु खंडनम् ।
अति सुशोभित अर्बुद मंडनम् ॥
कुमति भंजन वादी विदारकम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥२॥

अति भीम भवोदधि भयहरम् ।
त्रिविध तापहरं सुख सागरम् ॥
गुरु मंत्र स्मृति मन शांतिकरम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥३॥

गुरु समागमनेन सुधन्य भुवम् ।
गुरु दर्शन प्राप्तं पुण्य कृतम् ॥
मम चित्त कजे पदन्यास कुरू ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥४॥

गुरु जन्म शती सन्माननीयम् ।
मांडोली नगर गुरु तीर्थ प्रवरम् ॥
निखिल भक्तजनाः प्रमुदित मना ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥५॥

निबिड कर्म मल क्षयकारकम् ।
प्रशमभाव विशेष विचारकम् ॥
प्रबल पाप महाबल वारकम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥६॥

र सुधर्म रमाकुल चन्द्रमा ।
विशद योग विधान विस्तारकम् ॥
दुरित दूषण कल्मष शोधकम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥७॥

जयति यः परमेष्ठी पदं विमलम् ।
श्रयति यः गुरु शांति सूरीश्वरम् ॥
नमति यः सततं पद पंकजम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥८॥

पठति यः सुगुरोर्गुण गौरवम् ।
प्रवर भक्ति भरेण सुभावतः ॥
स लभते रमणीयतरं पदम् ।
विजय शान्तिसूरी प्रणमामि सदा ॥९॥

साध्वी तिलक श्री जी महाराज



पृष्ठ प्रदत्त कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

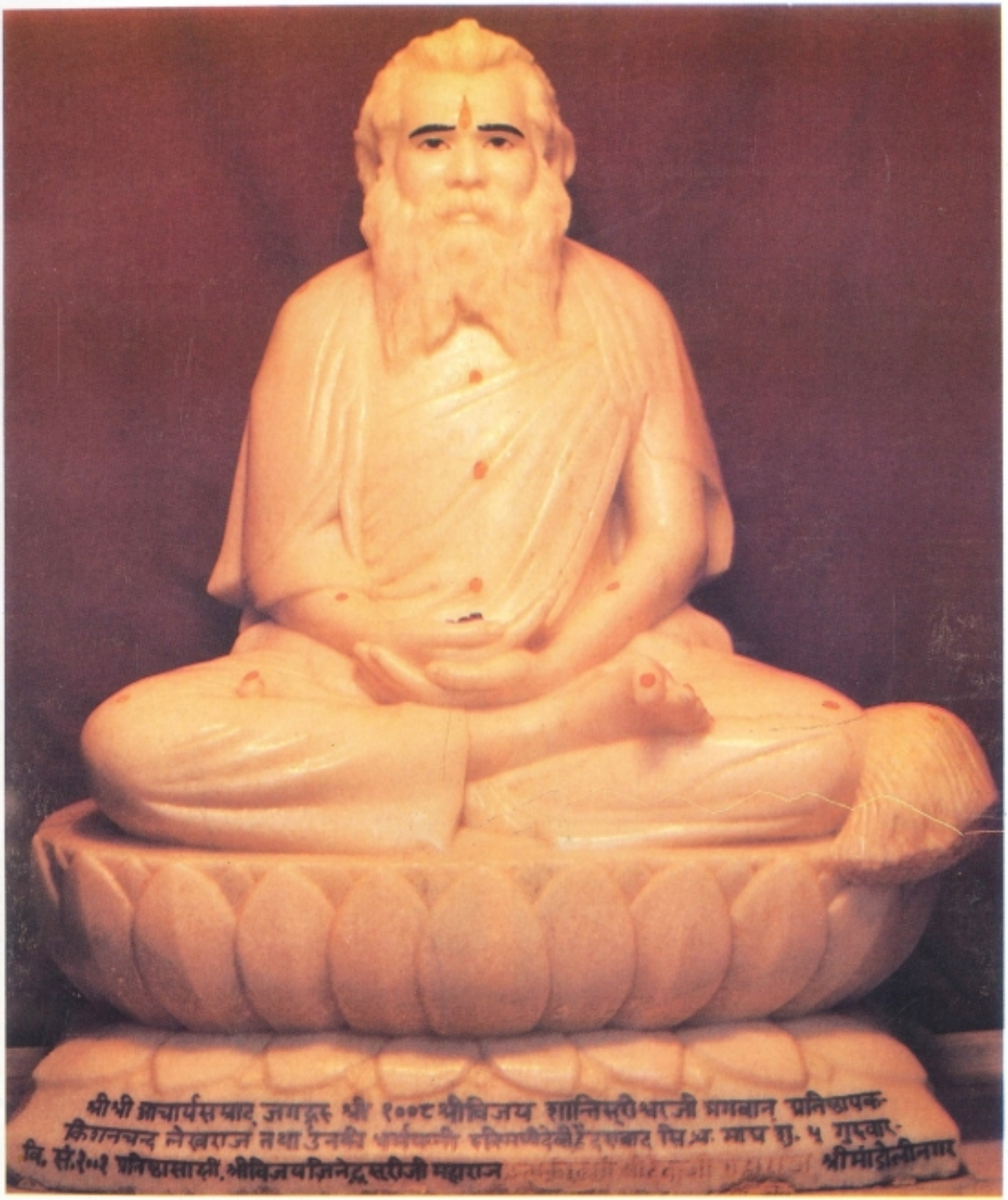

पृष्ठ प्रदत्त
यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर - जोधपुर

माँ पद्मावती देवी

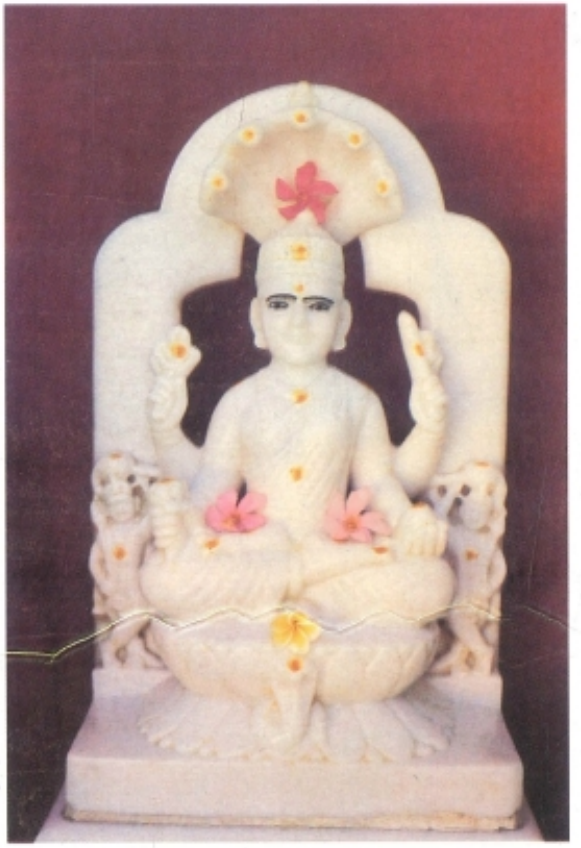

धराधिपतिपत्नी या देवी पद्मावती सदा।
क्षुद्रोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत्फणावली।।

माँ सरस्वती देवी

निषण्णा कमले भव्या, अक्षहस्ता सरस्वती।
सम्यग्ज्ञानप्रदा भूयाद, भव्यानां भक्ति शालिनाम्।।



पृष्ठ प्रदत्त गांधी शैलेषकुमार चन्दुलाल, मुंबई

इसी मन्दिर में तीन ऐतिहासिक नीम के वृक्षों के बीच दादा गुरु की छत्री बनी हुई है । यह वही स्थान है जहाँ पर दादा गुरुदेव श्री धर्मविजयजी का अग्नि संस्कार किया गया था ।

←दादा गुरु धर्मविजयजी का समाधि-स्थल
श्री धर्म-तीर्थ-शांति गुरु चरण (पगलिया)

मुख्य मन्दिर के पीछे बने बरामदे के दोनों ओर घुमटियों के बीच वाले गवाक्षों में भी गुरुदेव की पद्मासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

गुरु मन्दिर में प्रतिष्ठित गुरुदेव की ये तीनों ही प्रतिमाएँ अलग-अलग भावाभिव्यक्ति से

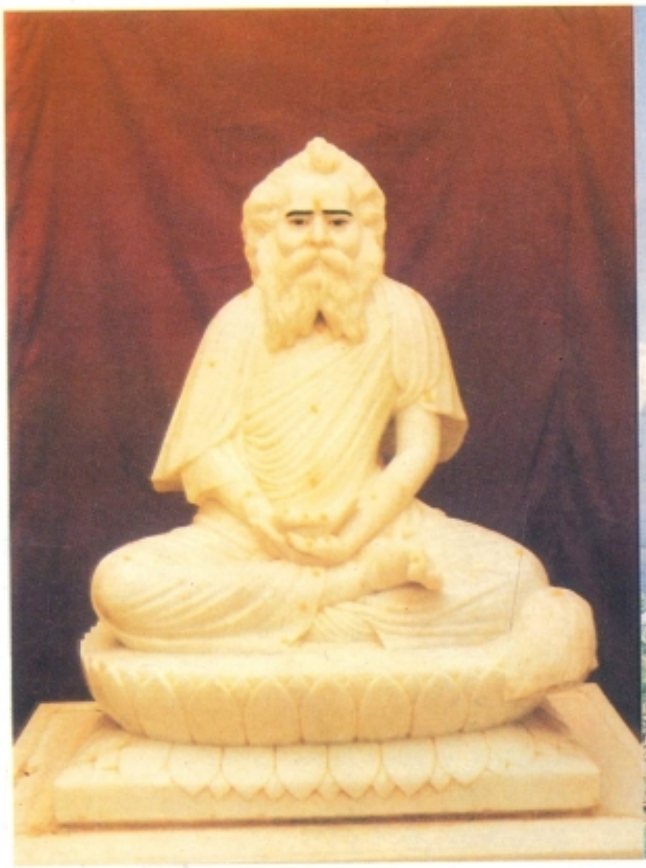

मूलनायक गुरुदेव की प्रतिमूर्ति (बाएँ कक्ष में)

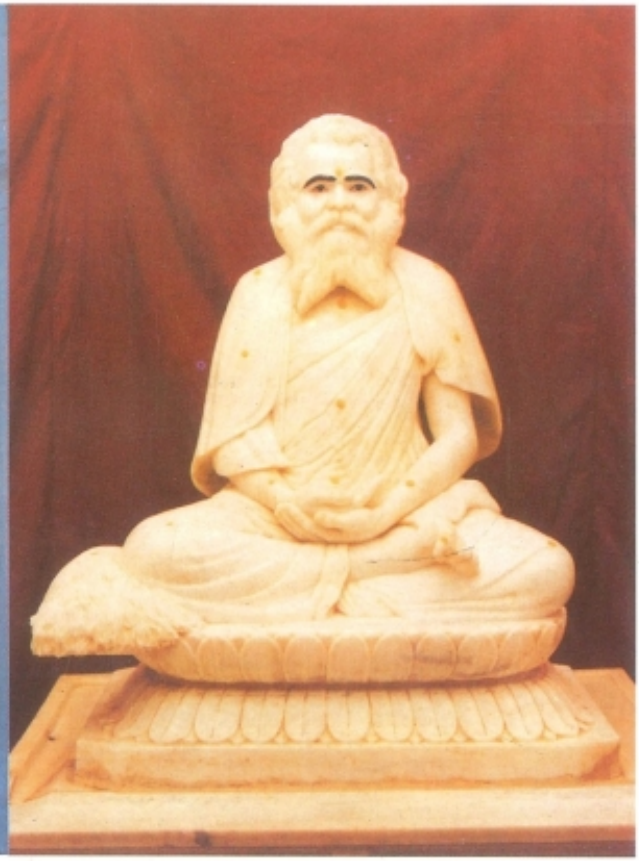

मूलनायक गुरुदेव की प्रतिमूर्ति (दाएँ कक्ष में)

दर्शनार्थियों पर अपना चमत्कारिक प्रभाव डालती है। मन्दिर के पीछे बरामदे में लगी रंगीन छाया चित्रों की प्रदर्शनी गुरुदेव के साधना स्थलों एवं उन के जीवन से सम्बन्धित अन्य स्थलों की सुन्दर झांकी प्रस्तुत करती है।

मन्दिर में फूलों से आच्छादित बगीचों में जगह-जगह कलात्मक फव्वारें नजर आते हैं । वहीं गुरुदेव के दर्शन करती हुई सेठ किशन चन्द एवं उनकी धर्म पत्नि श्रीमति रुकमणी देवी की मूर्तियाँ लगी हुई हैं।

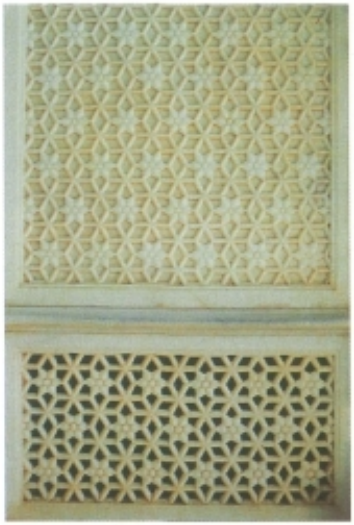

मूल मन्दिर के दाईं ओर चारदिवारी से बाहर सड़क के किनारे गुरु मन्दिर के निर्माण की प्रेरणा देने वाली पूज्य गुरुदेव भगवान की परम भक्तिनी श्रीमति रुकमणी देवी तथा भक्त शिरोमणी एवं गुरुमन्दिर के निर्माता सेठ किसनचन्दजी के स्मृति मन्दिर बने हुए हैं । उनकी इच्छानुसार उनका दाह संस्कार गुरु चरणों के समीप इन्हीं स्मृति मन्दिरों के स्थल पर किया गया । यहीं एक बाल क्रीड़ा उद्यान भी बना हुआ है । मन्दिर से दर्शन कर लौटते समय प्रतिष्ठा के समय से प्रज्वलित अखण्ड ज्योति के दर्शन होते है । जो प्राणी मात्र को अंधकार से प्रकाश की ओर एवं निरंतर उर्धगमन की सतत् प्रेरणा देती रहती है ।

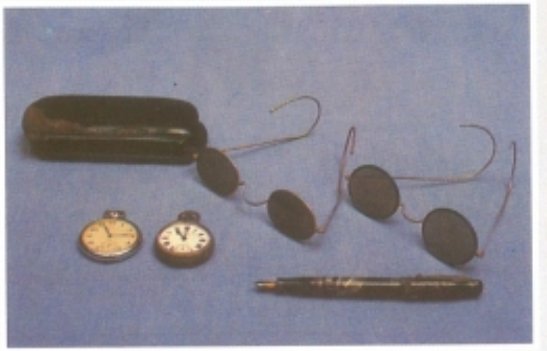

# संग्रहालय

पृष्ठ प्रदत्त कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

गुरुमन्दिर के निकट ही विशाल धर्मशालाएँ बनी हुई हैं। धर्मशालाओं के साथ ही सेठ किसनचन्द लेखराजजी द्वारा निर्मित एक दर्शनीय संग्रालय भी है।

जिस में गुरुदेव के उपयोग में ली गई दुर्लभ वस्तुओं, उपकरणों व यन्त्रों-मन्त्रों का संग्रह है। साथ ही गुरु भक्तों एवं राजा महाराजाओं द्वारा अर्पित बहुमुल्य वस्तुऐं भी यहाँ संग्रहित है।

यहाँ एक पुस्तकालय भी है जिसमें जैन धर्म के अतिरिक्त रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, गीता प्रेस आदि सभी सम्प्रदायों की लगभग ५०० पुस्तकें हैं।

# संग्रहालय

पृष्ठ प्रदत्त स्व. श्रीमती केसर बाई चम्पालाल लूकड़, जोधपुर

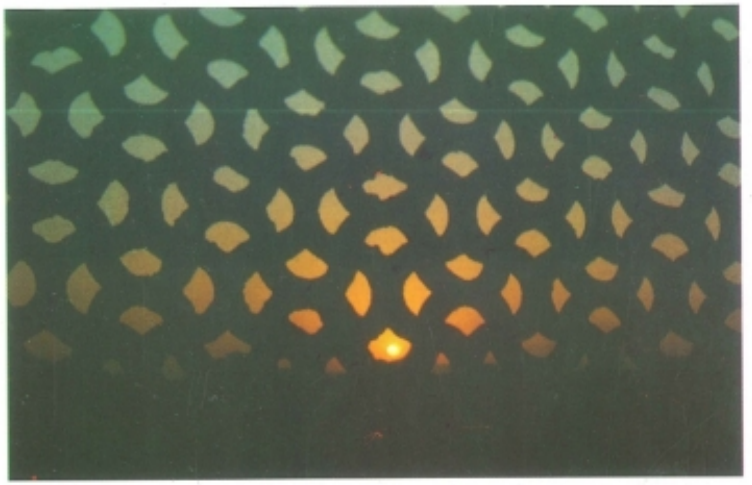

बहु संख्यक यात्रियों की सुख-सुविधा हेतु श्री गुरु मन्दिर पेढ़ी एवं गुरु भक्तों द्वारा अनेक भवनों का निर्माण कराया है। जिनमें मुख्यतः रामपुरिया धर्मशाला, शांताबहन धर्मशाला, रजत जयंती भवन, यश निकेतन, माता वसुदेवी भवन, सेठ किसनचन्द लेखराज स्मृति भवन एवं भोजन शाला हॉल इत्यादि हैं।

माण्डोलीनगर में श्री सुमतिनाथ भगवान का एक जैन मन्दिर है। उल्लेखनीय है कि मूलनायक भगवान की अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठा भी गुरुदेव के हाथों ही सम्पन्न हुई थी। अब इस मन्दिर का जिर्णोद्धार हुआ है। गांव के बाहर की ओर दादा गुरु धर्म विजयजी का मन्दिर भी है। इस के साथ ही गांव की

धर्मशालाएँ

श्री धर्मतीर्थ शान्ति गुरु प्रतिमाएँ ।

↓ दादा गुरु मन्दिर - माण्डोली

एक सार्वजनिक धर्मशाला है। जिस के ऊपर की ओर घुमटी है। गुरुदेव जब-जब भी माण्डोली पधारते थे तो इसी घुमटी में विराजते थे। इस धर्मशाला के साथ ही शिव मन्दिर एवं अम्बा माता का मन्दिर भी बना हुआ है। स्थानीय नागरिकों एवं गुरुभक्तों के सहयोग से यहाँ पर विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पशुचिकित्सालय, धार्मिक पाठशाला, बालिका विद्यालय, पंचमहाजन धर्मशाला, उपाश्रय, आयम्बिल भवन, पौषधशाला, नेत्र चिकित्सालय आदि बने हुए है। गांव में बिजली, पानी, सड़क इत्यादि आधुनिक सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं। ऐसे शांत, रमणीय, धार्मिक तीर्थ के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों व पर्यटकों का तांता लगा रहता है। यहाँ प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के दिन विशाल मेले का आयोजन होता है। इसके अतिरिक्त गुरु निर्वाण दिवस (आसोज वदी १०) को भी मेला भरता है।

पुराना उपाश्रय →

↓ घुमटी - माण्डोली

← प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

पशु चिकित्सालय ↑



प्याऊ →

## श्री धर्म तीर्थ शान्ति गुरु मन्दिर पेढी

गुरु मन्दिर एवं धर्मशालाओं की देखरेख सुव्यवस्था एवं विकास के लिये श्री माण्डोली नगर जैन संघ - पंच महाजनों एवं गुरु भक्तों ने सेठ किसनचन्दजी की अध्यक्षता में ग्यारह सदस्यों की एक समिति (बोर्ड - ट्रस्ट) गठित की । समिति की देखरेख में मन्दिर, धर्मशाला, भोजनशाला एवं यात्रियों की सुख सुविधा हेतु आवश्यक व्यवस्था सुचारु रुप से चल रही है । अभी इस समिति (बोर्ड - ट्रस्ट) में निम्नलिखित सदस्य है ।

श्रीमति यशु राम घियानी - अध्यक्ष
श्री देवीचन्द गेनाजी - माण्डोलीनगर
श्री शान्तिलाल केसाजी - माण्डोलीनगर/पूना
श्री तेजमल नवांजी - माण्डोलीनगर/पूना
श्री जयचन्द मगाजी - माण्डोलीनगर/पूना
श्री कान्तिलाल खेताजी - माण्डोलीनगर
श्री जेठमल खेताजी - माण्डोलीनगर
श्री पावनचन्द सिंघवी - जयपुर
श्री हीराचन्द कोठारी - जयपुर
श्री कान्तिलाल जैन - जोधपुर
श्री के. के. शाह - अहमदाबाद

# भारत में गुरुमंदिर, गुरुमूर्तियाँ एवम् भक्ति हॉल

## गुरुमंदिर

1. विशाल भव्य गुरु मन्दिर - श्रीमाण्डोली नगर।
2. दादा गुरु मंदिर, गुरु मूर्तियाँ - (दादागुरु धर्मविजयजी, गुरु श्री तीर्थविजयजी, गुरुदेव श्री शांतिसूरिश्वरजी) श्रीमाण्डोली नगर।
3. गुरु मन्दिर, सूर्यास्त दर्शन मार्ग, माउण्ट आबू।
4. गुरु मूर्ति शांति सदन - माउण्ट आबू।
5. गुरु मूर्ति गुरु श्री शान्ति विजय आयुर्वेदिक अस्पताल, माउण्ट आबू।
6. गुरु मन्दिर, अचलगढ़।
7. गुरु मन्दिर - गुरु मूर्तियाँ (दादागुरु धर्मविजयजी, गुरु श्री तीर्थविजयजी, गुरुदेव श्री शान्तिसूरिश्वरजी) मुड़तरा, जालोर।
8. गुरु मंदिर, चिन्ताधरी पेठ, चैन्नेई।
9. गुरु मंदिर, गुरुदेव दीक्षा स्थल, रामसीन।

श्री धर्म-तीर्थ-शांति गुरु मूर्तियाँ

गुरु मंदिर (मुड़तरा)

## गुरुमूर्तियाँ

**जयपुर**

गुरु मूर्ति, सूरजपोल, मोहनवाड़ी।
गुरु मूर्ति, आगरे वालों का मन्दिर।

**जोधपुर**

गुरु मूर्ति, सिंधीयों का मौहल्ला, श्री गौडी पार्श्व मन्दिर।
गुरु मूर्ति, श्री पार्श्वनाथ जिनालय, रेजीडेन्सी रोड़।
गुरु मूर्ति, अजीत कॉलोनी।
गुरु मूर्ति, गुरांसा का तालाब।
गुरु मूर्ति, मण्डोर दादावाड़ी।
गुरु मूर्ति, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, प्रथम पुलिया।

**फलोदी**

गुरु मूर्ति, श्री नेमीनाथ जिनालय।
भक्ति हॉल, अमर निवास।

**बीकानेर**

गुरु मूर्ति, कोचरों की दादावाडी।
गुरु मूर्ति, नाहटों की हवेली।
गुरु मूर्ति, ऋषभदेव भगवान का मन्दिर।
घर देरासर, प्रतापसिंहजी ढढ्ढ़ा, ढ़ढ्ढों का चौक।

**नागौर**

गुरु मूर्ति, श्री चन्द्रप्रभु जैन मन्दिर, स्टेशन के पास।



पृष्ठ प्रदत्त | कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

↑ गुरुमूर्ति (मणादर-प्याऊ)

**जिला पाली**
गुरु मूर्ति, जिनालय, घरला।
गुरु मूर्ति, जिनालय, जोजावर।
गुरु मूर्ति, दादावाडी, सोजतसिटी।
गुरु मन्दिर, बसस्टेन्ड, बिजोवा।
गुरु मूर्ति, जिनालय, वागोल।
गुरु मूर्ति, नेमीनाथ जैन मंदिर, नाडोल।

**उदयपुर**
ऋषभदेव जिनालय, तीज का चौक, धानमंडी।

**जिला सिरोही**
गुरु मूर्ति, बामनवाडा तीर्थ।
गुरु मूर्तियाँ (दादागुरु श्री धर्मविजयजी, गुरुश्री तीर्थविजयजी, गुरुदेव श्री शान्ति -सूरीश्वरजी), दादावाड़ी, शिवगंज।

**लोहावट**
गुरुदेव के प्राचीन "चरण" लोहावट जाटावास रेल्वे पुलिया के पास दादावाड़ी।

**मुंगेली**
गुरु मूर्ति, जैन मन्दिर।

**राजनांदगांव**
गुरु मूर्ति, श्री पार्श्वनाथ मन्दिर।

**बागबहारा**
गुरु मूर्ति, श्री विमलनाथ जैन मन्दिर।

**धमतरी**
गुरु मूर्ति, दादावाडी।

**दुर्ग**
उव्वसगहरं, पार्श्व पेढ़ी, गंजपारा।

**दिल्ली**
मेहरोली, दादावाडी।

**मद्रास**
गुरु प्रतिमा, श्री शान्ति विजय स्कूल।

**वेलूर**
भक्तिहॉल, श्री शान्ति गुरुदेव की प्रतिमा।

**अहमदाबाद**
पंच धातु की गुरु मूर्ति, रिलीफ रोड़।

**आन्ध्रप्रदेश**
गुरु मूर्ति, जिनालय, काकीनाड़ा।

**सम्मेतशिखर**
गुरु प्रतिमा, श्वेताम्बर जैन दादागुरु मन्दिर गिरडी।

**बम्बई**
गुरु मूर्तियाँ, भक्ति हॉल, मरीनलाईन्स।
गुरु मूर्ति, जी.आई.पी. किंस सर्कल।
गुरु मूर्ति, जिनालय, घाटकोपर।
गुरु मूर्ति, विरार आगासी रोड़,।
गुरु मूर्ति, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर विरार।

**भद्रावती**
गुरु मन्दिर, भद्रावती तीर्थ।

**जलगाँव-जामोद**
गुरु मूर्ति, जिनालय।

**बेटावद**
जिनालय, बेटावद, जिला - धुलिया।

**पंडरिया**
गुरु मूर्ति, जिनालय।

**तलोदा**
गुरु मूर्ति, जैन मन्दिर।

**ग्वालियर**
गुरु मूर्ति, बड़ा मन्दिर।

**रायपुर (छत्तीसगढ़)**
गुरु मूर्ति, श्री आदिनाथ जिनालय।
महावीर स्वामी मंदिर, वर्द्धमान नगर,
कुन्थुनाथ मंदिर, सन्मति नगर, फाफाडोह।

**कुनुर**
गुरुदेव की प्रतिमा, दादावाड़ी, कुनुर।
गुरुदेव की प्रतिमा, बालचन्द जी बच्छावत घर देरासर।

**सजान**
गुरुदेव प्रतिमा श्री विमलनाथ जैन देरासर पारसी अग्यारी के पास, रायवाड़ी, सजान (गुजरात)

**अमृतसर**
अमृतसर, दादावाड़ी।

**यवतमाल**
श्री जैन श्वेताम्बर, लकड़गंज, तलावफैल, यवतमाल

**सोलापुर**
श्री लोद्रवा पार्श्वनाथ जैन मंदिर।

**महासमुन्द**
श्री शान्तिनाथ भगवान जैन मन्दिर महासमुन्द।

**बैंगलोर**
गुरुदेव मन्दिर बैंगलोर।

**विसनगर**
गुरुदेव मन्दिर चन्दन पार्क सोसाइटी।
गुरुदेव मंदिर, श्री महावीर जिनालय के पास, स्टेशन रोड़।

**कोचीन**
गुरुदेव मन्दिर, प्राचीन जैन मन्दिर।

**मडगांव**
गुरुदेव मन्दिर।

**उव्वसनगर**
गुरुदेव मन्दिर, पार्श्वनाथ जैन तीर्थ।

**कोलकाता**
गुरुदेव मन्दिर जिनेश्वरसूरी फाउन्डेशन रमेशमित्रा रोड़, भवानीपुर।
गुरुदेव मन्दिर, जैन मन्दिर मलिक फाटक।

**इरोड़**
गुरुदेव मन्दिर इरोड़।

**इन्दोर**
गुरुदेव मन्दिर सराफा बाजार।

**तिरुप्पातुर**
शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर तिरुप्पातुर।

**हैदराबाद**
श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेताम्बर मंदिर के पास, न्यू मारुतिनगर, चैतन्यपुरी, हैदराबाद।

**गुरुदेव भगवान के नाम की संस्थाएँ**
गुरु श्री शन्ति सदन ट्रस्ट, माउंट आबू
गुरु श्री शान्ति विजय एनीमल होस्पीटल, माउंट आबू
गुरु श्री शान्ति विजय आयुर्वेदिक औषधालय, माउंट आबू।
गुरु श्री शान्ति विजय पार्क, माउंट आबू
श्री शान्ति देव सेवा समिति, बम्बई
श्री हिज होलीनेस ट्रस्ट, बम्बई
गुरुदेव शान्तिसूरी हैल्थ फांउन्डेशन, बम्बई
श्री शान्ति विजय गर्ल्स स्कूल नीलगिरी, उन्टकमण्ड
श्री शान्ति विजय स्कूल, कुनूर
श्री शान्ति विजय स्कूल, मसनगुडी
श्री शान्ति विजय स्कूल, मद्रास
श्री शान्ति विजय जैन ट्रस्ट, मद्रास
श्री विजय शान्ति सूरीश्वर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री शान्ति गुरु भक्त मण्डल, वेलूर
श्री शान्ति गुरु भक्त मण्डल, बीकानेर
श्री शान्ति विजय मण्डल, रायपुर
श्री विजय शान्ति सेवा समिति, रायपुर
श्री शान्ति सेवा संघ, माण्डोलीनगर

## रजत जयंति समारोह

गुरुमन्दिर के निर्माण के २५ वर्ष के अवसर पर माण्डोली नगर में स्वर्गीय श्री चम्पालालजी जैन के नेतृत्व में रजत जयंति समारोह का आयोजन किया गया। अट्ठाई महोत्सव में हजारों लोगों ने बड़े हर्षोल्लास से श्रद्धा-भक्ति पूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर मन्दिर निर्माता भक्त-शिरोमणि सेठ किसनचन्दजी भी उपस्थित थे।

रजत जयंति की चिरस्मृति में माण्डोली नगर में एक भवन का निर्माण किया गया, जिसका नाम रजत जयंति भवन रखा गया। इस भवन में संग्रहालय है, जिस में गुरुदेव के जीवनकाल में उपयोग की गई दुर्लभ वस्तुएं सुरक्षित हैं।

## नेत्र यज्ञ

गुरुदेव कहा करते थेः 'जनसेवा एवं मूक पशु सेवा ही ईश्वर सेवा है।' इसी भावना के साथ श्री शान्तिदेव सेवा समिति बम्बई, श्री भैरव नेत्र यज्ञ समिति विसलपुर, नेत्र रक्षा चेरिटेबल ट्रस्ट वीरनगर एवं श्री गुरुमन्दिर पेढी माण्डोली के सौजन्य से माण्डोली नगर में पांच विशाल नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किये। जिसमें हजारों ग्रामीण लोगों को लाभ मिला। अब यहां श्री भैरव नेत्र यज्ञ समिति विसलपुर, गुरुदेव शान्तिसूरी हेल्थ फाउंडेशन बम्बई, श्री माण्डोली नगर जैन संघ व गुरुभक्तों के सहयोग से एक विशाल 'श्री गुरुदेव शान्तिसूरी नेत्र चिकित्सालय' निर्मित किया गया है, जिसका उद्घाटन जन्मशताब्दि महोत्सव के अवसर पर ३० जनवरी १९९० को किया गया, जो नेत्र शल्य चिकित्सा एवं अन्य सभी सुविधाओं से युक्त है।

नेत्र चिकित्सालय - माण्डोली

पृष्ठ प्रदत्त | स्व. श्रीमती केसर बाई चम्पालाल लूकड़, जोधपुर

# महान योगीराज
# गुरुदेव श्री शांतिसूरीश्वरजी भगवान
# जन्म शताब्दी समारोह

# गुरु श्री शांति सूरी जन्म शताब्दी

१९४६ (वि. सं., वंसत पंचमी) २०४६

श्री माण्डोली नगर

# जन्म शताब्दी महोत्सव

इस शताब्दी के युग पुरुष, आध्यात्मिक योग की महान् प्रतिमूर्ति, स्वर विज्ञान के निष्णात ज्ञाता, युग दृष्टा, ऊँ शान्ति के उद्‌बोधक, परम उपकारी परम पूज्य गुरुदेव श्री शान्ति सूरीश्वरजी ने जीवन में त्याग, साधना व अलौकिक शक्तियों की दिव्य ज्योति से समस्त विश्व को चमत्कृत कर आलोकित किया और अपने सम्पूर्ण जीवन को विश्व कल्याण एवं प्राणी मात्र की सेवा में लगा दिया। वे एक ऐसे ज्योति पुंज थे जो प्रेरणा स्रोत है। ऐसे महापुरुष की जन्म शताब्दी मनाना हम सबके लिए परम् सौभाग्य की बात है।

श्री गुरु मन्दिर पेढ़ी एवं श्री माण्डोली नगर जैन संघ द्वारा आयोजित इस जन्म शताब्दी महोत्सव में हजारों भक्तों ने श्रद्धा पूर्वक भाग लेकर अपने आपको गौरांवित किया है।

शताब्दी महोत्सव का शुभारंभ (माघ वद 13, बुधवार, दिनांक 24-1-1990 से माघ सुद 6, गुरुवार दिनांक 1-2-1990) श्री वृहत अष्टोत्तरी शांति स्नात्र महापूजन सहित अष्टान्हिका महोत्सव से किया गया। जिसकी विशाल तैयारियाँ बहुत पहले से ही प्रारम्भ कर दी गई थी। जगह -जगह स्वागत द्वारों, विशाल पांडालों और रंग-बिरंगी रोशनियों से सम्पूर्ण माण्डोली नगर को इन्द्रपुरी सा सजाया गया था। हजारों भक्तों व श्रद्धालुओं के हर्षोल्लास-उमंग और भक्ति से सम्पूर्ण वातावरण आनन्द से लहलहा उठा था।

समारोह की मंगलमय स्वर्णीम सुप्रभात के शुभ मुहूर्त में मांगलिक स्वर लहरियों, घंटनाद व जय जयकार के साथ झंडारोहण किया गया, जो शताब्दी वर्ष पर्यंत लहराता रहा। करतल ध्वनी के साथ शताब्दी के प्रतीक रंग-बिरंगे अनेकों गुब्बारे आकाश में उड़ाये गए, जो अनन्त आकाश में ऊपर उठते जा रहे थे और चारों ओर दूर-दूर तक फैलकर शताब्दी का नव संदेश जन-जन को दे रहे थे।

गुरु मन्दिर में कुंभ स्थापना एवं अखण्ड दीप से प्रारम्भ अष्टान्हिका महोत्सव पक्षाल, पूजा - अर्चना, भक्ति व आरती से आलोकित रहता और देर रात तक भक्ति- भावना के विविध कार्यक्रमों से गूंजता रहता था।

समारोह में गुड़ाबालोतान, वेलूर, रायपुर, बीकानेर, बागरा, थूर, पूना, खैरागढ़राज, जोधपुर, अहमदाबाद, माण्डोली आदि कई स्थानों की मण्डलियों व भक्तों के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध कलाकारों ने भक्ति - भावना में भाग लेकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर लिया।

महोत्सव में वरघोड़ों के दृश्य देखने योग्य थे। विशेषकर वर्षीदान का वरघोड़ा जो माण्डोली से 5 कि.मी. दूर गुरुदेव के दीक्षा स्थल-रामसीन से निकाला गया था। वरघोड़े में नगाड़े-निशान, बैण्ड-बाजे, घोड़े-हाथी, इन्द्रध्वजा व रथ के साथ सैकड़ों पैदल भक्त और भक्ति के आनन्द में डूबे युवक-युवतियाँ नाचते-गाते ऐसे प्रतीत होते जैसे देवलोक में कोई महामहोत्सव हो रहा हो। वर्षीदान के वरघोड़े में माण्डोली की एक दीक्षार्थी बहन ने भी भाग लिया।

महोत्सव में पूना के कलाकारों द्वारा निर्मित गुरुदेव के जीवन को दर्शाते रंगोली के तीन सुंदर दृश्य व एक गुफा की झांकी में हिंसक जानवरों व दूधारु पशुओं के साथ प्रकृति के सुरम्य वातावरण में ध्यानस्थ गुरुदेव को बड़े कलात्मक रुप से दर्शाया गया था।

प्रभात फेरी व प्रभाती भजनों से प्रारम्भ बसंत पंचमी का गुरु जन्म महोत्सव व गुरु मन्दिर की प्रतिष्ठा का दिन तो देखने योग्य था। सम्पूर्ण माण्डोली नगर हजारों-हजारों शहरी व ग्रामीण नर-नारियों से हिलोरे ले रहा था। इस दिन सभी जातियों व संप्रदाय के लोगों ने गुरु भक्ति व 'फले चुनड़ी' का आनन्द लिया। कई गुरुभक्त तो रात को ही गुरुदेव के जन्मस्थल-मणादर पहुँच गए थे। भक्तों ने उस झोंपड़ी में जहाँ गुरुदेव का जन्म हुआ था, थाली बजाकर बड़े हर्षोल्लास से भक्ति भाव में झूम उठे। किसे पता था कि आज से ठीक सौ वर्ष पूर्व इसी झोंपड़ी में जन्मा एक साधारण - अहीर बालक एक दिन असाधारण होकर दुनिया का सरताज हो जाएगा।

महोत्सव में प्रतिदिन सुमतिनाथ भगवान, दादा गुरु व शान्ति गुरु मंदिर में प्रतिमाओं की सुन्दर अंग रचना होती थी। बसंत पंचमी के दिन सभी मंदिरों में फूलों की भव्य आंगी दर्शनीय थी। सभी भक्तों ने अपने-अपने ढ़ंग से भाव-विभोर होकर महोत्सव में भाग लिया।

सम्पूर्ण महोत्सव के हर कार्यक्रम की सूचना, आँखों देखा हाल सूचना केन्द्र से प्रसारित एवं प्रचारित किया था। सभी आयोजनों को रंगीन छायाचित्रों व वीडियो-ऑडियो कैसेटों में रिकार्ड किया गया है।

इस अवसर पर गुरु मंदिर में पीछे के बरंडे में (कला दीर्घा में) गुरुदेव के जीवन से सम्बंधित स्थलों के रंगीन छायाचित्रों की प्रदर्शनी स्थाई रूप से लगाई गयी है।

इस अवसर पर श्री गुरुमन्दिर माण्डोली व अन्य संस्थाओं व भक्तों द्वारा गुरुदेव के जीवन चरित्र, भक्ति गीतों आदि की कई पुस्तकें, पोस्टर, छायाचित्र, स्टीकर आदि प्रकाशित किए गए, कई उपयोगी सामग्रियाँ- बैज, चांदी व पंचधातु के सिक्के भी बनाये गए। जिनके विक्रय के लिए पेढ़ी के बाहर एक स्टॉल भी लगाया गया था।

श्री माण्डोली नगर में जन्म शताब्दी महोत्सव में श्री सुमतिनाथ भगवान के मंदिर में नूतन पार्श्व जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा की गई। साथ ही श्री भैरव नैत्र यज्ञ समिति - बिसलपुर, श्री गुरुदेव शांतिसूरी हैल्थ फाउन्डेशन-बम्बई, श्री जैन संघ-मांडोली व गुरुभक्तों के संयुक्त प्रयासों से यहाँ श्री गुरुदेव

## व्यवस्थापक समिति के सदस्यगण

शान्तिसूरी नेत्र चिकित्सालय का शुभारम्भ किया गया ।

स्वामी वात्सल्य के लिए जहाँ एक विशाल पांडाल (पलटा) बनाया गया था वहीं जगह जगह टी स्टॉल भी बनाए गए । बहु संख्यक यात्रिओं के लिए यहाँ की समस्त धर्मशालाएँ खचाखच भरी हुई थी वहीं विशाल टेंटों की सुविधा बहुत सुन्दर और व्यवस्थित की गई थी । यात्रिओं की सुरक्षा के लिए सिक्युरिटी गार्डस् की भी व्यवस्था थी । प्रशासन व सभी संबंधित विभागों की ओर से भी समारोह को सफल बनाने में पूरा सहयोग मिला ।

इस विशाल भव्य महोत्सव को सुव्यवस्थित ढंग से आयोजित करने के लिए श्री गुरु मंदिर पेढ़ी के सदस्यों के अतिरिक्त निम्नलिखित महानुभवों की एक व्यवस्थापक समिति का गठन किया गया और अन्य उपसमितियाँ भी बनायी गई जिसमें सभी युवा कार्यकर्ताओं ने बडे उत्साह से भाग लिया ।

संघवी राजमलजी चुन्नीलालजी, पूना
शा. मूलचन्दजी पनाजी, पूना
शा. हिमतमलजी हिराजी, पूना
शा. भरतकुमारजी तारचन्दजी, पूना
संघवी ओंकारमलजी देवाजी, पूना
शा. उम्मेदमलजी गेनाजी, माण्डोली
शा. ओंकारमलजी तलकाजी, माण्डोली
शा. नथमलजी चुनाजी, माण्डोली
शा. चुन्नीलाल बाबूजी, इस्लामपुर
शा. रमेशकुमार खेताजी, तलेगांव दाभाड़े
शा. बच्चुलाल हुकमांजी, तलेगांव दाभाड़े
संघवी कांतिलाल शंकरजी, पूना
शा. कांतिलाल जीवाजी, पूना
शा, कांतिलाल चंदाजी, माण्डोली
शा. खेमचंद बाबुजी, कोयम्बतुर
शा. असलाजी लालाजी, पूना
शा. छोगालाल भुबाजी, सुमेरपुर
शा. लालचंद खासाजी, माण्डोली
शा. मंछाजी लुंबाजी, पूना
शा. ओंकारमलजी चीनाजी, बेंगलोर
शा. खेमचंद रिखबचंदजी, पूना

इस प्रकार देश के कोने कोने से गुरु जन्म शताब्दी मनाने के शुभ समाचार मिलते रहे है । मद्रास, कुडलूर, उटकमण्ड, धमतरी, सोलापुर, रायपुर, बीकानेर, फलोदी आदि कई स्थानों पर शताब्दी बर्ष में कई विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

इसके अतिरिक्त गुरुदेव की इस जन्म शताब्दी की स्मृति में अन्य कई योजनाएँ बनाई गई है, जो समयानुसार क्रियांवित की जा रही है । सम्पुर्ण कार्याक्रमों की विस्तृत जानकारी श्री शांति सेवा संघ - माण्डोली नगर द्वारा प्रकाशित 'शांति ज्योति' में प्रकाशित की गई है ।

सदगुरुदेव की पुण्य स्मृति में जन्म शताब्दी महोत्सव का एक प्रतीक भी बनाया गया । जो हमें समस्त बुराईयो से ऊपर उठकर, अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ते हुए ज्ञान-ध्यान, में लीन होकर आत्मशांति प्राप्त करने की सतत् प्रेरणा देता है ।

पृष्ठ प्रदत्त — स्व. श्रीमती केसर बाई चम्पालाल लूकड़, जोधपुर

रांगोली

गुफा की एक भव्य झांकी

पृष्ठ प्रदत्त | कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

पृष्ठ प्रदत्त

स्व. श्रीमती केसर बाई चम्पालाल लूकड़, जोधपुर

पृष्ठ प्रदत्त

कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

पृष्ठ प्रदत्त

स्व. श्रीमती केसर बाई चम्पालाल लूकड़, जोधपुर

पृष्ठ प्रदत्त | कान्तिलाल चम्पालाल जैन - जोधपुर

ॐ

# गुरुदेव एक

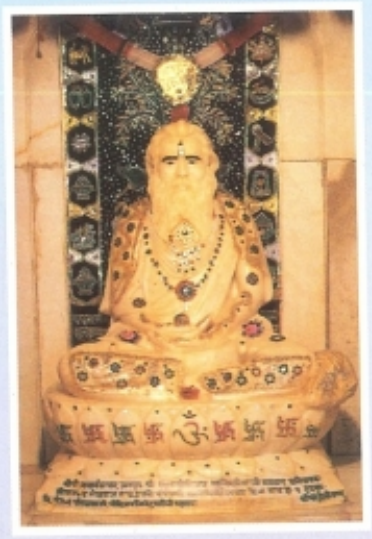

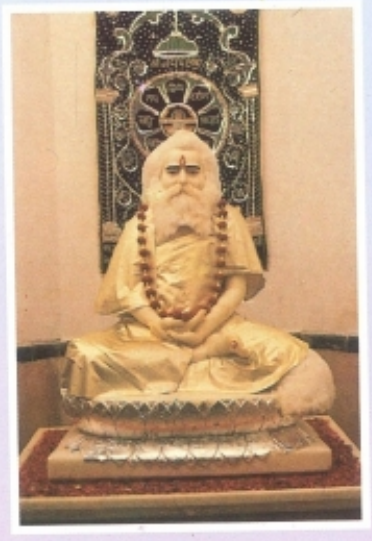

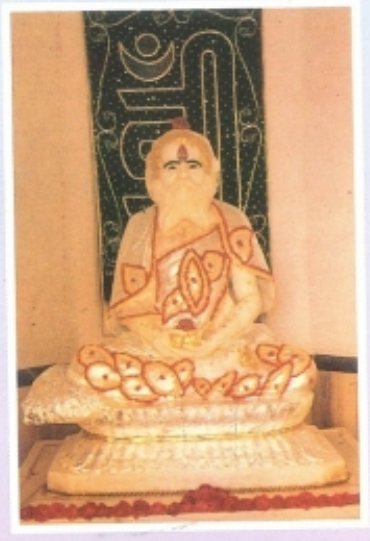

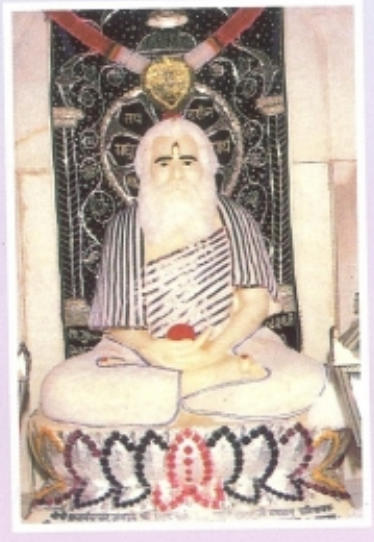

ॐ

# रूप अनेक

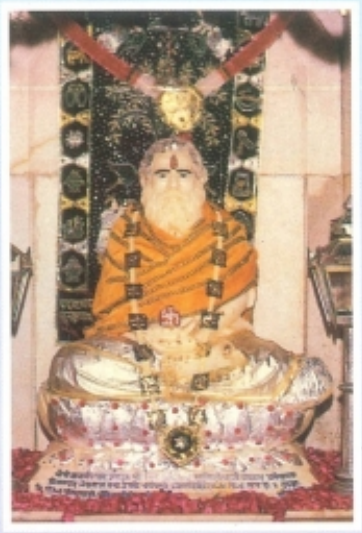

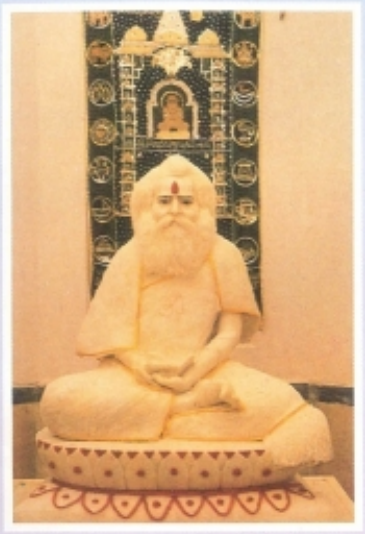

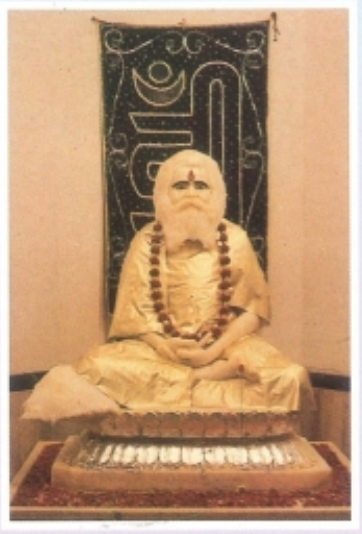

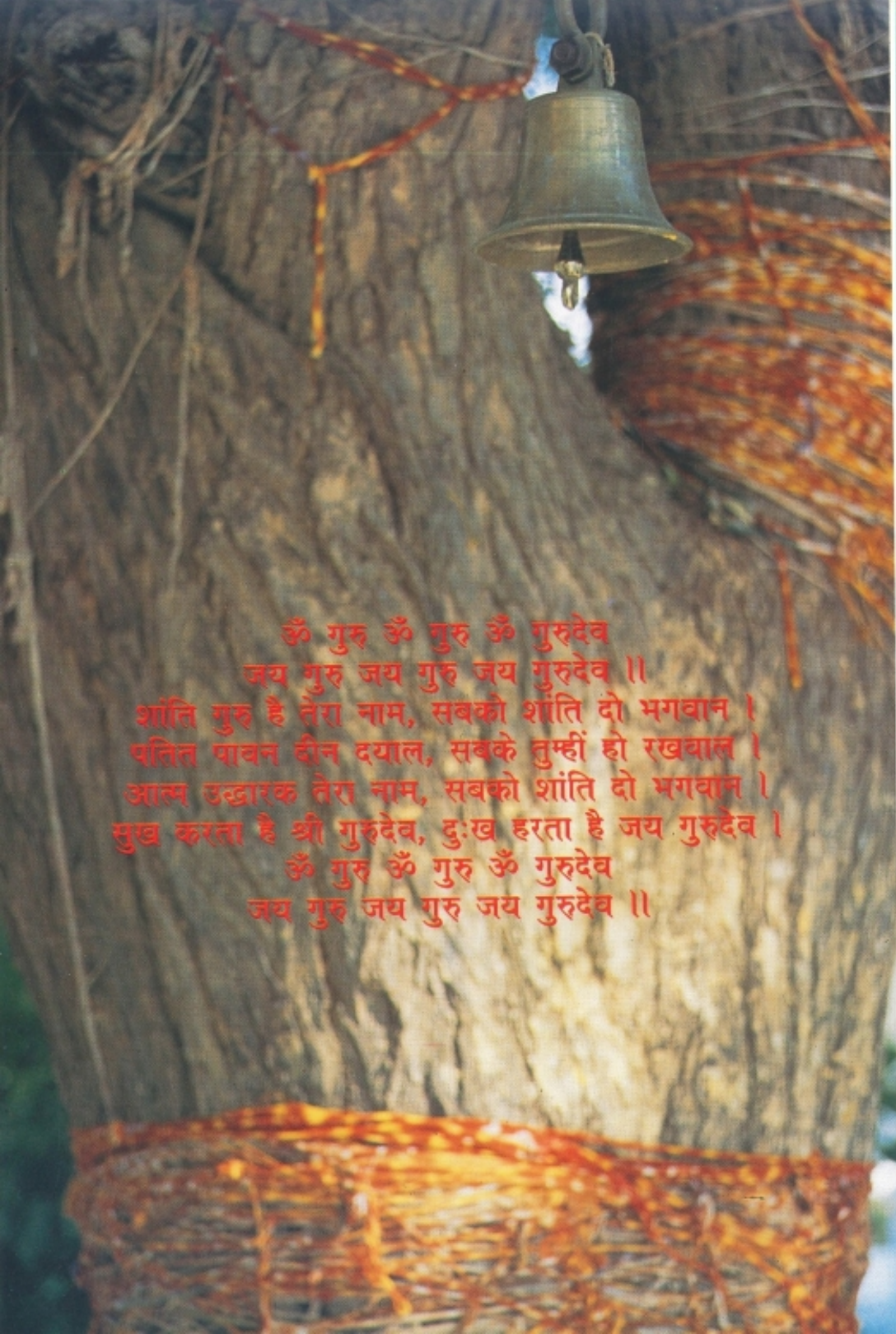

ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरुदेव
जय गुरु जय गुरु जय गुरुदेव ॥
शांति गुरु है तेरा नाम, सबको शांति दो भगवान ।
पतित पावन दीन दयाल, सबके तुम्हीं हो रखवाल ।
आत्म उद्धारक तेरा नाम, सबको शांति दो भगवान ।
सुख करता है श्री गुरुदेव, दुःख हरता है जय गुरुदेव ।
ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरुदेव
जय गुरु जय गुरु जय गुरुदेव ॥

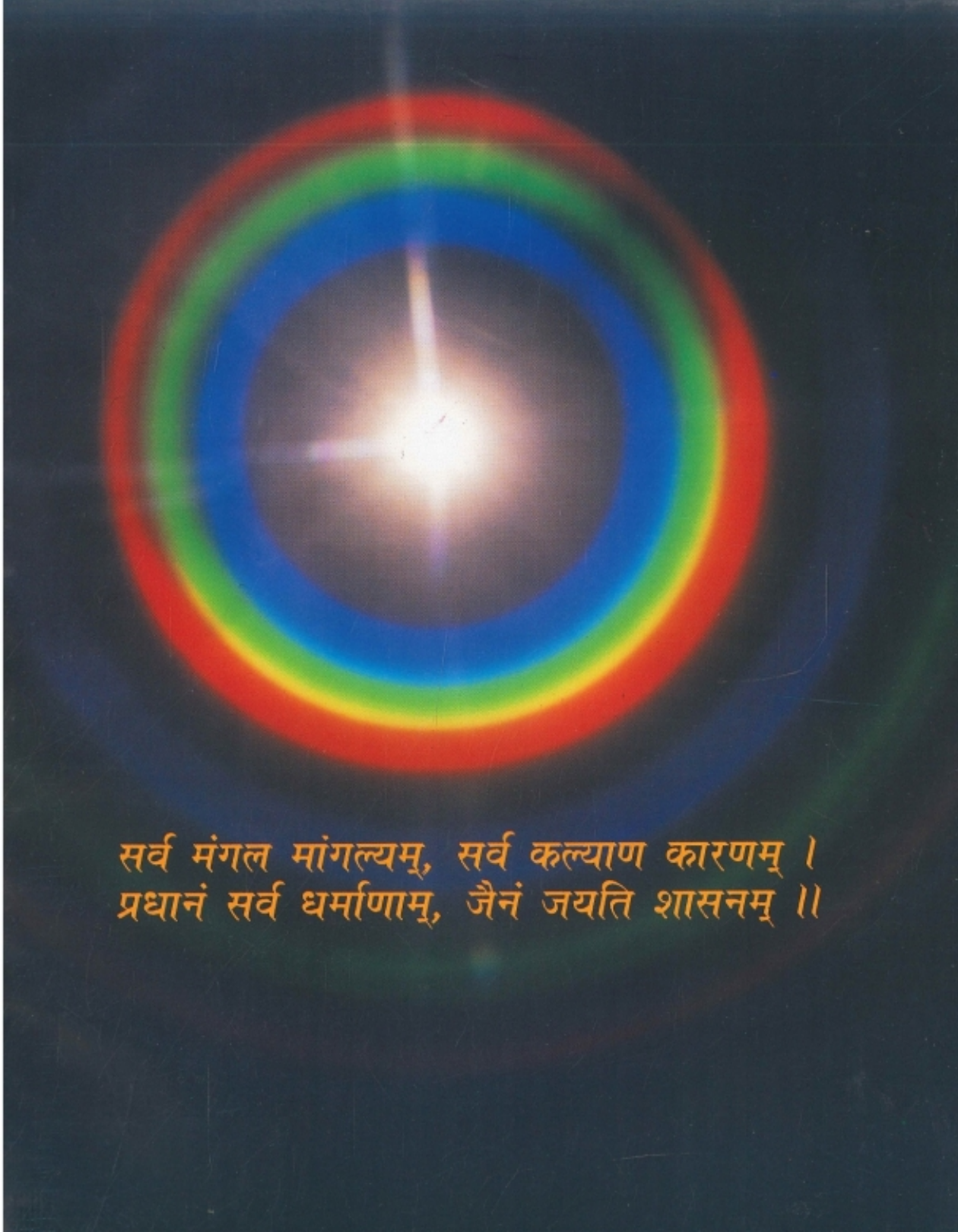

सर्व मंगल मांगल्यम्, सर्व कल्याण कारणम् ।
प्रधानं सर्व धर्माणाम्, जैनं जयति शासनम् ।।

# पूज्य गुरुदेव के चरणो में समर्पित श्रद्धांजलियाँ

## स्वर्गीय श्री जगदगुरु आचार्यदेव महान् योगिराज श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी भगवान् के दिव्य जीवन-चरित्र को प्रकट करने वाली कुछ श्रद्धांजलियाँ–

मैंने अपने जीवन काल में यदि कोई अद्‌भूत वस्तु देखी है तो ये योगनिष्ठ श्री शान्तिसूरीश्वरजी महाराज हैं। वर्तमान काल के इतने साधुओ में केवल ये ही योग क्रिया और आध्यात्मिक-ज्ञान के विषय में अग्रणी हैं। ऐसे महान् योगीश्वर को समझने के लिए महान् शक्तिशाली आत्मा बहुत लम्बा समय लेकर ही इन्हें शायद कुछ समझ सकता है।

योगशास्त्र आदि अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों
के रचयिता, योगनिष्ठ आचार्य भगवान्
**श्री विजयकेसर सूरीश्वरजी महाराज**

पिछले उपवास की रात को मुझे एक दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। उसमें आबू में विराजते योगिराज जगदगुरु आचार्य भगवान् श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी महाराज के दर्शन हुए। इससे मुझे पूर्ण श्रद्धा हुई की आचार्य का जो आदेश है उसका प्रकृति के साथ संबंध है। इस कारण उनके प्रति विश्व के महात्मा पुरुष के रूप में मेरा विश्वास स्थापित हुआ।

तपस्वी मुनि श्री
**मिश्रीलालजी**

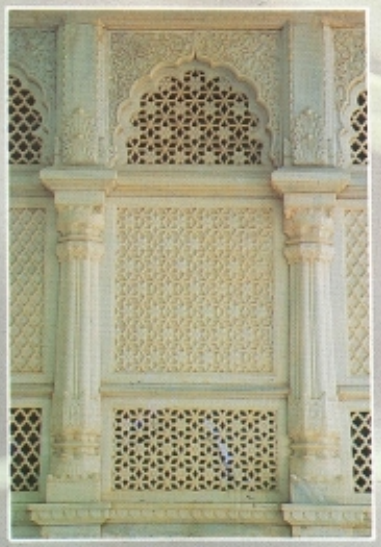

ये एक उच्च कोटि के महापुरुष हैं। इनका हृदय बालक की तरह खरा और निर्दोष है। आप श्री का सान्निध्य मुझे अपूर्व प्रतीत हुआ है।

**सर प्रभाशंकर पट्टणी**
भावनगर

विश्व के आदर्श पुरुषों में श्री शान्तिसूरश्वरजी श्रेष्ठ हैं। गुरुदेव शान्तिसूरीश्वरजी को सभी कुदरती शक्तियाँ प्राप्त हैं। कोई मनुष्य वास्तव में गुरुपद का दावा कर सकता है तो श्री शान्तिसूरीश्वरजी ही हैं।

पंजाब केसरी
**स्व. लाला लाजपतराय**
लाहौर

आप महानतम से महान, पवित्रम से पवित्र और उच्चतम से उच्च है।

**– स्वामी रामदास, केरल**

मैं आपको कभी नहीं भूल सकता और आपको सदा प्रेम और श्रद्धा के भाव से याद रखूंगा ।

**– सर जी. डी. ओगिल्वी**
एजीजी राजपुताना (१९३२-३७)

आपका नाम वस्तुतः आशाजनक शकुन समझा जावे ।

**–सर आर्थर लोथियान**
एजीजी राजपुताना (१९३७-४२)

गुरुदेव के सात्विक जीवन और चरित्र से सभी लोग प्रभावित होते थे और उन्हें पूज्य समझते थे ।

**– सर जी.वी.बी. गीलन**
एजीजी राजपुताना (१९४२-४६)

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपनी आंखों के सामने पवित्र बाइबल के किसी पृष्ठ का महान् दृश्य देख रहा हूँ ।

**– रॉल बॉप**
कौंसल फॉर ब्राजील (जापान)

मैंने दुनिया के हर देश की यात्रा की है । मैं अनेक महापुरुषें से मिली हूं । अन्त में गुरुदेव महाराज श्री शान्तिसुरीश्वरजी से भी मिली । गुरुजी परमेश्वर ही हैं इसमें कोई भी सन्देह नहीं है ।

दी पॉवर आव इंडिया आदि
पुस्तकों की रचयित्री
**महान विदुषी मिस माइकेल पीम,**
सम्पादिका, ट्रिब्यून हेरल्ड, न्यूयॉर्क

मैं इस बात से अभ्यस्त हो गई थी कि गुरुदेव के लिए न दीवारें हैं, न दूरी ।

**– नील क्राम कूक**
माई रोड टू इण्डिया

मेरे गुरु शांतिविजयजी महाराज, जिनके मैंने भारत में दर्शन किये और जिन्होंने मुझे शान्ति प्रदान की ।

**– जीं मार्कस राइविरे, पेरिस**

आपश्री का शब्द मेरे लिए हमेशा आज्ञारूप है ।

**– महाराजा गंगासिंह, बीकानेर**

आप श्री एक उच्च कोटि के महापुरुष हैं । आप श्री ने योगाभ्यास से प्राप्त होने वाली विश्वदृष्टि को पाया है । आप श्री सरल प्रकृति के एक योगपरायण सत् पुरुष हैं ।

**सर दौलतसिंहजी महाराजा**
लींबड़ी

आपके वचनों में सभी शास्त्रों का समावेश हो जाता है । आपका ध्येय विश्वप्रेम है । जाति, धर्म और देश का भेदभाव न रखते हुए आप सभी को अपनाते हैं ।

**ज्योर्ज ज्युटजेलर (स्वीट्जरलैंड)**

(उपरोक्त कुछ महत्वपूर्ण श्रद्धांजलियाँ गुरुदेव के जीवन काल में ही विभिन्न पत्रों व प्रकाशनों में से उद्धृत की गई है ।)

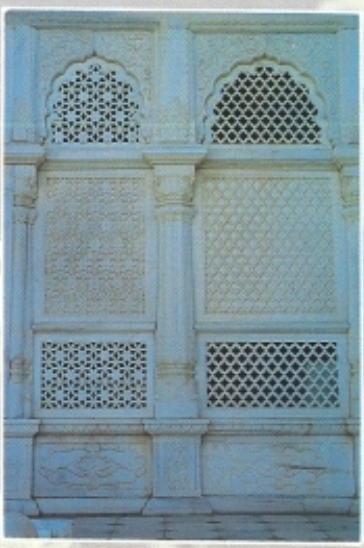

जैन तीर्थ
राजस्थान
एवं
गुजरात
संकेत
जैन स्थल
सड़क मार्ग
रेल मार्ग

# शान्ति मंदिर दर्शन

## मांडोली गांव के परम उद्धारक

# त्रिकालदर्शी दादा गुरु श्री धर्म विजय जी महाराज का मंदिर

## मांडोलीनगर (जालोर)

इस मंदिर का निर्माण श्री संघ मांडोलीनगर द्वारा कराया गया था। गुरुदेव भगवान श्री शान्तिसूरीश्वर जी ने इस मंदिर की प्रतिष्ठा फाल्गुन सुद 10 वि.सं. 1994 दिनांक 10 मार्च, 1938 के शुभ दिन कराई, साथ ही गांव में भी श्री सुमति नाथ भगवान के मंदिर की प्रतिष्ठा भी कराई। उस वक्त इस मंदिर में सिर्फ दो प्रतिमाएं ही विराजमान कराई गई (1) दादा गुरु श्री धर्मविजय जी महाराज, (2) गुरु श्री तीर्थ विजय जी महाराज।

गुरुदेव भगवान के निर्वाण के बाद, गुरुदेव के आदेशानुसार दादा गुरुदेव की छत्री जो कि श्री संघ ने वि.सं. 1949-50 सन् 1892-93 में बनवाकर दादा गुरु की चरण पादुका स्थापित की थी, के पास ही गुरुदेव भगवान की आज्ञानुसार गुरुदेव भगवान का अग्नि संस्कार किया गया। इस समाधि स्थल पर सफेद संगमरमर का भव्य मंदिर का निर्माण सेठ किशनचन्द जी खियानी ने कराया, तब विचार इस छत्री का भी हुआ तथा निर्णय हुआ कि इसको भी सुन्दर सफेद संगमरमर की बनाई जावें तथा यहां विराजित चरण दादागुरु मंदिर में गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ ही दादा गुरु मंदिर में विराजित कर दिये जावें तथा एक सुन्दर प्रतिमा गुरुदेव श्री शान्ति सूरीश्वर जी भगवान की भी विराजमान कर दी जावें, तब से ही चरण पादुका एवं तीनों गुरुदेव भगवान की प्रतिमाएं यहां पर विराजमान है।

पृष्ठ प्रदत्त | महावीरचन्द सिंघवी, जोधपुर

# दादागुरु मंदिर

**घुमटी एवं हॉल, जहां गुरुदेव भगवान विराजते थे तथा नीचे खड़े भक्तों को बारी का दरवाजा खोलकर आशीर्वाद देते थे।**

गुरुदेव भगवान मांडोली आने के बहुत समय पूर्व इशारा कर दिया था। हम भक्त समझ न सकें गुरुदेव भगवान जब मांडोली में ऊपर घुमटी में विराज रहे थे, उस समय गुरु भक्त श्री उमराव चन्द सा सिंघवी दर्शनार्थ आए हुए थे। तब गुरुदेव ने बारी का दरवाजा खोल कर उस समय विराजित दादा गुरुदेव की छत्री दिखाकर हाथ से इशारा कर पूछा कि यह स्थान अच्छा है या दूसरा हाथ आबू की दिशा तरफ करके बताया कि वो स्थान अच्छा है।

दादा गुरुदेव श्री धर्मविजय जी।

उमराव चन्द सा सिंघवी जब भी आबू दर्शनार्थ पधारते तो आबू रोड़ से पैदल माउण्ट आबू पधारते थे क्योंकि बस में पहाड़ी रास्ता होने से उल्टी की शिकायत रहती थी, अतः प्रत्युतर में कहा कि भगवान यह स्थान अच्छा है - गुरुदेव भगवान कुछ न बोल कर सिर्फ यही कहा ओम शान्ति!

यह थी सच्चे दिल से भक्ति! भक्तिवश गुरु भक्त श्री उमरावचन्द सा सिंघवी उस वक्त 25 कि.मी. पैदल ही सफर कर लेते वो भी पहाड़ी रास्ते का। आत्म विश्वास इतना कि जंगली जानवरों का भय लेशमात्र भी नहीं। सब गुरुदेव सम्भाल लेंगे। यह था पक्का विश्वास और पूरी श्रद्धा!

याने गुरुदेव भगवान ने स्पष्ट इशारा कर दिया कि मांडोली ही आना है - यानि मांडोली, मांडोली तीर्थ स्थान बनेगा - बड़ा नगर बनेगा।



पृष्ठ प्रदत्त | पावनचन्द सिंघवी, जयपुर

# दादागुरु मंदिर

सिमेन्ट का पाट जिस पर गुरुदेव भगवान विराजते थे।

दादा गुरु मंदिर के पास में गांव की धर्मशाला एवं देवी देवताओं के मंदिर है उनमें सब से ऊपर बने हॉल एवं घुमटी में, जब गुरु देव भगवान मांडोली होते तो विराजते थे। उस हॉल में सिमेन्ट का एक पाट बना हुआ है - जिस पर गुरुदेव भगवान विराजते थे। इसमें खास बात यह है कि ऐसे पाट सब जगह ही बने हुएं हैं - जहाँ-जहाँ गुरुदेव भगवान विराजते थे-जैसे-बामनवाड़ जी में ऊपर हॉल के पास कमरे में, आबू तलहटी में शान्ति आश्रम में, अजारी ऊपर पहाड़ी पर बने कमरे में, देलवाड़ा ऊपर देराणी जेठाणी गोखड़ों के ऊपर गिरनारी गुफा में, भृगु आश्रम में आदि।

घुमटी का भीतरी भाग जहां गुरुदेव भगवान विराजते एवं ध्यान करते थे।

मांडोली के बुजुर्ग बताते हैं कि चरण पहले जहां थे याने गुरुदेव भगवान के मंदिर के पास दादा गुरुदेव की छत्री में, तब श्रावण वदी 6, दादा गुरुदेव के निर्वाण दिवस पर पैर के अंगूठे से दूध प्रवाहित होता था। इन चरणों को नवीन स्थान पर विराजमान करने के बाद से ऐसा होना बन्द हो गया।

दादा गुरुदेव की प्राचीन चरण पादुका।

पृष्ठ प्रदत्त शान्तिचन्द सिंघवी, जोधपुर

# दादागुरु मंदिर

दादा गुरु मंदिर का प्राचीन स्वरूप।

दादा गुरु मंदिर का जिर्णोद्धार करने के बाद, नया बहुत ही सुन्दर मन मोहक स्वरूप दिया गया है।

दादा गुरु मंदिर का नवीन स्वरूप।



पृष्ठ प्रदत्त राजेन्द्र सिंघवी, जोधपुर

# श्री शान्तिसूरीश्वर जी गुरु मंदिर, बिजापुर

## शांतिगुरु कॉलोनी, महावीर सोसाइटी के पास, बिजापुर (कर्नाटक)-586103

सम्पर्क सूत्र फोन : 08352-222574 • मंदिर फोन : 08352-260981

बिजापुर नगर में प.पू. महान योगीराज श्री शान्तिसूरीश्वरजी गुरुदेव के भक्ति कार्यक्रम की परंपरा शुरू हुए करीब चालीस वर्ष गुजर चुके हैं। राजस्थान के बागरा ग्राम से व्यवसाय हेतु बिजापुर पधारे कुछ गुरुभक्तों ने प्रति गुरुवार को पूज्य गुरुदेव की भक्ति का आयोजन प्रारंभ किया और फिर समय के साथ-साथ दिन-ब-दिन गुरुभक्तों की संख्या बढ़ती ही गई। पू. गुरुदेव की अनन्य भक्त तथा अटल श्रद्धावान श्राविका श्रीमती सुंदरबेन मूलचंदजी शाह के नाम का उल्लेख किये बिना इस इतिहास का प्रारम्भ ही नहीं हो सकता। उन पर पूज्य गुरुदेव की परम कृपा बरसती रही। पू. गुरुदेव के सानिध्य में कुछ काल रहने का तथा साक्षात् दर्शन का लाभ भी उन्हें मिला था। जीवन में आनेवाली विपदाओं तथा तकलीफों से मुक्ति के लिये उन्होंने पू. गुरुदेव को ही अपना आश्रयदाता माना था।

प्रारम्भ में श्राविका श्रीमती सुंदरबेन मूलचंदजी की प्रेरणा से गुरुभक्त शाह मूलचंदजी, संगीतकार तथा गुरुभक्त शाह उदयचंदजी, मीठालालजी, हरकंदजी, बाबुलालजी, शान्तिलालजी तथा परिवार जन एवं (मरुधर में बागरा निवासी) गुरुभक्तों ने शाह मूलचंदजी रुपाजी के निवास पर ही हर गुरुवार रात्रि को भक्ति संगीत का कार्यक्रम शुरु किया। अन्य भक्तजनों की विनती पर उनके निवास स्थान पर भी भक्ति संगीत का आयोजन होने लगा। पू. गुरुदेव का जन्मोत्सव (माघ सुद 5) तथा निर्वाण महोत्सव (आसोज वद 10) बड़े ठाठ-बाट एवं उत्साहपूर्वक स्थानीय श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर के विशाल उपाश्रय भवन में सामुहिक रुप से मनाया जाने लगा, जिसमें बिजापुर का समस्त जैन समाज भाग लेता रहा है।

करीब 6-7 साल पहले भक्ति-संगीत के एक कार्यक्रम में कुछ गुरुभक्तों ने पूज्य गुरुदेव भगवान का मंदिर बनाने की इच्छा प्रकट की तथा उपस्थित गुरुभक्तों की सहमति से श्री शान्ति गुरुभक्त मंडल ट्रस्ट का गठन किया गया। पूज्य गुरुदेव की कृपा तथा गुरुभक्तों के तन-मन-धन के सहयोग से गुरुमंदिर निर्माण का यह स्वप्न अब साकार हो गया है। पूज्य गुरुदेव की भव्य एवं मनोहारी प्रतिमा जयपुर के विख्यात शिल्पकार श्री सुभाषचंद शर्मा ने अपनी सम्पूर्ण निष्ठा एवं कड़े परिश्रम से तैयार की है।

गुरुमूर्ति बिजापुर

पूज्य गुरुदेव की प्रतिमा का कार्य पूर्ण होते ही प.पू. गच्छाधिपति श्रीमद् विजय हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त शुभ मुहुर्त माघ सुद 6, दिनांक 24 जनवरी, 2007 को पू. गुरुदेव की प्रतिमा, देवी पद्मावती एवं सरस्वती माता की प्रतिमा का नगर में प्रवेश निश्चित किया गया तथा पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव एवं प्रतिमाजी का नगर प्रवेश सम्पन्न करने हेतु त्रिदिवसीय (दिनांक 22 जनवरी, 2007 से 24 जनवरी 2007 तक) भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा तथा भजन संध्या में भक्ति की धूम मचाने हेतु इंदौर के प्रसिद्ध गायक एवं गुरुभक्त श्री लवेश जैन अपने सहयोगियों तथा साजो-सामान के साथ पधारे थे।

इस मंदिर की स्थापना तथा गुरुदेव भगवान की प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा प.पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री विजय हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पंन्यास प्रवर श्री रविन्द्र विजय जी म. सा. के शुभ हस्ते मिति द्वितीय ज्येष्ठ सुदी 10, सम्वत् 2063 वीर सम्वत् 2533, दिनांक 25-6-2007 को हुई।

इस गुरुमंदिर की स्थापना तथा प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा का महोत्सव श्री शान्ति गुरुभक्त मंडल ट्रस्ट, बिजापुर के तत्वाधान में संपन्न हुआ।

बृहत् गुरुमंदिर, बिजापुर

गुरु मंदिर, बिजापुर

पृष्ठ प्रदत्त — शाह बाबुलाल रूपचंद, बागरा – बिजापुर

# श्री शान्ति गुरुदेव जैन मंदिर

30, बेरी कालीयम्मन, कोईल स्ट्रीट, वैलूर-632004 (तमिलनाडु)

गुरुभक्त स्वर्गीय श्री गुलाबचंदजी वैद, फलोदी के दामाद गुरुभक्तश्री बस्तीमलजी को स्वप्न में गुरुदेव (सन् 1980), ने दर्शन दिये । तब से मंदिर बनाने का काम शुरु किया गया। श्री शांति गुरुदेव भक्त मंडल वैलूर का गठन किया गया और जगह ली गयी जिनमें स्वर्गीय गुरुभक्त श्रीमान् सज्जनराजजी भटेवड़ा, स्व. श्री फरजनराज जी भटेवड़ा, स्व. श्री संपतलालजी गुलेच्छा, स्व. श्री गुलाबचंद वैद आदि गुरुभक्तों का खूब सहयोग रहा। सन् 1983 में भूमि पूजन किया गया और उसके बाद सन् 2000 में प्रतिष्ठा हुई।

गुरुदेव भगवान की प्रतिमा जी की प्रतिष्ठा गुरु भगवंत श्री नन्दीरत्न विजय जी म. सा. के शुभ हस्ते मिति माघ सुदी 5, सम्वत् 2056 दिनांक 10-2-2000 को सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा कराने का लाभ गुरू भक्त श्री पारसमल जी बस्तीमल जी गुलेच्छा, निवासी फलोदी वालों ने लिया ।

सम्पर्क सूत्र : दिनेश कुमार, भटेवड़ा 94433-32123, 98941-55919

गुरु प्रतिमा वैलूर



पृष्ठ प्रदत्त रीखबचन्द दिनेशकुमार भटेवड़ा, वैलूर

# श्री शान्तिसूरीश्वर जी गुरु मंदिर

दादावाड़ी, बालकलावा, कुन्नुर, (तमिलनाडु)
मंदिर फोनः 0423-2207357

श्री मिलाप चन्द जी सेठिया एवं गुरु भक्तों की प्रेरणा एवं सहयोग से श्री गुरु मंदिर का स्वप्न साकार हो सका। मंदिर में गुरु प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्य अशोक रत्न सूरीश्वर जी के शुभ हस्ते मिति जेठ वदी 2 सम्वत् 2055 दिनांक 13-5-1998 को सम्पन्न हुई। गुरुदेव की प्रतिमा गुरु मंदिर में विराजमान (प्रतिष्ठा) कराने का लाभ श्री मिलापचन्द महेन्द्र कुमार सेठिया को मिला।

इस गुरु मंदिर में श्री पद्मावती देवी एवं सरस्वती देवी की प्रतिमायें हैं। यहाँ एक ही कम्पाउण्ड में श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिन मंदिर, श्री जिनदत्त सूरी दादाबाड़ी एवम् आचार्य सम्राट श्री विजय शान्ति सूरीश्वरजी का गुरु मंदिर है।

श्री शान्तिसूरीश्वर जी गुरु मंदिर - कुन्नुर

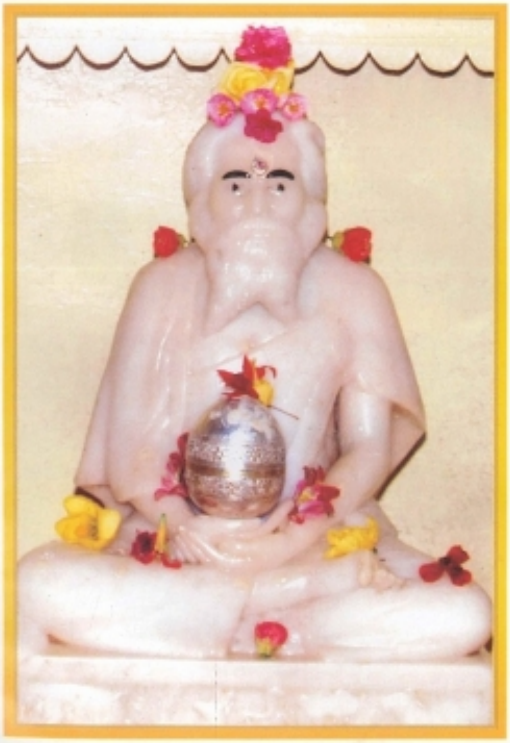

यह श्री गुरुदेव भगवान की प्रतिमा परम गुरुभक्त श्री बालचंद सा बच्छावत, कुन्नुर के घर मंदिर में विराजमान है। यह प्रतिमा जी अति प्राचीन है। यहाँ पर गुरुदेव के नाम कन्या उच्च माध्यमिक पाठशाला भी है। कुन्नुर पधारें तो अवश्य दर्शन का लाभ लें, ऐसी विनती है।

पृष्ठ प्रदत्त | मिलापचन्द महेन्द्रकुमार सेठिया, फलोदी - कुन्नुर

# श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेताम्बर मन्दिर

एन.एच.-5, मंगोली, तह.-चौद्धवार, कटक (उड़ीसा) 754025

फोन : 0671-2492987

श्री मंदिर शिखर एवं ध्वज

श्री गुरु प्रतिमा - श्री विजय शान्ति सूरीश्वर जी भगवान

वर्तमान गच्छाधिपति परम् पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीश्वरजी म.सा., की प्रेरणा से मंदिर निर्माण कराकर, उसी मंदिर में आचार्य भगवंत श्रीमद विजय शान्ति सूरीश्वर जी भगवान की प्रतिष्ठा चैत्र शुक्ल 10 वि. सं. 2059, दिनांक 22 अप्रेल 2002 के शुभ दिन कराई गई।

गुरुदेव भगवान की प्रतिमा जी की प्रतिष्ठा गुरु भक्त श्री अबीर चन्द जी कोचर अपने सभी भाई, बेटे, पोते, बीकानेर वालों द्वारा (हाल मुकाम कटक) के शुभ हस्ते हुई।

मन्दिर के प्रांगण में स्थायी अचलगढ़ पहाड़ की रचना की गई। कलकल करते बहते झरने गुफा-शेर, चिते, गाय बकरी आदि जानवरों के बीच गुरु भगवान विराजमान हैं। जिनेश्वर देव के मन्दिर में श्री गुरु प्रतिमा भी विराजमान है। जिसकी विधिवत् सेवा पूजा आरती दोनों समय होती है। यहां पधारने पर इन दोनों जगहों का दर्शन लाभ प्राप्त होगा। कृपया जब कभी भी इस मार्ग से गुजरें यहां उतरकर जिनेश्वर देव एवं गुरु भगवंत की सेवा पूजा का लाभ अवश्य लेवे। यह इस कोचर परिवार की भाव भरी सकल श्री संघ से विनती है - कटक कोलकता से रेल द्वारा 480 किमी. दूरी पर है एवम् कोलकत्ता चैन्नई मैन लाईन पर स्थित है।

झांकी

जिनेश्वर देव - श्री वासुपूज्य स्वामी



पृष्ठ प्रदत्त अबीरचन्द उत्तमचन्द कोचर, कटक – बीकानेर

# श्री शान्तिनाथ भगवान – गुरु श्री शांति सूरीश्वर जी मंदिर

धनला - जिला पाली (राज.)

गुरु श्री शान्ति सूरीश्वर जी भगवान

आचार्य श्री जिनेन्द्र सूरी जी म.सा. के शुभ हस्ते वि. सं. 2025 में गुरुदेव भगवान की प्रतिष्ठा परम गुरु भक्त श्री सूरजमल जी छाजेड़ ने कराई। यह स्थान मारवाड़ जं. से 30 कि.मी. है।

गुरुदेव भगवान जब बामणवाड़ जी विराजते थे तब धनला (पाली) के भक्त दर्शनार्थ आए तथा विनती कि गांव की बढ़त नहीं हो रही है - गुरुदेव भगवान ने दूसरे दिन मिलने को कहा।

दूसरे दिन गुरुदेव भगवान ने सुबह जल्दी धनला मंदिर का अवलोकन किया तथा मंदिर के पुजारी को दर्शन दिये - गोचरी की विनती करने पर गुरुदेव ने फरमाया कि मुझे एक घर से गोचरी मिल गई है। यह पूरी बात पुजारी ने बामणवाड़ से वापस आये गांव वालों को बताई तथा बताये गये उपाय भी बताये - उपाय करने के बाद गांव की बहुत उन्नति हुई। धनला गांव जोजावर से 10 कि.मी. है। दर्शनार्थ अवश्य पधारें - ऐसी विनती है।

पृष्ठ प्रदत्त श्रीमती चन्द्रा बहन, सूरजमल छाजेड़, धनला - अहमदाबाद

# श्री सिंमधर-शान्तिसूरी जैन मंदिर

10/2, वासवी टेम्पल स्ट्रीट, विश्वेशपुरम्, बैंगलोर-560 004

मंदिर फोनः 080-41506842

इस मंदिर जी की प्रतिष्ठा पू. अशोक रत्नसूरी जी म. सा. के शुभ हस्ते मिति पौष सुदी 14 सम्वत् 2061 दिनांक 24-1-2005 को हुई। प्रतिष्ठा कराने का लाभ गुरु भक्त श्री चम्पालाल जी सिंघवी निवासी चेलावास (राज.) हाल बैंगलोर वालों ने लिया।

अचलगढ़ (आबू) में भक्ति करते हुये सुरेश भाई कोठारी व जयन्त भाई मुणौत को बैंगलोर में मंदिर बनवाने की भावना हुई। पहले ऐवेन्यु रोड़ में किराये का मकान लेकर गुरु मंदिर की स्थापना की। फिर श्री सिंमधर शान्तिसूरी जैन ट्रस्ट बनाकर विश्वेशपुरम् में चम्पालालजी सिंघवी से उचित मूल्य में जगह लेकर इकत्तर ट्रस्टी बनाये। अन्तस्थः प्रेरणा से ही मन्दिर बना, भूमि पूजन, खात मोहर्त एवं शिलान्यास आ. स्थूलभद्रसूरी जी की निश्रा में हुये। प्रतिष्ठा आ. अशोक रत्न सूरीजी, आ. अमरसेन सूरीजी पन्यास जिन रत्न सागरजी, उपाध्याय मणिप्रभ सागरजी, आ. अमित यथसूरीजी, उपाध्याय चन्द्रजित सागर जी, विनयमुनि आदि ठाणा उपस्थित थे। इस संघ में तेरापंथी - स्थानक वासी - मन्दिर मार्गी - त्रिस्तुतिक - खरतरगच्छ सभी को बिना भेदभाव के जिसका पहले नाम आया उसको ही ट्रस्टी बनाया।

वर्तमान में धार्मिक पाठशाला सुचारु रूप से चल रही है। धर्मशाला के लिए 2400 स्कवायर फुट की जगह मन्दिर के बिलकुल पास में ले ली है, कार्य शीघ्र शुरु किया जायेगा।

श्री शान्तिगुरुवेव वी.वी.पुरम्, बेंगलोर

श्री सींमधरस्वामी वी.वी.पुरम्, बेंगलोर

इस मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय जिस किसी परिवार में मतभेद थे वो गुरुदेव की कृपा से मिट गये और उन परिवारों ने मिलकर सामूहिक चढ़ावे लिये तथा प्रेम भाव कायम हो गया, यह इस प्रतिष्ठा की महिमा थी। हर गुरुवार शाम को गुरुभक्ति होती है, दिन भर में हजारों लोग दर्शन करने आते हैं।

इस मन्दिर में जो कोई भी आया, जो माँगा, उसे वो मिला।

- जय गुरुदेव !

# बीकानेर (राज.) में प्रतिष्ठित गुरु प्रतिमाएँ

### श्री ऋषभदेव जी का मन्दिर
कोचर पंचमन्दिर, कोचरों का चौक, बीकानेर

प्रतिष्ठा : विक्रम सम्वत् 2016, फाल्गुन सुद 3
दिनांक : सोमवार, 29-2-1960
प्रतिष्ठाकारक : श्री चन्द्रोदयसूरीजी
प्रेरणादायक : श्री बसंतश्रीजी महाराज साहिबा
प्रतिमा प्रतिष्ठित
कराने वाले का नाम : श्री जिनदासजी कोचर, बीकानेर

### कोचरों की दादाबाड़ी
गंगाशहर रोड़, बीकानेर

प्रतिष्ठा : विक्रम सम्वत् 2016, फाल्गुन सुद 3
दिनांक : 29-2-1960, सोमवार
प्रतिष्ठाकारक : श्री चन्द्रोदयसूरीजी
प्रेरणादायक : श्री बसंतश्रीजी महाराज साहिबा
प्रतिमा प्रतिष्ठित
कराने वाले का नाम : श्री जिनदासजी कोचर, बीकानेर

### घर देरासर
ढढ्ढों का चौक, बीकानेर

प्रतिष्ठा : विक्रम सम्वत् 2016, फाल्गुन सुद 3
दिनांक : 29-2-1960, सोमवार
प्रतिष्ठाकारक : श्री चन्द्रोदयसूरीजी
प्रेरणादायक : श्री बसंतश्रीजी महाराज साहिबा
प्रतिमा प्रतिष्ठित
कराने वाले का नाम : श्री प्रताप सिंह जी ढढ्ढा, बीकानेर

### श्री नेमीनाथ जी का मन्दिर
भाण्डाशाह जैन मन्दिर के पास, बीकानेर

प्रतिष्ठा : विक्रम सम्वत् 2048, द्वितीय वैशाख सुदी 6
दिनांक : 19-5-1991
प्रतिष्ठाकारक : आचार्य श्रीमद् नित्यानन्दसूरीजी
प्रतिमा प्रतिष्ठित कराने
वाले का नाम : श्री पूनमचन्दजी विजयचन्द जी बांठिया
सिपानीयों का मोहल्ला, बीकानेर

# बीकानेर (राज.) में प्रतिष्ठित गुरु प्रतिमाएँ

### श्री महावीर स्वामी जी का मन्दिर
डागों का चौक, बीकानेर

प्रतिष्ठा : विक्रम सम्वत् 2048, द्वितीय वैशाख सुदी 6
दिनांक : 19-5-1991
प्रतिष्ठाकारक : आचार्य श्रीमद् नित्यानन्दसूरीजी
प्रतिमा प्रतिष्ठित कराने
वाले का नाम : श्री धनराज जी तिलोकचन्द जी
कपूरचन्द जी ढढ्ढा, बीकानेर

### श्री आत्म वल्लभ समुद्र जैन भोजनशाला
कोचरों का चौक, बीकानेर

प्रतिष्ठा : विक्रम सम्वत् 2055, फाल्गुन सुद 6
दिनांक 21-2-1999
प्रतिष्ठाकारक : आचार्य श्रीमद् नित्यानन्दसूरीजी
प्रतिमा प्रतिष्ठा कराने
वाले का नाम : श्री धनराजजी तोलारामजी भंसाली
नाहटों का मोहल्ला, बीकानेर
नोट : भोजनशाला बर्तमान में चालू है।

### श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर, श्री गुरुमंदिर
राम निवास, घूम चक्कर, गंगाशहर

प्रतिष्ठा :विक्रम सम्वत् 2057, मिगसर सुद 10
दिनांक :6-12-2000
प्रतिष्ठाकारक :आचार्य श्री इन्द्रदनसूरीजी
प्रतिमा प्रतिष्ठित कराने
वाले का नाम :श्रीमती मगन देवी ध.प. श्री हनुमानदास सिपानी एवं शान्ति देवी ध.प. श्री पन्नालाल जी सिपानी, सुपुत्री-सुपौत्री सेठ श्री फौजराज की बांठिया


पृष्ठ प्रदत्त विमल वैद - स्व. श्री गुलाबचन्द वैद, बीकानेर

# श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर

सिल्वर पार्क, मीरा रोड, थाणा - 401 107 (महाराष्ट्र)
फोन : 99678-42522

गुरुदेव भगवान विजय शांति सूरीश्वर जी की प्रतिष्ठा माघ सुदी 10 वि. सं. 2058 दिनांक 22 फरवरी, 2002 को आचार्य देव श्री चन्द्रभान सागर जी महाराज ने कराई। प्रतिष्ठा कराने वाले गुरु भक्त संघवी सांकलचन्द जी चुन्नीलाल जी निवासी भायखला वाले हैं।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान

गुरु श्री विजयशांति सूरीश्वर जी

पृष्ठ प्रदत्त | स्व. श्रीमती छाया बेन महेश कुमार सहगल, मुंबई

# श्री शान्ति गुरुदेव मंदिर, भक्ति हॉल

अणुव्रत चौक, 10 नीता बिल्डिंग, मरीन ड्राइव, मुंबई - 400 020
फोन : 022 - 22810318

श्री शांति देव सेवा समिति की स्थापना 1955 में मरीन ड्राईव पर जगह खरीद कर की गई। श्री शांति देव सेवा समिति मुंबई की संस्था ने एक हॉल खरीदी करने के बाद, भक्ति हॉल में एक बड़ी साईज की गुरुदेव भगवान की फोटो रखी गई और प्रत्येक गुरुवार को भक्ति और आरती की जाती थी। मूर्ति स्थापना मालवाड़ा वाले भाग्यशाली गुरुभक्त श्री उत्तमचंद जी, (बाबुलाल उत्तमचंदजी लाधाणी) की ओर से भक्ति हॉल में दिनांक 5-2-1976 बंसत पंचमी को धूमधाम से की गई। मूर्ति प्रतिष्ठा यती श्री जिनचंद्र जी ने विधिपूर्वक सहित कराई।

पू. गुरुदेव भगवान की मूर्ति स्थापित होने के बाद भी श्री शांति देव सेवा समिति मुंबई द्वारा संचालन आज तक भी यह संस्था ही कर रही है। दिन पर दिन पूं. गुरुदेव भगवान की महिमा बढ़ने लगी और भक्तों की भीड़ बढ़ने लगी। जो भक्त जन मांडोली कोई कारणवश नहीं जा सकते वे इस भक्ति हॉल में आकर पूं. गुरुदेव भगवान के दर्शन करके पावन होते हैं और मांडोली के दर्शन का अहसास करते हैं और कहते हैं की यह उनके लिये मीनी मांडोली है। इस भक्ति हॉल में पू. गुरुदेव भगवान के दर्शन करने से मनोकामना पूर्ण होती है। यहां भक्ति हॉल में पूं. गुरुदेव भगवान के तीन प्रसंग, (1) पू. गुरु देव भगवान का जन्म दिवस-दीक्षा दिवस, वसंत पंचमी, (2) गुरु पूर्णिमा - आषाढ़ सुदी पूर्णिमा और (3) भादवा वद - 10 निर्वाण दिवस (आसोज वदी 10 मारवाड़ी तिथि) बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। अष्ट प्रकारी पूजा और भक्ति होती है। इस समय संगीतकार पधारते हैं और पूजा करवाते हैं। भक्तजनों से भक्ति हॉल पूरा भर जाता है। प्रत्येक गुरुवार को भक्ति होती है। भारी संख्या में भक्तगण पधारते हैं।

पृष्ठ प्रदत्त शान्तिलाल शाह, मुंबई